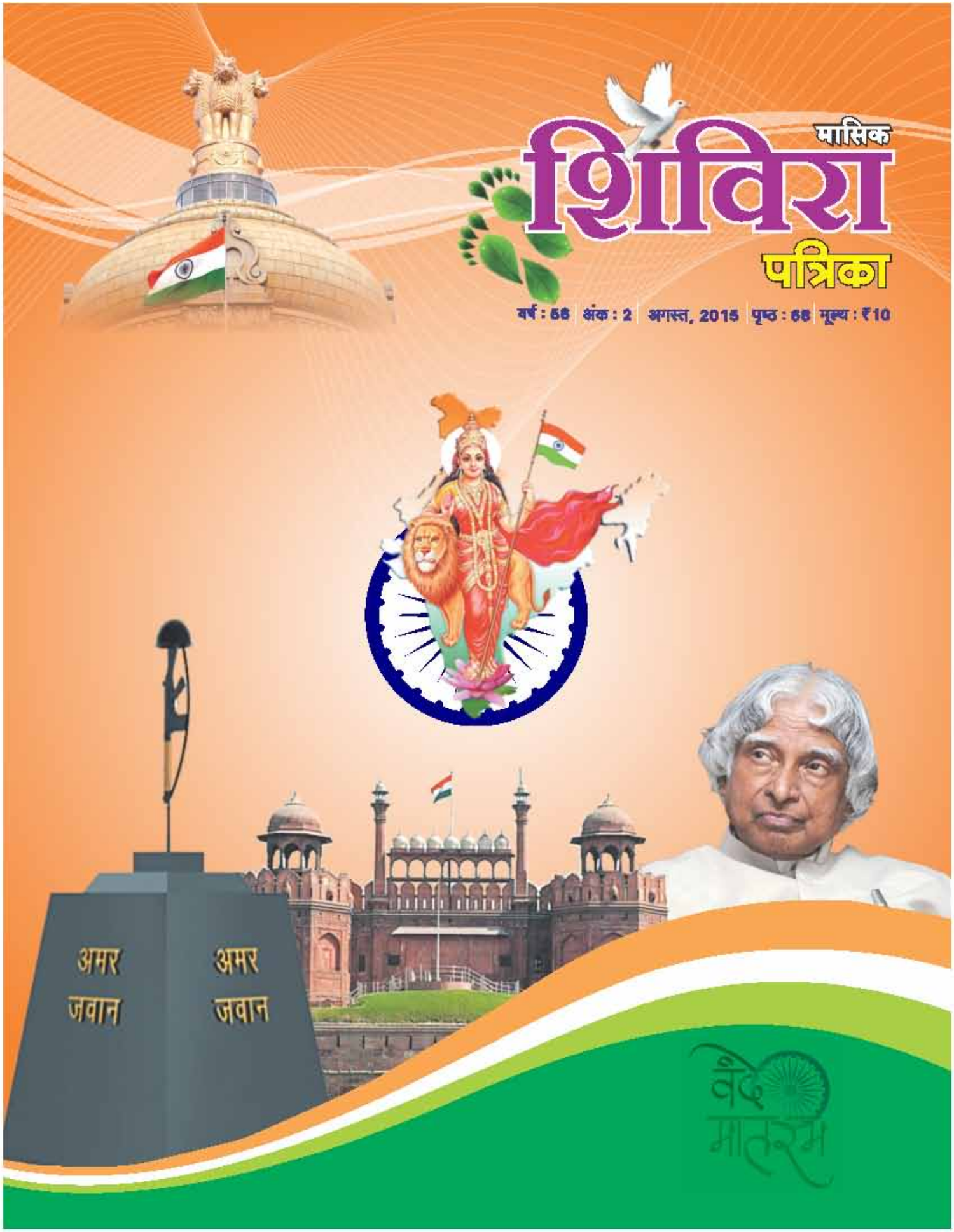
मासिक
शिविरा
पत्रिका
वर्ष : 56 | अंक : 2 | अगस्त, 2015 | पृष्ठ : 68 | मूल्य : ₹10
अमर जवान
अमर जवान
वंदे मातरम

राज्यस्तरीय
21वाँ भामाशाह सम्मान समारोह

स्थान : बिड़ला सभागार, जयपुर

दिनांक : 28 जून, 2015

(बाएं) माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित करते हुए महामहिम राज्यपाल श्री कल्याण सिंह एवं माननीय शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी। (दाएं) गरिमामय मंच पर भामाशाहों के सम्मान में प्रकाशित प्रशस्ति पुस्तिका का लोकार्पण करते हुए माननीय अतिथिगण।

भामाशाह सम्मान समारोह को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल श्री कल्याण सिंह; माननीय शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी; माननीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री श्री सुरेन्द्र गोयल; शासन सचिव, माध्यमिक शिक्षा विभाग श्री नरेशपाल गंगवार; सचिव, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग श्री कुंजीलाल मीना; निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा श्री बी.एल. मीना।

(बाएं) श्रीमती मणी देवी मोदी फाउण्डेशन ट्रस्ट कोलकाता द्वारा 135 लाख रुपये का सहयोग देने के फलस्वरूप गरिमामय मंच पर माननीय अतिथिगण द्वारा ट्रस्टी श्री किशन कुमार मोदी का सम्मान किया गया। (दाएं) समारोह में उपस्थित सम्मानित भामाशाह एवं अतिथिगण।

फोटो : मोहन गुप्ता 'मित्तल' 9414248628

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 56 | अंक : 2 | श्रावण–भाद्रपद २०७२ | अगस्त, 2015

प्रधान सम्पादक
सुवालाल

वरिष्ठ सम्पादक
प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

सम्पादक
मोमाराम मीनगर

सह सम्पादक
मुकेश व्यास

प्रकाशन सहायक
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201881
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

अपनों से अपनी बात

- जय हिन्द, जय–जय हिन्द 4

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- राष्ट्र के सुनागरिक बनें 5

आलेख

- अविद्या ही परतन्त्रता की जननी है 7
  सतीश चन्द्र श्रीमाली
- भारत पर्व और शिक्षक 8
  रमेश चन्द्र गुप्ता
- भारत का भविष्य 10
  महर्षि अरविन्द
- अभिनय कल था, आज है... 14
- श्रद्धांजलि : शिक्षक राष्ट्रपति 15
  मुकेश व्यास
- राजकीय विद्यालयों का कायाकल्प 19
  अमित शर्मा
- अनुभव ज्ञान के खिलते फूल 21
  रुपाराम महरिया
- लक्ष्य बनाएं बड़ा 22
  डॉ. कुंजलता सारस्वत
- मानवीय करुणा की दिव्य चमक 47
  डॉ. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
- दर्शक दीर्घा में मचलती पास आने की स्पर्धा 49
  सुभाष चन्द्र कस्वां
- मा. एवं उ.मा. कक्षाओं में बोर्ड द्वारा निर्धारित शिक्षण कालांश 50
  संकलन : राणूसिंह
- योग–आंतरिक शक्ति का प्रकाश–पुंज... 51
  बजरंग प्रसाद मजेजी
- विद्यालय में वर्षा जल संरक्षण 53
  सुभाष माचरा
- देववाणी से मानववाणी 56
  जगदीश प्रसाद त्रिवेदी

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

- विश्वविख्यात स्वर्ण नगरी जैसलमेर 55
  विनय कुमार बलाणी

स्तम्भ

- आदेश–परिपत्र 23–45
- शिविरा पंचांग (अगस्त 2015) 46
- विद्यालय प्रसारण 46
- शाला प्रांगण से 59–60
- चतुर्दिक समाचार 65
- हमारे भामाशाह 66

इस माह का गीत

- वह जीवन भी क्या... 20

स्पाट

- भामाशाहों और प्रेरकों का सम्मान 16
  महावीर प्रसाद गर्ग

लेखा स्तम्भ

- उपार्जित अवकाश 57
  कृपाशंकर व्यास

पुस्तक समीक्षा 61–64

- सुलगते पिण्ड : हरीश भादानी
  समीक्षक–सरल विशारद
- कालजयी : कैलास दान लालस
- आस्था री मन्दाकिनी :
  अनुवादक–डॉ. गजादान चारण
  समीक्षक–पृथ्वी राज रत्नू
- ख्वाइशात–ए–सूफी : काजी अनीसुद्दीन सिद्दीकी एवं पीर अब्दुर्रहमान चिश्ती अब्बासी
  समीक्षक–डॉ. अबीबुल्लाह शीरानी
- चमानण पख : मदन गोपाल लढ़ा
  समीक्षक–डॉ. मूलचन्द बोहरा

आवरण :
अभिलाषा कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा
एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

"शिक्षकों का उत्तम चरित्र, संस्कार एवं व्यवहार वस्तुतः बच्चों में उतर कर आता है। बच्चे अनुकरण करते हैं। वे जैसा देखते हैं, वैसा ही करते हैं। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। इस प्रकार वर्तमान बच्चों के चरित्र के अनुरूप ही भविष्य का राष्ट्र बनता है।"

अपनों से अपनी बात :

जय हिन्द, जय-जय हिन्द

इस माह, 15 अगस्त 2015 के दिन हम देश का 69वां स्वतंत्रता दिवस मनाएंगे। इस पावन अवसर पर शिक्षक भाई-बहिनों का अभिनन्दन करते हुए मुझे प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। स्वतंत्रता दिवस हमें अपने उत्तरदायित्वों का स्मरण करवाते हुए राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के संकल्प को दोहराने तथा तदनुसार आचरण करने का आह्वान करता है। सैकड़ों वर्षों की गुलामी से मुक्ति दिलाकर आजादी का उपहार दिलाने के पीछे अनेक स्वतंत्रता सेनानियों का त्याग एवं बलिदान छिपा है। उन देशभक्त शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को हमारा शत-शत प्रणाम।

ग्रीष्मावकाश के पश्चात विद्यालय खुले एक माह का समय व्यतीत हो चुका है। विद्यालयों में बालक-बालिकाओं का प्रवेश कार्य पूर्ण होने के साथ ही विधिवत अध्ययन-अध्यापन कार्य प्रारम्भ हो गया है। शिक्षकों की शिक्षण कार्य में गुणवत्ता विद्यार्थियों के अध्ययन व अधिगम में गुणवत्ता का आधार होती है। आज का युग ज्ञान-विज्ञान का बड़ा चमत्कारी युग है। अतः मेरा शिक्षकों से अनुरोध है कि वे स्वाध्यायी बनकर अपने विषयगत कौशल को समृद्ध करते हुए नई-नई शिक्षण विधियों से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें। मेरा मानना है कि जितना प्रभावी उनका शिक्षण होगा उतना ही फलदायी विद्यार्थियों का अधिगम होगा। स्वयं अपडेट रहकर बालक-बालिकाओं का मार्गदर्शन करने वाले शिक्षक ही विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों का विश्वास जीतते हुए समाज में स्नेह, संरक्षण एवं सम्मान प्राप्त कर सकते हैं।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पुस्तकीय ज्ञान के साथ कला,संस्कृति,समाज सेवा एवं खेलकूद गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति में राष्ट्र भक्ति के भाव बाल्यकाल से ही भरे जाने चाहिए। ये उत्तम संस्कार अध्ययन के समानांतर शिक्षकों के वाणी व्यवहार से शिक्षण संस्थाओं में बालक ग्रहण करते हैं। इसके लिए विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों, उत्सव-पर्वों, प्रार्थना सभा, बालसभा समाजोपयोगी उत्पादन कार्य एवं समाज सेवा शिविर, एन.सी.सी., एन.एस.एस., स्काउटिंग आदि गतिविधियों का आयोजन किया जाता है।

आने वाले तीन माह खेलकूद के माह हैं जब विद्यालय स्तर से लेकर जिला एवं राज्यस्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन होंगे। राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं के पश्चात राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का देश के विभिन्न प्रान्तों में आयोजन होगा। मैं चाहूँगा कि शिक्षा अधिकारी एवं शिक्षक मनोयोगपूर्वक इन गतिविधियों के प्रभावी आयोजन पर ध्यान देते हुए बालक-बालिकाओं को उनमें भागीदार बनाएं।

शिक्षकों का उत्तम चरित्र, संस्कार एवं व्यवहार वस्तुतः बच्चों में उतर कर आता है। बच्चे अनुकरण करते हैं। वे जैसा देखते हैं, वैसा ही करते हैं। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। इस प्रकार वर्तमान बच्चों के चरित्र के अनुरूप ही भविष्य का राष्ट्र बनता है। पाठ्यक्रम में सम्मिलित बिन्दु भले ही पाठ्यपुस्तकों में पढ़ने को मिल जाएं लेकिन नैतिकता एवं जीवन मूल्यों की पाठ्यपुस्तक तो स्वयं शिक्षक को बनना होता है। ऐसे में शिक्षक के महत्व एवं ऊँचे स्थान को स्वीकार करने में किसी को एतराज हो नहीं सकता। शिक्षकों को अपनी महत्ता स्वयं समझकर महानता के पथ पर अग्रसर होना चाहिए। हाल ही में राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा घोषित आर.ए.एस. परीक्षा परिणाम में राजकीय विद्यालयों की पृष्ठभूमि के सफल अभ्यर्थियों की संख्या देखकर प्रसन्नता होती है। हमें इस परम्परा को आगे बढ़ाना है।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भारत माता को नमन करते हुए मुझे स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि याद आ रहे हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत होकर हरिद्वार में भारत माता का भव्य मंदिर बनाया। भारत माता के इस बहुमंजिले मंदिर-भवन के तोरणद्वार पर अंकित कविवर रामधारीसिंह दिनकर की ये पंक्तियां पढ़ने वालों के हृदय में उत्साह एवं राष्ट्रभक्ति के भाव भरने वाली हैं-

तुमने दिया देश को जीवन देश तुम्हें क्या देगा,
अपना ओज कायम रखने को नाम तुम्हारा लेगा।

मुझे विश्वास है कि हमारे विद्यालय एवं शिक्षक निश्चय ही राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण उत्तम नागरिकों के निर्माण में अहम् भूमिका निभा सकेंगे। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हमें यही संकल्प लेना चाहिए।

(प्रो. वासुदेव देवनानी)

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सुखालाल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

राष्ट्र के सुनागरिक बनें

राष्ट्र अपना 69वां स्वतंत्रता दिवस पूर्ण उत्साह और उमंग के साथ मना रहा है। स्वतंत्रता दिवस की आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

स्वतंत्रता के सुख को सुशिक्षित नागरिक राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देकर समझ सकता है। हमारा सौभाग्य है कि हमें राष्ट्र निर्माण में शिक्षा जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य से जुड़ने का अवसर मिला है। यह अवसर हमें अपने कर्तव्यों के श्रेष्ठतम निर्वहन के साथ प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाने में गौरवान्वित होने का सौभाग्य प्रदान कर रहा है।

राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है कि राज्य का प्रत्येक विद्यार्थी अच्छे शैक्षिक वातावरण के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे। प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर आदर्श विद्यालयों का प्रभावी संचालन इस दिशा में अब तक चले अभियानों में सबसे बड़ा अभियान है। प्रवेशोत्सव से राजकीय विद्यालयों में आशातीत नामांकन वृद्धि और श्रेष्ठ शैक्षिक परिदृश्य इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी को दिलाने में संस्था प्रधानों, शिक्षकों के साथ-साथ जिला कलक्टर्स, जनप्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, दानदाताओं और समाज के सभी वर्गों का उल्लेखनीय सहयोग मिला है। लागू स्टार्किंग पैटर्न के अनुसार दूरदराज के विद्यालयों में रिक्त पदों को भरने का प्रयास फील्ड-स्तर पर परिलक्षित होने के साथ-साथ आमजन का सरकारी विद्यालयों से जुड़ाव हुआ है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि राज्य की प्रत्येक ग्राम पंचायत में आदर्श विद्यालय संचालन के मिशन से शिक्षा के क्षेत्र में समाज का प्रत्येक वर्ग लाभान्वित होगा। ये राजकीय आदर्श विद्यालय अन्य विद्यालयों के लिए मार्गदर्शी तथा सन्दर्भ केन्द्र के रूप में कार्य करेंगे।

छात्र हित में निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण सहित छात्रवृत्तियों और अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र विद्यार्थी को त्वरित गति से मिले, इस हेतु सभी की सक्रियता और जिम्मेदारी महत्त्वपूर्ण है। इसी माह रक्षाबन्धन, संस्कृत दिवस और राष्ट्रीय खेल दिवस जैसे महत्त्वपूर्ण आयोजनों से समाज और विद्यार्थियों में उच्च मानवीय संवेदनाओं का संचार होगा। सभी अपने कर्तव्यों को श्रेष्ठतम रूप से संपादित कर राष्ट्र के सुनागरिक बनें।

शुभकामनाओं के साथ।

(सुखालाल)

> "राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है कि राज्य का प्रत्येक विद्यार्थी अच्छे शैक्षिक वातावरण के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करे। प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर आदर्श विद्यालयों का प्रभावी संचालन इस दिशा में अब तक चले अभियानों में सबसे बड़ा अभियान है।"

▼ **विचारार्थ**

इस संसार का सबसे बड़ा धर्म है अपने प्रति सच्चा होना। अपने स्वभाव के अनुरूप जीवन जीना। अपने में दृढ़ विश्वास करना। इतना भर कर लिया तो तुम सच्चे ईश्वर विश्वासी कहलाओगे।

–स्वामी विवेकानन्द

पाठकों की बात

- 'शिविरा' पत्रिका शिक्षा जगत की एक ज्योत के समान है, विभाग के दिशा-निर्देश छात्र-जन कल्याणकारी योजनाओं का खजाना, शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक, नवीन नवाचार की कुंजी साथ ही समय-समय पर राज्य सरकार द्वारा जारी शिक्षा विभाग के आदेशों का दर्पण है। इसका महत्व जिनको शब्दों के रूप में बखान करना कम से कम मेरे स्वयं की सोच के बाहर है। 'शिविरा' में शिक्षा के अधिकार का विशेषांक, सीसीई पैटर्न का विस्तार से बखान साथ ही बालकों को मिलने वाले समस्त सरकारी परिलाभों का आलेख प्रकाशन करना समाज व शिक्षा जगत के लिए आवश्यकता की पूर्ति करना अच्छा योगदान है। मैं गत बीस वर्षों से इसका नियमित पाठक हूँ। शिविरा की रचनात्मक समृद्धि की कामना करता हूँ।

–लालनाथ रावत, गढ़ी (बाँसवाड़ा)

- शिविरा माह जुलाई, 2015 का अंक प्राप्त हुआ। मुखावरण पृष्ठ पर माँ शारदे एवं नन्हे-मुन्ने बालकों की तस्वीर देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। दिशाकल्प में निदेशक महोदय के विचार सारगर्भित लगे। व्यंग्य 'मेरे प्रभु का पेट खराब है' काफी सराहनीय लगा। जनसंख्या वृद्धि पर लिखा लेख भी बहुत अच्छा लगा। शिविरा पत्रिका शिक्षा जगत की सिरमौर बनी रहे, इसी आशा और विश्वास के साथ नये अंक का इंतजार...

–रूपलाल मीणा, मोटीखेड़ी (प्रतापगढ़)

- 'शिविरा' जुलाई 2015 का अंक हाथ में आते ही सुखद अनुभूति हुई। यह विशेषांक 'गागर में सागर' के समान है। इसमें माननीय शिक्षामंत्री और निदेशक महोदय के प्रेरणाप्रद संदेश हैं। शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए कर्त्तव्यपथ पर आरूढ़ रहने के लिए नई शक्ति संरचना का मार्गदर्शन है। छात्रवृत्ति और अन्य प्रोत्साहन योजनाओं से सम्बन्धित आदेश परिपत्रों का यह शानदार संकलन सही मायने में छात्रवृत्ति विशेषांक है। जुलाई 2015 विशेषांक का बड़ा आकर्षण शिविरा पंचांग 2015-16 है। राजस्थान के रेगिस्तानी स्वरूप को आकर्षक और कलात्मक रूप से मुद्रित कर प्रस्तुत किया गया है। –भागीरथ राम, हँसेरा (बीकानेर)

- जुलाई 2015 का अंक बहुत अच्छा लगा। मुख पृष्ठ हमारे विद्यालयों के छात्र-छात्राओं और उत्साही नवप्रवेशी विद्यार्थियों को समर्पित है। जहां एक ओर माननीय शिक्षा मंत्री ने 'अपनों से अपनी बात' में छात्रों अभिभावकों व शिक्षकों से संवाद कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षण-अधिगम के प्रति जागरूक किया है। वहीं 'दिशाकल्प' में निदेशक महोदय ने राजकीय विद्यालयों में समस्त आवश्यक भौतिक संसाधन जुटाकर आदर्श राजकीय विद्यालयों के रूप में विकसित करने की राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया है। पत्रिका का सम्पूर्ण कलेवर आकर्षक है। छात्रवृत्ति विशेषांक के रूप में यह अंक संग्रहणीय अंक है। विषय आधारित महत्वपूर्ण और प्रेरक आलेख जिनमें बाल गंगाधर के जीवन पर केन्द्रित हरप्रीत सिंह कंग का आलेख, प्रेरक गीत (कुन्दन जीनगर) बहुत प्रेरणादायक लगे। विभाग का वार्षिक शिविरा पंचांग 2015-16 आकर्षक और उपयोगी है। अंतिमावरण हमेशा की तरह 'हमारी सांस्कृतिक धरोहर' से आकर्षक कलेवर लिए हुए था। बूँदी की 'चौरासी खम्भों की छतरी' का नयनाभिराम चित्र इस स्थल को देखने की इच्छा जगाने जैसा था। अंक उपयोगी और आकर्षक होने के कारण विभाग तथा सम्पादक मण्डल को बहुत बधाई। –विनीता, बीकानेर

- जुलाई, 2015 की शिविरा पत्रिका का अंक प्रथम दृष्टया ही अत्यन्त आकर्षक व मनमोहक है। विविध रूपा ज्ञान राशि में श्री विद्यानिधि त्रिवेदी का 'स्वाध्याय का अध्याय' तथा डॉ. एस.एस. कौशिक का 'योग दर्शन का सम्प्रत्यात्मक परिचय' विशेष विषयवस्तु को लिए हुए है। श्री दुलीचन्द स्वामी ने व्यंग्य 'प्रभु का पेट खराब है' में मानव व्यवहार में पाखण्ड को रेखांकित करते हुए करारी चोट की है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों की जानकारी एवं प्रवेशोत्सव को समर्पित आवरण पृष्ठ के साथ ही ऐतिहासिक धरोहर चौरासी खम्भों की छतरी बूंदी भी चित्ताकर्षण करती है।

–सुमित्रा राठौड़, बाड़मेर

स्वाधीनता दिवस विशेष

अविद्या ही परतन्त्रता की जननी है

❒ सतीश चन्द्र श्रीमाली

इस वर्ष पन्द्रह अगस्त को हम राष्ट्र के स्वतन्त्रता दिवस का अड़सठवाँ वर्ष पूर्ण कर उन्हत्तरवें वर्ष में प्रवेश का आयोजन धूमधाम के साथ हमारे राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगे) को सम्मान देते हुए तथा उन वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मना रहे हैं। जिनके त्याग, बलिदान और कुशल नेतृत्व के कारण ही गुलामी की बेड़ियों से जकड़ी हमारी भारत माता को स्वतन्त्रता मिली।

आज एक चिन्तन का विषय उभर कर आ रहा है कि गुलामी के कारणों में वह प्रमुख कारण क्या था, जिसने हमें हजारों वर्षों तक गुलाम बनाये रखा तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु शताब्दियों से चलाये जा रहे आन्दोलन में नेतृत्व ने तत्कालीन शासक वर्ग के विरुद्ध केवल राष्ट्र की मुक्ति हेतु ही संघर्ष नहीं किया अपितु उस पक्ष को भी ध्यान में रखा जिसके कारण हम गुलाम बने। यह पक्ष था तत्कालीन समाज में फैली 'अविद्या'! अतः आन्दोलन से जुड़े हमारे नेतृत्व ने इसे जड़ से समाप्त करने का प्रयास भी किया।

इतिहास साक्षी है कि हमारे राष्ट्र पर आधिपत्य करने वाली विदेशी ताकतों ने एक ओर जहाँ प्रजा में अपने अत्याचार से भय व्याप्त कर रखा था वहीं दूसरी ओर उन्होंने हमारी शिक्षा-संस्कृति पर भी उतना ही क्रूर प्रहार किया। क्योंकि वे जानते थे कि कोई भी व्यक्ति या राष्ट्र तभी गुलाम रह सकता है जब उसे विद्या और संस्कारों से विहीन कर दिया जाए। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विश्व गुरु का पद प्राप्त किए राष्ट्र को गुलाम बनाने हेतु उन्होंने, हमारे ज्ञान और संस्कृति के केन्द्रों को क्षति पहुँचायी, इनमें सैकड़ों ग्रन्थ भी सम्मिलित थे।

महान् शिक्षा के केन्द्र रहे तक्षशिला-नालन्दा विश्वविद्यालयों में ज्ञान-विज्ञान की सरिता का प्रवाह रुक गया। इसका दुष्परिणाम धीरे-धीरे सम्पूर्ण राष्ट्र में फैलने लगा, अज्ञान का वितान होने लगा, संस्कार-संस्कृति में विकृति आने लगी, आडम्बर, जादू-टोना,

परस्पर द्वेष, नारी उत्पीडन, ऊँच-नीच का भेद, छूआछूत तथा अनेक कुप्रथाओं से राष्ट्र ग्रस्त हो गया। इन कुप्रथाओं ने राष्ट्र को कमजोर करने में दीमक की भांति कार्य किया। परन्तु यह हमारी वैदिक संस्कृति का ही प्रभाव था कि समय-समय पर संस्कारों को बनाये रखने में तथा समाज में ज्ञान का प्रसार करने हेतु अनेक महापुरुषों का योगदान रहा, जैसा कि गुरुनानक देव जी, कबीर, मीरां बाई, रैदास तथा समर्थ गुरु रामदास जी आदि ने जगह-जगह भ्रमण कर देशवासियों को आपसी भाईचारे का सन्देश दिया तथा विद्या और संस्कारों के महत्व का उपदेश देकर उन्हें जागृत किया।

ब्रिटिश शासकों ने अपने स्वार्थ साधने हेतु शिक्षा के क्षेत्र में हमारे देश में जो कार्य किए वे भी पूर्ण रूप से हमारी संस्कृति-संस्कारों के पोषक नहीं थे। अतः इसके विरुद्ध भी समय-समय पर आन्दोलन हुआ तथा समाज में नैतिक शिक्षा देने के साथ-साथ कुप्रथाओं को मिटाने हेतु भी प्रयास हमारे श्रेष्ठ नेतृत्व द्वारा किया गया जिनमें राजा राममोहन राय, महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, रविन्द्रनाथ टैगोर, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, पंजाब केशरी लाला लाजपत राय और महामना पं. मदनमोहन मालवीय जैसे अनेक राष्ट्रवादी महापुरुषों का योगदान रहा जो सदैव हमारे लिए अविस्मरणीय है। इसी क्रम में हम, हमारे राष्ट्र के तत्कालीन उन कवियों एवं साहित्यकारों के ऋणी हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी से तत्समय लिखे गीतों एवं साहित्य से विदेशी शासकों को यह संकेत दिया कि भारत में शिक्षा की क्रान्ति का शुभारम्भ हो चुका है। बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का 'वन्दे मातरम्' तो इतना प्रभावी रहा कि ब्रिटिश शासकों को यह 'नारा' भय देने वाला बन गया था। राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत तथा स्वतन्त्रता की प्रेरणा देने वाले साहित्य, कविताओं और नारों पर प्रतिबन्ध लगाया गया। तथापि समाज में सद्साहित्य का प्रचार-प्रसार होने लगा। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय तथा डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर, जैसे शिक्षा के केन्द्रों की स्थापना भी राष्ट्रीय शिक्षा को बढ़ावा देने में अग्रणी रही। इनमें दी जा रही शिक्षा विद्यार्थियों में ज्ञान-विज्ञान के संवर्धन के साथ-साथ नैतिकता तथा राष्ट्रीयता से जोड़ने वाली भी थी।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था- 'मनुष्य का चरित्र ही उसकी सबसे मूल्यवान वस्तु है। आदर्श चरित्र ही शिक्षा का केन्द्र बिन्दु है और एक मात्र नैतिक शिक्षा से ही सबको शिक्षित बनाया जा सकता है।' महात्मा गांधी पढ़े-लिखे और शिक्षित में अन्तर मानते थे। चूंकि शिक्षा का अर्थ साक्षरता मात्र न होकर सद्गुणों का वर्द्धन है, शिक्षा उत्तम गुणों का आश्रय है।

शिक्षा का उद्देश्य तो मानव का आसुरी प्रवृत्तियों को समाप्त कर देवी शक्तियों को जागृत करना है। हमारा अपने और दूसरों के प्रति क्या कर्तव्य है, हमारे आचार-विचार अपने देश की संस्कृति-सभ्यता के अनुकूल है या नहीं इन सबका सम्बन्ध हमारी शिक्षा से ही है। यह तभी सम्भव है जब नैतिकता, शिक्षा और चरित्र का अविच्छिन्न सम्बन्ध हो। शिक्षा या विद्या ही तो

वह धर्म है जो हमें पशुता से पृथक करता है। कहा गया-'आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्य मेतत्पशुभिर्नराणाम्। धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभि समानाः।'

इसी क्रम में कहा गया है-

येषा न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्य लोके भुविभार भूता
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।

अतः समाज से पशुता की प्रवृति को मिटाने के लिए नैतिक शिक्षा का होना आवश्यक है, तभी 'सा विद्या या विमुक्तये' की सार्थकता समाज में परिलक्षित होती दृष्टिगोचर होगी। स्वच्छन्द या स्वेच्छाचार मय जीवन से चरित्र का हनन होता है। सुनियोजित जीवनचर्या ही चरित्र है। अतः हमें ऋषियों की इस प्रार्थना को आत्मसात् करनी चाहिए, जिसमें वे कहते है- 'परिमाग्रे दुश्चरिताद् बाधस्या मा सुचरिते भजः' अर्थात् हे प्रकाश स्वरूप अग्निदेव! मुझे दुश्चरित से बचाकर सुचरित में दृढ़तया स्थापित कीजिए।

अविद्या के कारण ही आज हमारे राष्ट्र में शिक्षा के क्षेत्र में घटित घटनाओं यथा- परीक्षाओं (शैक्षणिक व प्रतियोगी) में बढ़ती नकल की प्रवृति, फर्जी टी.सी. वा फर्जी डिग्रियों की भरमार, प्रायोगिक परीक्षाओं वा शोधार्थियों से अनुचित धन वसूलने की प्रथा जैसे अनेक अनैतिक कार्यों से अविद्या का प्रसार ही हो रहा है, जो हमारे चारित्रिक शक्ति को क्षीण करती है और हमें परतन्त्रता की ओर ले जाने वाली है तथा मानव समाज में पशुता को बढ़ाने वाली है।

समाज को इस बुराई से मुक्त करने का आन्दोलन चलाने की नितान्त आवश्यकता है। अतः शिक्षा में नैतिकता का समावेश आवश्यक है, चूंकि आचरण ही वह धर्म है जिसे जीवन में धारण करने पर वह धारणकर्ता का धारण (रक्षण) करता है। इसलिए 'आचारः परमोधर्मः' कहा गया है। इसी से अविद्या को समाप्त किया जा सकता है। अविद्या की समाप्ति होने पर हमारा अन्तःकरण 'शुद्ध अन्तःकरण' हो जाता है तभी हमारे सभी कार्य नैतिकता के आधार पर होंगे। समाज में स्वतन्त्रता की पहिचान बढ़ेगी तथा परतन्त्रता समाप्त होगी।

-जस्सुसर गेट रोड,
धर्मकांटे के पास, बीकानेर
मो. 9414144456

स्वतंत्रता दिवस विशेष

भारत पर्व और शिक्षक

❒ उमेश चन्द्र गुप्ता

आओ भारत पर्व मनाएं।
राष्ट्र प्रेम का अलख जगाएं।।

पर्व भारतीय संस्कृति में गतिमय जीवन के पर्याय हैं। विश्व में भारत ही ऐसा देश है जहाँ पंचांग का प्रत्येक दिन देश के किसी न किसी भाग में त्योंहार, उत्सव, मेले-जलसे, जश्न अथवा पर्व के नाम से मनाया जाता है। ये पर्व हमारी वो अमूल्य धरोहर हैं जो हमारे जीवन में खुशहाली प्रदान करने और समाज में सामूहिक, भावनात्मक अस्तित्व बनाये रखने के लिए एक उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। पर्व हमें मानवता और राष्ट्र के प्रति दायित्व बोध कराते हैं, जीवन की नीरसता दूर करते हैं, नई प्रेरणा देते हैं और संस्कारों का सृजन करते हैं। इन खास दिनों की अनुभूति जीवन में शक्तिदायक भी है। इन जीवन मूल्यों की पूर्ति के लिए हम लोग सभी पर्वों पर अपनी-अपनी आस्था अनुसार पूजा-अर्चना करते हैं, सामाजिक समरसता विकास के लिए सहभोज, शुभकामनाओं बधाई-पत्रों और उपहारों का आदान-प्रदान करते हैं, मन को प्रफुल्लित करने के लिए नाच-गाना, आतिशबाजी, रंगोली करते हैं और यह सब स्वतःस्फूर्त करते हैं। सभी पर्वों का हमें बेसब्री से इन्तजार रहता है। भारत की इस उत्सवधर्मिता को नमन करते हुए किसी कवि ने कहा है-

महक रहा धरती का कण-कण
उमड़ रही रसधार है,
त्योंहारों का देश हमारा
हमको इससे प्यार है।

भावनात्मक सहभागिता के आधार पर पर्वों को हम तीन श्रेणियों में बाँट सकते हैं। प्रथम 'मेरे उत्सव' अर्थात् घर-परिवार द्वारा मनाये जाने वाले छोटे उत्सव। इन पर्वों पर स्वजन-परिजन गहन भावनात्मक अनुभूति के साथ एकत्र होकर उत्सव आयोजित करते हैं। जैसे जन्मदिन, गृहप्रवेश, शादियाँ आदि। यद्यपि इन पर्वों पर समाज और विभिन्न वर्गों के आमंत्रित लोग भी हमारी खुशियों में शरीक होते हैं, हमें बधाई, आशीर्वाद और उपहार देते हैं, परन्तु भावनात्मक उत्सुकता के साथ नहीं बल्कि कोरे माननीय कर्तव्यों के निर्वहन-पूर्ति के लिए।

द्वितीय 'हमारे उत्सव' अर्थात् किसी समुदाय विशेष द्वारा मनाये जाने वाले कुछ बड़े दायरे के उत्सव जैसे क्रिसमस, लोहड़ी, ईद, दीवाली, जयन्तियाँ आदि। इन उत्सवों पर धर्म, समुदाय, क्षेत्र विशेष के लोग अपनी मान्यताओं और परम्पराओं के अन्तर्गत स्वस्तर पर या बिना किसी औपचारिक निमंत्रण के भावनात्मक अनुभूति के साथ एकत्र होकर सामूहिक आयोजन करते हैं। बाकी समुदायों के लोग बिना किसी अनुभूति के औपचारिकता निभाते हुए शरीक होते हैं और शुभकामना देते हैं।

तृतीय 'हम सब भारतीयों के उत्सव' जिनमें सभी भारतवासी और अनिवासी भारतीय अनेकता और विविधता के बावजूद राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के साथ इनको मनाते हैं, सम्भागी बनते हैं। ये है भारत पर्व अर्थात् गणतन्त्रोत्सव, स्वतंत्रता महोत्सव और गाँधी जयन्ती जो अब विश्व अहिंसा दिवस के नाम से अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बना चुका है। ये भारत पर्व हम सब भारतीयों को आत्म सम्मान का अहसास कराते हैं, राष्ट्रीय चेतना को ऊर्जावान बनाते हैं और समूचे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोते हैं। ये पर्व राष्ट्रीय भावना के संरक्षक, संवर्धक और संवाहक हैं। यही राष्ट्रीय भावना हमारी सामूहिक शक्ति की जनक है जो देश के अस्तित्व के लिए अपरिहार्य है। प्रत्येक 26 जनवरी को मनाया जाने वाला गणतन्त्रोत्सव हमें न्याय, शांति, समता, एकता, अखण्डता, कर्तव्य-अधिकार आदि जनतान्त्रिक मूल्यों का पाठ पढ़ाता है, धर्महीनता अथवा धर्म अनिष्ठा के स्थान पर धर्म निरपेक्षता को मान्यता देता है, लोकतन्त्र के चारों स्तम्भों को सीमायुक्त सामन्जस्य की सीख देता है और चुनावी शंखनाद में धन बल व बाहुबल के स्थान पर जनबल को प्रतिस्थापित करता है। प्रतिवर्ष 15 अगस्त को मनाया जाने वाला स्वतंत्रता

दिवस हमें हथियार और हौंसले से लड़ी गयी तथा आत्मविश्वास और बहादुरी से जीती गयी आजादी की लड़ाई की याद दिलाता है। शहीदों की शहादत को आहत न होने देने के लिए आग्रह करता है आतंकवाद और भ्रष्टाचार के विरुद्ध क्रान्ति का बिगुल बजाने को उद्वेलित करता है और स्वतंत्रता रूपी धरोहर को अक्षुण्ण बनाये रखने को संकल्पबद्ध करता है। 2 अक्टूबर को मनाये जाने वाला गाँधी जयंती उत्सव जीवन मूल्यों यथा सत्य, अहिंसा, त्याग, अस्पृश्यता, सफाई, स्वच्छता, मितव्ययता, कथनी-करनी में समानता आदि से संस्कारित जीवन जीने का पाठ पढ़ाता है।

यद्यपि मनुष्य द्वारा पर्वों का उल्लासपूर्ण आयोजन चिरन्तन एवं शाश्वत है, तथापि हमारी परिवेशगत दुर्बलताओं से उपजी राष्ट्रीय भावना की कमी के कारण भारत पर्वों के उल्सासपूर्ण आयोजन और भावनात्मक सहभागिता में क्रमश: कमी आ रही है। भारत पर्व लगभग मात्र सरकारी पर्व बनकर रह गये हैं। इनके आयोजन में सरकारी खर्च पर केवल औपचारिकताएं पूर्ण की जा रही हैं। ध्वजारोहण के समय राष्ट्रगान गाने के लिए भी या तो विद्यालय छात्रों का सहारा लिया जाता है या फिर 'टेप' बजाया जाता है। चूंकि भारत पर्व 'मेरे और हमारे' पर्वो की तुलना में अपेक्षाकृत नये पर्व है इसलिए नई पीढ़ी को भारत पर्वों के प्रति जागरुक करना, इन पर्वों में अन्तर्निहित भावों को समझाना, उन्हें जीवन में ढालने का आग्रह करना और इन पर्वों का भावनापूर्ण आयोजन कर छात्र-जीवन में राष्ट्रप्रेम के संस्कारों का सृजन करना शिक्षक के गुरुत्तर दायित्वों का अक्षुण्ण अंश है। इसके लिए शिक्षा पाठ्यक्रमों में प्राथमिक स्तर से स्नातक स्तर तक कुछ ऐसे अध्याय रखे हैं जिनका उद्देश्य राष्ट्रभक्त नागरिक तैयार करना है। शैक्षिक कलेण्डर में भी विविध पर्वों, जयन्तियाँ और बलिदान दिवसों के आयोजन का समावेश है किन्तु इनके उद्देश्यों को समझते हुए छात्रों को समझा कर जीवन में ढालने का शिक्षकों का आग्रह अत्यन्त कमजोर रहता है जिसमें सुधार अपेक्षित है।

आज जबकि शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र अधिकतम अंक प्राप्ति बन गया है, बाजारवाद के प्रभाव के कारण शिक्षा को व्यक्तित्व निर्माण के स्थान पर प्रतिस्पर्धा और मोटे पैकेज से जोड़ दिया गया है, शिक्षा सहित संस्कार निर्माण की अन्य उत्तरदायी संस्थाएं यथा परिवार, समाज, साधु-सन्त, सरकारी गैर सरकारी संगठन, मीडिया आदि भौतिकता की चकाचौंध और बाज़ारवाद जन्य विवशताओं के कारण कमजोर साबित हो रही है, ऐसी स्थिति में शिक्षक के लिए राष्ट्रीय भावना के विकास का दायित्व अनिवार्य ही नहीं अपरिहार्य हो गया है तभी भावी पीढ़ी भारत पर्वों का भावनात्मक अनुभूति के साथ स्वतःस्फूर्त एवं सौल्लास आयोजन कर सकेगी।

कितना अच्छा हो कि हम आज से ही इन भारत पर्वों पर भी अवसाद त्याग कर शुद्ध मन से श्रद्धापूर्वक पूर्ण विधि विधान से मातृभूमि और तिरंगे की पूजा अर्चना करें, समता, एकता, अखण्डता आदि भावयुक्त आभूषणों से माँ भारती का शृंगार करें, शहीदों का स्मरण करें, कर्णधारों को नमन करें, घर-घर राष्ट्रीय ध्वज फहराएं, मिठाई-पकवानों का रसास्वादन करें, बधाई पत्रों, उपहारों एवं शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करें, स्नेह मिलन एवं सहभोज का आयोजन करें और यह सब स्वतःस्फूर्त करें।

आइये! हम सब मिलकर जीवन की यंत्रवत व्यवस्थाओं से उबर कर एक रचनात्मक संक्रान्ति का शुभारम्भ करें और भारत पर्वों का स्वतःस्फूर्त आयोजन कर राष्ट्र प्रेम से अनुप्राणित नई पीढ़ी का निर्माण करें राष्ट्रोत्थान के लिए प्रतिबद्धता पूर्वक कार्य करने का संकल्प करें और 'मैं ही मेरा देश हूं' इस भाव को आत्मसात करें।

क्रिसमस लोहड़ी ईद दिवाली,
इनसे भी बढ़ कर हो उत्सव।
जाति धर्म के बन्धन तोड़े,
मानवता की सरिता हो नव।।
तन मन धन सब अर्पण कर दे
देशोऽहं की ध्वनि में बसकर।
अधिकारों की मांग करें हम
कर्तव्यों के पथ पर चलकर।।
ज्योति पुंज यह देश अमर हो
ले संकल्प सभी बढ़ जाए।
राष्ट्रप्रेम का अलख जगाएं
आओ भारत पर्व मनाएं।।

-126, शिवनगर-प्रथम,
मुरलीपुरा स्कीम, जयपुर
मो. 9829929277

देश-प्रेम

देश-प्रेम है क्या? प्रेम ही तो है। इस प्रेम का आलंबन क्या है? सारा देश अर्थात् मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, नाले, वन, पर्वत सहित सारी भूमि। यह प्रेम किस प्रकार का है? यह साहचर्यगत प्रेम है। जिनके बीच हम रहते हैं, जिन्हें बराबर आँखों से देखते हैं, जिनकी बातें बराबर सुनते रहते हैं, जिनका हमारा हर घड़ी का साथ रहता है, सारांश यह है कि जिनके सान्निध्य का हमें अभ्यास पड़ जाता है, उनके प्रति लोभ या राग हो सकता है। देश-प्रेम यदि वास्तव में अंतःकरण का कोई भाव है तो यही हो सकता है। यदि यह नहीं है तो वह कोरी बकवास या किसी भाव के संकेत के लिए गढ़ा हुआ शब्द है।

यदि किसी को अपने देश से सचमुच प्रेम है तो उसे अपने देश के मनुष्य,पशु,पक्षी, लता, गुल्म, पेड़, वन, पर्वत, नदी, निर्झर आदि सबसे प्रेम होगा, वह सबको चाहभरी दृष्टि से देखेगा; वह सबकी सुध करके विदेश में आँसू बहाएगा। जो यह भी नहीं जानते कि कोयल किस चिड़िया का नाम है, जो यह भी नहीं सुनते कि चातक कहाँ चिल्लाता है, जो यह भी आँख भर नहीं देखते कि आम प्रणय-सौरभपूर्ण मंजरियों से कैसे लदे हुए हैं, जो यह भी नहीं झाँकते कि किसानों के झोंपड़ों के भीतर क्या हो रहा है, वे यदि बस बने-ठने मित्रों के बीच प्रत्येक भारतवासी की औसत आमदनी का परता बताकर देश-प्रेम का दावा करें तो उनसे पूछना चाहिए कि भाइयों! बिना रूप परिचय का यह प्रेम कैसा? जिनके दुख-सुख के तुम कभी साथी नहीं हुए उन्हें तुम सुखी देखना चाहते हो, यह कैसे समझे? उनसे कोसों दूर बैठे-बैठे, पड़े-पड़े या खड़े-खड़े तुम विलायती बोली में 'अर्थशास्त्र' की दुहाई दिया करो, पर प्रेम का नाम उसके साथ न घसीटो। प्रेम हिसाब-किताब नहीं है। हिसाब-किताब करने वाले भाड़े पर भी मिल सकते हैं, पर प्रेम करने वाले नहीं।

हिसाब-किताब से देश की दशा का ज्ञान मात्र हो सकता है। हित-चिंतन और हित-साधन की प्रवृत्ति कोरे ज्ञान से भिन्न है। वह मन के वेग या भाव पर अवलंबित है, उसका संबंध लोभ या प्रेम से है, जिसके बिना अन्य पक्ष में आवश्यक त्याग का उत्साह हो नहीं सकता।

-आचार्य रामचंद्र शुक्ल

महर्षि अरविन्द जन्म दिवस

भारत का भविष्य

❑ महर्षि अरविन्द

वसुधैव कुटुम्बकम् के साथ ही वासुदेव सर्वम्, सर्व खल्विदम् ब्रह्म, सर्वाणि भूतानी वेदों का सार है। वैदिक ज्ञान में अनेकता में एकता का मूल मंत्र है। इसके कारण भारत को कामनामुक्त बनाता है। मुक्त होने के कारण भारत की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। वह संसार की अनेकता में एकता का पाठ पुनः पढ़ाए। 15 अगस्त महर्षि अरविन्द का जन्मदिन है। इसी दिन भारत का स्वतंत्रता दिवस भी है। 'भारत का भविष्य' श्री अरविन्द के साहित्य से संकलित लेख 'शिविरा' के आग्रह पर श्री चन्द्रप्रकाश खेतान, अध्यक्ष, श्री अरविन्द सोसायटी, झुंझुनूं शाखा (राज.) ने उपलब्ध करवाया है। शिविरा के सुधि पाठकों के लिए आलेख प्रस्तुत है। (साभार)

-सहित संपादक

भारत के भाग्य का सूर्य उदय होगा, सारा भारत उसकी प्रभा से जगमगा जाएगा, फिर वह ज्योति भारत से उमड़कर एशिया को जगमगा देगी और एशिया से उमड़ती हुई सारे संसार को जगमग-जगमग कर देगी। प्रत्येक घड़ी, प्रत्येक मुहूर्त अब उन्हें केवल उस दिन की उज्ज्वलता के अधिकाधिक समीप लाते जाएंगे जो भगवान ने निर्दिष्ट कर दिया था।[1]

लगभग सौ वर्षों पूर्व कलकत्ता के बीडन स्क्वायर पर 13-6-1909 को हुई स्वदेशी सभा में श्री अरविन्द द्वारा कहे गये उक्त कथन के सत्य व उसके पीछे निहित अपरिहार्यता का भान बहुत थोड़े लोगों को ही रहा होगा। आज भी जब हम ऐसे युग की दहलीज पर हैं जो कि आने वाले कुछ दशकों में उस दिव्य निर्देश की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संसिद्धि का साक्षी होगा, बहुत कम ही लोग भारत के भविष्य के बारे में श्री अरविन्द के दिग्दर्शन के गहरे अर्थ या उसकी अपरिहार्यता को समझने में सक्षम हैं। यद्यपि आज भारत तथा उससे बाहर भी लोगों की एक उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संख्या भारत के आगामी पुनरुत्थान की अपरिहार्यता को स्वीकारने लगी है। परन्तु इनकी दृष्टि अधिकांशतः आर्थिक पुनरुत्थान तक ही सीमित है। ये लोग भारत को विश्व के विकसित औद्योगिक देशों के संघ में शामिल होते हुए एवं कुछ सांस्कृतिक भिन्नताओं को छोड़कर, जो कि एक आर्थिक प्राणी के लिए क्षुद्र महत्व की वस्तु है, उनके जैसा बनते हुए देखने को उत्सुक है। यद्यपि अधिकांश ऐसे लोग वर्तमान विकृत नैतिक अवस्था और उसके परिणामस्वरूप हमारे समाज व शासन की हुई दशा के प्रति जागरूक और इससे संतप्त हैं। फिर भी उनको उस सब के पीछे निहित मूल कारणों का कोई गहरा बोध नहीं है और लगता नहीं कि वे यह समझ पा रहे हैं कि उस तरह के आधार पर कोई ठोस आर्थिक उपलब्धि प्राप्त करना असंभव है। वास्तव में ऐसा पुनरुत्थान जैसा कि हमारे वर्तमान बुद्धिजीवी, राजनीतिक एवं व्यावसायिक पेशेवर नेताओं द्वारा, उन तथाकथित मैकाले की संतानों द्वारा कल्पित किया जाता है जो पूर्ण रूप से ऐसी पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से शिक्षित हुई हैं जिससे वे केवल खून एवं रंग से ही भारतीय हैं किन्तु अपनी बाह्य प्रकृति-अपनी आन्तरिक सत्ता व प्रकृति में नहीं (जो भारत के आगामी पुनरुत्थान का सच्चा आधार है), अपनी अभिरुचियों, विचारों, नैतिक मूल्यों व मानसिकताओं में पूर्ण रूप से पाश्चात्य रंग में रंगी जा चुकी हैं-हमें हमारी वर्तमान अवस्थाओं से भी बुरी अवस्था की तरफ ले जायेगा। इस सम्बन्ध में सारा परिदृश्य ही बहुत दुःखमय है। परन्तु फिर भी उत्साहवर्धक संकेत भी विद्यमान हैं। विश्वभर में विवेकशील लोगों की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई संख्या को यह आभास होने लगा है कि वर्तमान भोगवादी भौतिक संस्कृति जो मानवता को अधिकाधिक एक नैतिक एवं पर्यावरणीय सर्वनाश की ओर धकेल रही है। उसे एक आन्तरिक परिवर्तन के बिना मनुष्य की वर्तमान क्षमता के आधार पर अब और अधिक समय तक जीवित नहीं रखा जा सकता। हम अपने आपको छोड़कर संसार में लगभग अन्य सभी को बदलने के बारे में चिन्तन करते रहते हैं जबकि हमारी समस्याओं का मूल कारण केवल हमारी दृष्टि एवं मूल्यों पर पड़े आंतरिक प्रतिबन्ध ही हैं। हमारे अपने अन्दर परिवर्तन-एक आन्तरिक परिवर्तन- मात्र उसी के विकास द्वारा लाया जा सकता है, "...जिसकी समाज ने अत्यधिक उपेक्षा की है, वह है आध्यात्मिक तत्त्व, मनुष्य की अन्तरात्मा, जो उसकी सच्ची सत्ता है। यहाँ तक कि एक स्वस्थ शरीर, एक सबल प्राण, एक सक्रिय और निर्मल मन और साथ ही उनके कार्य और उपभोग के लिए क्षेत्र का होना भी मनुष्य को एक निश्चित दूरी से अधिक नहीं ले जा सकते। बाद में वह शिथिल पड़ जाता है तथा एक वास्तविक आत्म-प्राप्ति तथा अपने कर्म और विकास के किसी संतोषजनक लक्ष्य के अभाव में निरुत्साहित हो जाता है। ये तीनों वस्तुएं भी अपने-आप में एक पूर्ण मनुष्यत्व का निर्माण नहीं कर सकती, ये तो दूरस्थ उद्देश्य के साधन-मात्र हैं व अपने-आप में एक शाश्वत लक्ष्य नहीं बनाई जा सकती हैं।

Footnote

10-12-1836 को लॉर्ड मैकाले ने अपने पिता को दावे के साथ यह लिखा कि यदि भारत में शिक्षा प्रणाली उसकी बताई रूपरेखा के अनुसार चलती रही तो बंगाल में 30 वर्षों के पश्चात् एक भी हिन्दू शेष नहीं रहेगा, सभी या तो ईसाई बन जाएंगे या फिर केवल कहने को हिन्दू रहेंगे। उन्हें वेद में या अपने धर्म में कोई श्रद्धा न रहेगी। मैकाले की शिक्षा पद्धति स्वतंत्रता के बाद भी चालू रही और तब से उत्तरोत्तर अधिक बलशाली होती जा रही है व सब जगह फैलती जा रही है।

इनके साथ एक समृद्ध और भावप्रधान जीवन, जो कि एक सुव्यवस्थित नैतिक आदर्श द्वारा संचालित हो, जोड़ भी दिया जाए तो भी किसी वस्तु का, किसी सर्वश्रेष्ठ वस्तु का अभाव अनुभव होता है। ये वस्तुएं इस सर्वश्रेष्ठ वस्तु को अपना लक्ष्य तो मानती हैं पर अपने-आप में इस तक पहुँच नहीं पाती, तब तक उसे नहीं खोज पाती जब तक ये अपने को अतिक्रांत न कर लें। तुम एक धार्मिक पद्धति तथा विश्वास और पवित्रता की एक व्यापक भावना भी इसके साथ जोड़ सकते हो, तब भी सामाजिक मुक्ति के साधन तुम्हें नहीं प्राप्त होंगे। मानव समाज ने ये सब चीजें विकसित कर ली हैं, किन्तु इनमें से किसी ने भी मोहभंग, क्लांति और अवनति से इसकी रक्षा नहीं की है।''[2]

हम दृढ़तापूर्वक विश्वास करते हैं कि अब नैतिक और पर्यावरणीय विनाश के मंडराते हुए संकट के दबाव के कारण परिस्थितियाँ इस बात के लिए अधिकाधिक परिपक्व होंगी कि मनुष्य जाति, विशेषकर भारत-अपनी सच्ची परितृप्ति के लिए विज्ञान एवं आर्थिक विकास के आधुनिक सिद्धांत के मूल्य का मूलभूत पुनर्मूल्यांकन करने को विवश हो। इस आंतरिक परिवर्तन की दिशा में मुख्य भूमिका भारत की होगी, जैसा कि श्रीमाँ ने कहा था, ''भारत आधुनिक मानव जाति की सभी कठिनाइयों की प्रतीकात्मक प्रस्तुति बन गया है। भारत ही उसके पुनरुत्थान का, एक उच्चतर और सत्यतर जीवन में पुनरुस्थान करने वाला देश होगा।''[3]

भारत ने सदैव ही आत्मा पर या मानव के भीतर आध्यात्मिक तत्व को अधिकतम महत्व दिया है परन्तु यह महत्व कभी भी एकांगी नहीं रहा अपितु सत्ता की परिपूर्णता का केवल महत्तम तत्व मात्र रहा है। ''प्राचीन भारतीय संस्कृति मन, प्राण तथा शरीर के स्वास्थ्य,विकास तथा शक्ति पर उतना ही बल देती थी, जितना कि प्राचीन यूनानी अथवा आधुनिक वैज्ञानिक विचार, यद्यपि एक महानतर भाव व एक भिन्न उद्देश्य हेतु। अतः वह सबकी कुछ जो इन चीजों की सुसंगत पूर्णता से सम्बन्धित व उसमें सहायक होता, उसे भारतीय संस्कृति खुलकर कार्य करने देती, तर्क बुद्धि के क्रियाकलापों को, विज्ञान एवं दर्शन को, सौंदर्य बोधात्मक सत्ता की संतुष्टि को और छोटी-बड़ी बहुत सी कलाओं को, शरीर के स्वास्थ्य तथा शक्ति, जाति के भौतिक व आर्थिक कल्याण को व सुविधा व प्रचुरता को- निर्धनता कभी भी भारत में राष्ट्रीय आदर्श नहीं था जैसा कि कुछ लोग हमें विश्वास कराना चाहते हैं और न ही अभाव व मलिनता ही उसकी आध्यात्मिकता के लिए आवश्यक परिवेश थी- सामान्य सामरिक, राजनैतिक व सामाजिक शक्ति व कुशलता इत्यादि सभी का इसने पोषण किया। प्राचीन भारत के लोगों का लक्ष्य महान् था पर साथ ही आधार स्थिर और विस्तृत भी था जिस पर उन्होंने इन सब पूर्व वर्णित साधनों को अत्यधिक ध्यानपूर्वक प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयत्न किया।''[4]

छः सौ वर्षों के विदेशी शासन की दासता से गुजरने के बाद भी भारत 18वीं शताब्दी के मध्य तक भौतिक रूप से भी सर्वाधिक विकसित देश रहा है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के सेम्यूल हन्टिंगटन लिखते हैं कि 1750 में भारत का उत्पादन विश्व उत्पादन का 25 प्रतिशत था जबकि यूरोप एवं अमरीका का मिलाकर भी 18 प्रतिशत से कम था। किन्तु 1900 तक ब्रिटिश शासन के 150 वर्षों के उपरांत भारत का उत्पादन घटकर 2 प्रतिशत से भी कम हो चुका था, जबकि अमरीका एवं पाश्चात्य देशों का मिलाकर विश्व उत्पादन का 84 प्रतिशत हो गया था। वे लिखते हैं, ''पश्चिम की ये औद्योगिक क्रांति अधीनस्थ राष्ट्रों के औद्योगिक विघटन की कीमत पर की गयी थी।''[5] ब्रिटिश शासन के प्रथम 125 वर्षों के दौरान 3 करोड़ भारतीय (कुल जनसंख्या के 10 प्रतिशत से अधिक) भुखमरी से मर गए। उसी कालखण्ड में भारत से ग्रेट ब्रिटेन में गेंहूँ व चावल का निर्यात लगभग 25 गुना तक बढ़ गया था। फिर भी हम नष्ट नहीं हुए, मिटे नहीं क्योंकि ''भारत नष्ट नहीं हो सकता, हमारी जाति समाप्त नहीं हो सकती क्योंकि मानवजाति के भविष्य के लिए वह बहुत आवश्यक है, उसे सबसे ऊँची और सबसे शानदार भूमिका के लिए चुना गया है। भारतवर्ष से ही सारे संसार का धर्म निकलेगा, वह विश्वास सनातन धर्म जो सब धर्मों में तथा विज्ञान और दर्शन में समन्वय करेगा और मानवजाति को अंतरात्मिक रूप से एक बनाएगा।''[6]

ऐसी नृशंस भौतिक परतंत्रता की सूरत में भी बौद्धिक व आत्मा के स्तरों पर भारतीय संस्कृति की उपलब्धियाँ इतनी विराट रही हैं कि पाश्चात्य बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों तथा धर्म-प्रचारकों, जो कि भारतीय धर्म व संस्कृति का अवमूल्यन करने का अति कठोर प्रयास करते रहे हैं, के अत्यधिक नियोजित प्रयासों के बावजूद भी यह न केवल जीवित रह पाई, अपितु यहाँ तक कि अभिवर्धित हुई और साथ ही पश्चिम के हृदयों तथा मानस में अधिकाधिक व्याप्त होती रही है व उनको जीतती रही है। यही चीज भारत के आधुनिक शिक्षित संभ्रांत वर्ग के साथ भी होना प्रारंभ हो रही है जैसा कि पूर्व शताब्दी के शुरु में श्री अरविन्द द्वारा पूर्वानुमानित किया गया था जब उन्होंने लिखा, ''मेरा मानना है कि हमारे धर्म के आध्यात्मिक पहलुओं- चाहे वे वैदिक हों, वेदांतिक,तांत्रिक या पौराणिक हों- की समग्रता में हिन्दु बौद्धिक श्रद्धा का पुनर्जागरण निकट भविष्य की एक अपरिहार्य नियति है।''[7] यद्यपि भारत का सुदृढ़ आर्थिक पुनरुत्थान वास्तव में इस शताब्दी के प्रारंभ से ही दृष्टिगोचर हो पाया है, विश्व को भारत की आध्यात्मिक दान- श्री अरविन्द का चौथा स्वप्न- तो 1947 में भारत की स्वतंत्रता से पूर्व ही आरंभ हो चुका था और तब से अब तक का अधिकाधिक बढ़ ही रहा है। भारतीय धार्मिक व आध्यात्मिक साहित्य का अनुवाद विश्व की लगभग सभी प्रमुख भाषाओं में हो चुका है और वह आधुनिक मानव की मानसिकता को ढालने में गहन रूप से प्रभावी हो रहा है। क्योंकि, जैसी कि श्री अरविन्द ने घोषणा की, ''युगों-युगों का भारत मरा नहीं है, और न ही उसने अपना अंतिम सृजनात्मक शब्द ही उच्चारित किया है; वह जीवित है और उसे अपने लिए तथा मानव- समुदायों के लिए अभी कुछ करना है। अब जिसे जाग्रत होने की चेष्टा करनी होगी वह अंग्रेजियत में रंगी कोई ऐसी पूर्वीय जाति नहीं जो पश्चिम की आज्ञाकारिणी शिष्या हो तथा उसकी सफलता और विफलता के चक्र को दुहराना ही जिसके भाग्य में बदा हो, अपितु वह प्राचीन एवं स्मरणातीत शक्ति जो अपने गहनतर स्व को पुनःप्राप्त कर शक्ति व ज्ञान के परम उद्गम की ओर अपना मस्तक पहले से भी ऊँचा उठाकर अपने धर्म के संपूर्ण मर्म तथा विशालतर रूप को खोजने की ओर अभिमुख होगी।''[8]

भारतीय संस्कृति की महान् दृढ़ता एवं

अपराजेयता का रहस्यः-

"हिन्दू सदा ही स्वप्नदृष्टा एवं रहस्यवादी के रूप में अवमानित रहा है। इस आरोप में सच्चाई है किन्तु साथ ही एक बड़ी चूक भी है। हिन्दु मानस एक प्रकार से विश्व में सर्वाधिक मूर्त है; यह अमूर्त वस्तुओं की खोज करता रहता है, परन्तु उनसे तब तक संतुष्ट नहीं होता जब तक कि वे अमूर्त ही बनी रहती हैं। इस जगत् के पदार्थों को मूर्त करना, उन चीजों को अनुभूत करना जिनका सूर्य एवं वर्षा चक्कर लगाते रहते हैं, या फिर जो अपने सर्वाधिक सूक्ष्म रूप में भौतिक के परिष्कृत रूप मात्र हैं- यह तो अपेक्षाकृत सुगम है, किन्तु हिन्दु तो तब तक संतुष्ट नहीं होता जब तक कि उसने सूर्य के प्रकाश के पीछे ही वस्तुओं को भी मूर्त यथार्थताओं के रूप में अधिकृत न कर लिया हो। वह अनंत,अदृष्ट, आध्यात्मिक तत्व के उत्कंठित है परन्तु वह उनकी अवधारणा मात्र से संतुष्ट नहीं रहेगा, वह अनंत के मानचित्रण का, अदृष्ट के साक्षात्कार का, आध्यात्मिक तत्व को दृष्टिगोचर बनाने का आग्रह करता है। केल्ट (Celt) अपनी कल्पना को अनंत में प्रक्षिप्त करता है और सुंदर मृगमरीचिकाओं भुतहा विचारों से पुरस्कृत होता है जिसमें से वह धुँधले रहस्यमय एवं अग्राह्य काव्य का विकास करता है; हिन्दू अपनी कल्पना के पीछे अपना हृदय, अपनी बुद्धि और अंततः अपनी समग्र सत्ता को भेजता है और जिसके पुरस्कार के रूप में उसने भगवान का साक्षात्कार किया और तदनुरूप अस्तित्व का निरूपण किया है। हिन्दु मनोवृत्ति के इस द्विविध पहलु, चरम आध्यात्मिक का सफलतापूर्वक चरम भौतिकवाद के साथ सामंजस्य स्थापित कर पाना ही हमारे धर्म, हमारे जीवन, हमारे साहित्य एवं हमारी संस्कृति का रहस्य है। एक तरफ हम अनित्य एवं भ्रांतिमान के अलावा सारे अस्तित्व में सभी पदार्थ का आध्यात्मीकरण करते हैं, दूसरी ओर हम अध्यात्म तत्व का अति निश्चित एवं यथार्थ रूपों में भौतिकीकरण करते हैं; यही है उदात्त दार्शनिक आदर्श का रहस्य जो कि एक अल्प सक्षम यूरोपीय बुद्धि को एक असंभव बौद्धिक वातावरण प्रतीत होता है और रुढ़िवादी व औपचारिक रूप देने वाली किसी ईसाई तर्क बुद्धि को अति भद्दा उर्वर मूर्तिवाद प्रतीत होता है।

अन्य किसी जातिगत स्वभाव में ऐसा मानसिक विभेद दो विस्तृत रूप से भिन्न एवं परस्पर विरोधात्मक धाराओं में बँट गया होता जिनकी क्रिया, प्रतिक्रिया एवं तारतम्य के प्रयासों ने ही चिन्तन के इतिहास को बनाया होता। प्रचुर बुद्धियुक्त एवं उदार हिन्दू के लिए यह मानसिक विभेद की दिशा में नहीं अपितु ऐसी प्रारंभिक विसंगति के रूप में कार्य करता है जो एक सुसंगत सामंजस्य का निर्माण करे; एक सर्वोत्कृष्ट एवं अति विशिष्ट हिन्दू चिन्तन दोनों ही प्रवृत्तियों को अस्तित्व के संपूर्ण व सूक्ष्म बोध के लिए आवश्यक मानता है; इन्हें एक ही सत्य के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं के रूप में समझा जाता है, और यदि हम अर्ध-प्रकाश में ही संतुष्ट न रहना चाहें तो दोनों को ही समझना होगा। इसी कारण से, घोर स्वेच्छाचारिता की बजाय, हिन्दू धर्म सभी बौद्धिक अभिवृत्तियों के प्रति पूर्ण रूप से सहिष्णु रहता है; इसीलिए साथ ही साधित हो पाई शृंखलाबद्ध विचार वृत्तियों की भव्य पूर्णता जिनके द्वारा हिन्दू मानस नितान्त नकारात्मक व नितान्त सकारात्मक के मध्य भ्रमण करता है और तब भी उसे उनके अंदर केवल सापेक्षिक अवधारणाओं के द्वारा ऊपर उठती हुई वर्धनशील एवं घनिष्ठ रूप से संबंद्ध सोपानों की सीढ़ी ही दृश्यमान होती है जो एक अंतिम व परम ज्ञान तक ले जाती है।"[9]

"यह मान लें कि काल की प्रक्रिया में तथा संस्कृतियों की आपदाओं में समस्त ऐतिहासिक दस्तावेज, लेखागार, प्रमाण नष्ट कर दिये गये या काल के प्रवाह व सभ्यताओं के विनाश में लुप्त हो गये तथा केवल शुद्ध साहित्य ही बचा रहा। तो कितने राष्ट्रों का हमें जीवन, हृदय और बुद्धि, उनके जीवन, सभ्यता तथा विकास के इतिहास की तस्वीर पर्याप्त रूप से उनकी सर्वोत्कृष्ट साहित्य में प्रकट किया मिलेगा? तीन यूरोपीय राष्ट्र भावी पीढ़ी के सामने अमर रूप से बच पायेंगे, प्राचीन यूनानी, आधुनिक अंग्रेजी व फ्रांसीसी और दो एशियाई राष्ट्र, चीनी और हिन्दू, और कोई नहीं।

इन सब में हिन्दुओं ने अपने आप को सर्वाधिक पूर्णता से, निरंतर एवं सर्वाधिक विशाल स्तर पर अभिव्यक्त किया है, ठीक इसलिए क्योंकि वे अपने साहित्य के रूप एवं तत्व में सर्वाधिक अदम्य रूप से मौलिक रहे हैं। वेद, उपनिषद और पुराण अपने आप में विशिष्ट हैं; महाकाव्य अपने रूप तथा कला की विशिष्टता में विश्व के काव्य साहित्य में बेजोड़ हैं। प्राचीन संस्कृत नाटक से उन नाट्यकला की विधाओं का सादृश्य है जिन्होंने यूरोप में हजार वर्षों से अधिक समय बाद अपने आप को विकसित किया, तथा यहाँ साहित्यिक महाकाव्य रूप के उन विधानों एवं कला के उन सिद्धांतों का अनुसरण करता है जो शुद्ध रूप से स्वदेशी है। और प्रथम श्रेणी की इस विशालकाय कृति ने राष्ट्रीय जीवन व इतिहास का ऐसा अंतरंग और पूर्ण प्रकटीकरण हमारे लिए छोड़ा है कि शुद्ध ऐतिहासिक कृतियों का अभाव मात्र औपचारिक खेद का ही विषय रह जाता है। आत्माभिव्यक्ति की ऐसी ही गहन मौलिकता एवं गहराई शास्त्रीय भाषा के ह्रास के बाद भी महाराष्ट्र, बंगाल एवं हिन्दी भाषी उत्तर भारत के राष्ट्रीय साहित्य में बनी रही।"[10]

इन सब के प्रकाश में तथा इसकी महानता एवं भव्यता के पूर्वकालिक इतिहास को देखते हुए सभी बुद्धिजीवी भारतीयों के मन में एक प्रश्न, जो दिखने में उत्तर न दे सकने योग्य हो, अवश्य ही उठ खड़ा होगा वह हैः

हमें इतने कष्ट क्यों भोगने पड़े?

वंदे मातरम के 7 नवम्बर 1907 के अंक में श्री अरविन्द ने लिखा थाः "यह महान् और पुरातन राष्ट्र कभी मानव प्रकाश का स्रोत था, मानवीय सभ्यता का शिखर, साहस और मानवीयता का व सुचारू प्रशासन और सुस्थिर समाज की परिपूर्णता का आदर्श, सभी धर्मों की जननी, सारी बुद्धिमता और दर्शन का शिक्षक था। हीन सभ्यताओं और अधिक असभ्य लोगों के हाथों इसने बहुत कष्ट झेला है; इसे अंधकार की छाया में गिर कर बहुधा मौत की कड़वाहट चखनी पड़ी है। इसके स्वाभिमान को कुचल कर धूल में मिला दिया गया और इसका गौरव तिरोहित हो गया है। भुखमरी, संताप और निराशा इस धवल धरती, इन गौरवमय गिरि शृंखलाओं, इन प्राचीन सरिताओं तथा इन नगरों की अधिष्ठात्री बन बैठी है जिनकी कि जीवन-गाथा इतिहासपूर्व के काल के भीतर तक जाती है। पर क्या आप यह सोचते हैं कि यह दिखलाता है कि परमात्मा ने हमारा सर्वथा परित्याग कर दिया है और हमेशा के लिए हमें पश्चिम की

सुख-सुविधा, उसके वाणिज्य व उसके अभिमान व ऐय्याशी के पोषक होने के लिए छोड़ दिया है? हम अभी भी ईश्वर के चहेते हैं और हमारी जितनी भी विपत्तियां थीं वे सहिष्णुता का अभ्यास रही हैं, क्योंकि हमारे समक्ष जो महान लक्ष्य हैं उसके लिए संपन्नता पर्याप्त नहीं थी, विपन्नता भी एक तरह का प्रशिक्षण देती है; सत्ता, भलाई और प्रसन्नता के उत्कर्ष का आस्वादन पर्याप्त नहीं था, दुर्बलता, यंत्रणा और अपमान का ज्ञान भी आवश्यक था। यह पर्याप्त नहीं था कि हम दयाशील साधु और परोपकारी नृपति की भूमिका ही अदा कर सकें, जाति-बहिष्कृत और गुलाम की आत्मा क्या महसूस करती है उसका व्यक्तिगत रूप से अनुभव करना भी हमारे लिए आवश्यक था। लेकिन अब वह अध्याय सीखा जा चुका है और हमारे पुनरुत्थान का समय आ चुका है और कोई भी शक्ति अब उस उत्थान को नहीं रोक पायेगी व कोई भी विरोधी स्वार्थ हमें जीने के अधिकार से, हमें अपने स्वरूप में होने से व विश्व पर पुनः एक बार अपनी छाप छोड़ने से नहीं रोक सकेगा।''[11]

वर्तमान में अब हम उस मुहूर्त में हैं जब यह पूर्वकथित उद्घोष , जो कि उस समय जब वह व्यक्त किया था, निश्चित ही दिवास्वप्न के समान प्रतीत हुआ होगा, अपनी संसिद्धि के मार्ग पर हैं।

''राजनीति में प्रेम का स्थान तो है किन्तु वह अपने देश के लिए, देशवासियों के लिए, जाति की महिमा, महानता और उल्लास के लिए प्रेम है, वह अपने साथियों के लिए आत्मबलि का दिव्य आनंद है, उनके कष्टों को दूर करने का आनंद है, मृत्यु में अपनी जाति के पूर्वजों के साथ एक हो जाने का परमानन्द है।

मातृभूमि की मिट्टी के स्पर्श में प्रायः भौतिक आनंद का अनुभव, भारतीय सागरों से आने वाली हवाओं, भारतीय पर्वतों से बहने वाली नदियों का अनुभव, भारतीय परिवेश के दृश्य में, भारतीय पुरुषों, भारतीय नारियों, भारतीय बालकों, भारतीय वाणी, उसकी कविता और उसके संगीत को सुनने का अनुभव, सुपरिचित दृश्यों, शब्दों, आदतों, वेशभूषा, भारतीय जीवन का आचार-व्यवहार- ये हैं उस प्रेम की भौतिक जड़ें।

अपने अतीत पर गर्व, अपने वर्तमान की व्यथा, अपने भविष्य के लिए आवेश देश-प्रेम का तना और उसकी शाखाएं हैं। आत्माहुति और आत्म-विस्मृति, महान् सेवा, देश के लिए परम सहनशक्ति उसके फल हैं और जो रस इस पेड़ को जीवित रखता है वह है देश के अंदर भगवान के मातृ-रूप को पहचानना और उसे अनुभव करना; दिव्य माता का अंतदर्शन, दिव्य जननी का सतत चिंतन उसकी आराधना और उसकी सेवा।''[12]

और यह जागृत एवं शक्तिशाली भारत किन्ही लोगों के लिए भी भय या खतरे का कारण नहीं होगा। भले वे उसकी भौतिक सीमाओं के भीतर हों या बाहर- क्योंकि भारत ने अपने इतिहास में किसी भी समय ऐसा नहीं किया है। जब कभी दिव्य विधान इस राष्ट्र को प्रमुखता में लाया है तो उसने इसे मनुष्य जाति में अपने उद्देश्य की संसिद्धि के लिए ही काम में लिया है।

भविष्य

''भारत का भविष्य बहुत स्पष्ट है। भारत संसार का गुरु है। संसार की भावी रचना भारत पर निर्भर है। भारत जीवित-जागृत आत्मा है। भारत संसार में आध्यात्मिक ज्ञान को जन्म दे रहा है।''[13]

जैसा कि श्री अरविन्द द्वारा संकल्पित है, आध्यात्मिक रूप से जागृत भारत उनके अन्तिम स्वप्न को पूरा करेगा और पार्थिव प्रकृति को इसके लिए सक्षम बनाएगा कि वह एक ऐसा कदम उठाये, ''....जो मनुष्य को एक उच्चतर और विशालतर चेतना में उठा ले जाएगा और उन समस्याओं का हल करना प्रारम्भ कर देगा जिन समस्याओं ने मनुष्य को तभी से हैरान और परेशान कर रखा है जब से उसने वैयक्तिक पूर्णता और पूर्ण समाज के विषय में सोचना विचारना व स्वप्न देखना आरम्भ किया था।.... यहाँ भी यदि इस विकास को घटित होना है तो चूँकि यह अध्यात्म और अन्तर्चेतना की अभिवृद्धि द्वारा ही होगा, इसका प्रारम्भ भारतवर्ष कर सकता है और यद्यपि इसका क्षेत्र सार्वभौमिक होगा तथापि केंद्रीय भूमिका भारत की हो सकती है।''[14]

जंग-ए-आज़ादी के शहीदों को सलाम

सन् 1857 के बागी सैनिकों का कौमी गीत

हम हैं इसके मालिक हिन्दुस्तान हमारा
पाक वतन है कौम का जन्नत से भी प्यारा
ये है हमारी मिल्कियत हिन्दुस्तान हमारा
इसकी रूहानियत से रोशन है जग सारा
कितनी कदीम कितना नईम,
सब दुनिया से न्यारा।
करती है जरखेज जिसे गंगा-जमुन की धारा
ऊपर बर्फीला पर्वत पहरेदार हमारा।
नीचे साहिल पर बजता, सागर का नक्कारा
इसकी खानें उगल रहीं सोना हीरा पारा
इसकी शान-शौकत का
दुनिया में जयकारा।
आया फिरंगी दूर से ऐसा मंतर मारा
लूटा दोनों हाथ से प्यारा वतन हमारा
आज शहीदों ने है तुमको
अहले वतन ललकारा।
तोड़ों गुलामी की ज़ंजीरे बरसाओ अंगारा
हिंदू मुसलमाँ सिख हमारा भाई भाई प्यारा
यह है आजादी का झंडा
इसे सलाम हमारा।।

References :

1. Complete Works of Sri Aurobindo 08, Page 17
2. Complete Works of Sri Aurobindo 25, Page 224
3. Collected Works of The Mother 13, Page 376
4. Complete Works of Sri Aurobindo 20, Page 34
5. M. Nadkarni, India's Spiritual Destiny, Sri Aurobindo Society, Pondicherry, Page 32
6. Complete Works of Sri Aurobindo 06, Page 84
7. Sri Aurobindo Archives and Research, December 1984, Page 135
8. Complete Works of Sri Aurobindo 20, Page 444
9. Complete Works of Sri Aurobindo 01, Page 212-13
10. Sri Aurobindo Archives and Research, April 1977, Page 8
11. Complete Works of Sri Aurobindo 06, Page 707-08
12. Complete Works of Sri Aurobindo 07, Page 118-119
13. Collected Works of The Mother 13, Page 361
14. Complete Works of Sri Aurobindo 36, Page 480

स्मृति

अभिनव कल था, आज है, और आगे भी रहेगा

गोवा में नौ सेना विमान हादसे में लेफ्टिनेंट अभिनव नागोरी के देश हित में हुए बलिदान से हुई अपूरणीय क्षति को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है।

–वसुन्धरा राजे
मुख्यमंत्री राजस्थान

The Navy has indeed lost a fine officer and all of us a valued colleague. While it is an extremely painful experience for men in uniform to lose a comrade in the line of duty, for you and your family, the grief and anguish would clearly be greater. We pray that god may grant you the strength and fortitude to tide over this difficult moment.

-Admiral RK Dhowan
PVSM, AVSM, YSM, ADC
Chief of the Naval Staff

युवाओं के प्रेरणा स्रोत

ऐसे ही विरले होते हैं जो जीवन की कठिन राह चुन देश सेवा के लिए लालायित रहते हैं। जीवन के हर पल मौत का अहसास हँसते-हँसते सहते हैं और समय आने पर कर्तव्य की वेदी पर स्वयं को होम कर देते हैं। ऐसे नौजवान युवाओं के प्रेरणा स्रोत होते हैं। धन्य हैं वे माता-पिता जिनके यहाँ ऐसे अनमोल रत्न ने जन्म लिया।

–गुलाबचन्द कटारिया
गृहमंत्री, राजस्थान

प्यारे विद्यार्थियों,

ढेर सारा आशीर्वाद।

आपको एक ऐसे बालक का परिचय करा रहे हैं जो आपकी ही तरह सामान्य किन्तु होनहार बालक था। उसके माता-पिता दोनों ही शिक्षक हैं। नौकरी में होने से वे उसे समय कम दे पाते थे। उसकी बड़ी नानी ने उसे बड़ा करने की जिम्मेदारी वहन की। तीन माह की उम्र से तीन वर्ष की उम्र तक नानी की गोद में रह कर ही बड़ा हुआ। नानी के संस्कार के साथ-साथ उसकी मौसियाँ प्यार से संभालती, खिलाती-पिलाती। उसे सदैव विनम्रता, सेवाभाव, देश-प्रेम, सादगी एवं स्वावलंबन का पाठ पढ़ाती। यहीं से उसने सदैव मुस्कुराते रहने की कला सीख ली।

बूढ़े नानाजी 'स्वतंत्रता सैनानी' थे। वे स्वाधीनता आन्दोलन में देश हित में जेल में रहे। उनका प्यार, दृढ़ निश्चयी स्वभाव एवं समर्पण उस बालक के व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला बन गए। दादा-दादी का प्रगाढ़ प्रेम उनकी समर्पित भाव से सेवा करने की सीख दे गया।

विद्यालयी शिक्षा सेंट पाल स्कूल, उदयपुर से पूरी की। इस दौरान स्काउटिंग में रह कर एवरेस्ट प्रिय हो गया। एन.सी.सी. (एयर विंग) का कैडेट बना, 'ग्लाइडर' उड़ाया। एक नवीन उत्साह का संचार हुआ उसमें। 'पद्माध्याय' एवं 'हल्दी घाटी' उसकी प्रिय कविताएं थी। मंच पर वीर की कविताएं पढ़ना उसे बहुत भाता था। विज्ञान मेलों में प्रादर्श बना कर प्रस्तुत करना, आत्मविश्वास से लबरेज होकर दर्शकों को अपनी थीम एवं प्रादर्श की जानकारी प्रस्तुत करते समय दर्शकों एवं निर्णायकों का मन मोह लेता था। कई पुरस्कार प्राप्त किए। शिक्षकों का दिल जीता। सहपाठियों में भी प्रिय रहा। बी.ई. (इलेक्ट्रॉनिक एण्ड कम्युनिकेशन) एस.जे.बी. आई.टी. बैंगलौर से करने के दौरान अंतिम वर्ष में कई सारी कम्पनियां प्लेसमेंट हेतु कॉलिज में आई। तीन चार नामी कम्पनियों के ऑफर मिले, किन्तु उसने भारतीय नौ सेना में जाने का निश्चय किया। कठिन परिश्रम, आत्मविश्वास एवं देश सेवा के जज्बे के कारण भारतीय नौ सेना ने उसका चयन नौ सेना के पायलट के लिए किया।

मेवाड़ क्षेत्र का यह पहला बालक है जिसने नौ सेना के पायलट बन कर संपूर्ण मेवाड़ का ही नहीं अपितु राजस्थान एवं देश का नाम रोशन किया। यह बालक कोई और नहीं कानोड़ कस्बे में जन्मा आपका अपना 'अभिनव नागोरी' है जो दो बहिनों का इकलौता भाई था। जो भारतीय नौ सेना में सब लेफ्टिनेंट से लेफ्टिनेंट बना। वायु सेना में रह कर जिसने विमान उड़ाने की ट्रेनिंग ली। जिसने नौ सेना के बेस कोचिन में रह कर नौ सेना के कार्यों को सीखा। जिसे गोवा में नौ सेना की कमान में 'डोर्नियर विमान' उड़ाने हेतु पायलट के रूप में पदस्थापित किया।

हँसमुख, विनोदी, कर्तव्यपरायण, स्वाभिमानी, रणबांकुरा, सबका चहेता किरदार, युवाल पायलट लेफ्टिनेंट अभिनव नागोरी दिनांक 24 मार्च, 2015 रात्रि को अपनी नियमित उड़ान अपने कमाण्डर के साथ कर रहा था कि अचानक विमान में तकनीकी खराबी आने से विमान क्रेश में 24 वर्ष की अल्पायु में शहीद हो गया और बन गया हजारों युवाओं का प्रेरक पथ-प्रदर्शक।

यद्यपि शहीद अभिनव का अन्तिम संस्कार पूरे राजकीय, पुलिस एवं सैन्य सम्मानपूर्वक हजारों लोगों की नम आँखों के सामने 'अभिनव अमर रहे' के नारों के साथ किया गया तथापि अभिनव कल भी था, आज भी है और आगे भी रहेगा।

आओ। हम सब नमन करें उस प्रेरणाशील व्यक्तित्व के धनी शहीद बालक अभिनव को जो देश हित में न्यौछावर हो गया और हमें भी प्रेरणा दे गया कि हम सब अन्तिम श्वास तक राष्ट्रहित में काम करें। राष्ट्र का गौरव बढ़ाएं। हमें पूर्ण विश्वास है कि अभिनव प्रेरणा पाथेय बन कर आपके जीवन में सदैव उजास भरता रहेगा। इति शुभम्।

जननी
सुशीला नागोरी

जनक
धर्मचन्द नागोरी

शिक्षक राष्ट्रपति, राष्ट्रपति शिक्षक, अभूतपूर्व राष्ट्रपति, पीपुल्स प्रेज़ीडेंट, कमाल के कलाम, मिसाइल मैन... और भी न जाने कितने-कितने आत्मीय संबोधन सही मायने में भारत रत्न, युवाओं के सच्चे पथ प्रदर्शक, 2020 विजन के दिग्दर्शक, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अब भौतिक रूप में हमारे साथ नहीं है पूर्णतः अविश्वसनीय लगता है पर कई बातें... पर, पर ही शेष हो जाती हैं...।

भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का 27 जुलाई 2015, सोमवार की शाम को मेघालय की राजधानी शिलांग में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया।

डॉ. कलाम आई.आई.एम. शिलांग में व्याख्यान दे रहे थे तभी अचानक तबियत खराब होने पर वे गिर पड़े। उन्हें तुरन्त बैथनी अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल के सीईओ डॉ. जॉन सैलोह ने बताया कि आईसीयू में उन्हें बचाने की बहुत कोशिश की गई लेकिन सारे प्रयास विफल रहे।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने वर्ष 2002 से 2007 तक राष्ट्रपति रहते हुए पूरी दुनिया में भारत का नेतृत्व कर गौरव एवं सम्मान दिलाया।

डॉ. कलाम युवाओं और विद्यार्थियों के सबसे बड़े प्रेरणापुंज थे। 84 वर्ष की आयु में भी भारतीय उन्हें सबसे युवा व्यक्ति के रूप में मानते थे। मृत्यु के कुछ क्षण पहले तक उनमें वैसा ही जोश और उत्साह था, जैसा आप युवाओं में देखते हैं। मृत्यु ने भी उनका वरण ऐसे समय में किया जब वे अपने सबसे प्रिय विषय के बारे में युवाओं को संबोधित कर रहे थे।

डॉ. कलाम की चिर स्मृति नवचेतन इंसान, महान मुस्लिम, वीणा वादक, कुरान के साथ-साथ भागवत गीता का बराबर ज्ञान रखने वाले, डीआरडीओ के सचिव, देश के राष्ट्रपति और विज्ञान लेखन में प्रमुखता से बिकने वाली पुस्तकों के महान लेखक के रूप में भी बनी रहेगी।

महान देशभक्त, वैज्ञानिक रहे या राष्ट्रपति उनके लिए भारत हमेशा प्रथम स्थान पर बना रहा। देशभक्ति उनमें कूट-कूट कर भरी थी। डॉ. विक्रम साराभाई, प्रोफेसर सतीश धवन और डॉ. ब्रह्म प्रकाश उनके प्रेरणास्रोत थे।

कार्य को पूर्णतः समर्पित प्रेरक व्यक्तित्व ने अपने जीवन में सिर्फ दो ही अवकाश लिए, एक पिता और दूसरा माता के निधन पर।

विनम्र श्रद्धांजलि

शिक्षक राष्ट्रपति

❒ मुकेश व्यास

कलाम के सपनों के 'पंचतत्व'

डॉ. कलाम का सपना था कि भारत 2020 तक या उससे पहले विकसित देश बने। इसका जिक्र उन्होंने अपनी किताब भारत 2020 में किया है। उनका मानना था कि उनके इस सपने को भारत का हर नागरिक मिशन के तौर पर ले। जीवन को बेहतर बनाने के लिए वे तकनीक को अहम मानते थे। उनके नेतृत्व में 500 विशेषज्ञों की एक टीम ने डिपार्टमेंट ऑफ साइंसेज एण्ड टेक्नोलॉजी के तहत इंडिया विजन 2020 के नाम से पहला दस्तावेज तैयार किया था। इसमें उन्होंने मुख्यतः इन पांच बातों पर जोर दिया-

कृषि और खाद्य प्रसंस्करण: उनका कहना था कि देश की खेती और खाद्य प्रसंस्करण को दोगुना करने की जरूरत है।

इंफ्रास्ट्रक्चर: देश को विकसित बनाने के लिए उन्होंने देश के हर एक गांव में विद्युतीकरण को जरूरी बताने के साथ ही सौर ऊर्जा के इस्तेमाल पर जोर दिया था।

शिक्षा और स्वास्थ्य: देश से अशिक्षा को खत्म करना, सामाजिक सुरक्षा के साथ ही हर इंसान तक स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं आसानी से पहुँचानी जरूरी बताया था।

तकनीक: उन्होंने सूचना एवं प्रसारण तकनीक पर जोर देने की भी वकालत की थी। इसके अलावा शिक्षा के क्षेत्र में ई-गवर्नेंस को बढ़ाने पर भी जोर दिया था। वे टेलीकम्युनिकेशन और टेलीमेडिसिन जैसी तकनीकों के हिमायती थे।

विज्ञान: उनका मानना था कि भारत में परमाणु तकनीक, रक्षा तकनीक और अंतरिक्ष तकनीक को मजबूत बनाने की जरूरत है।

जीवन के उसूल

- अपनी पहली जीत के बाद कभी आराम मत करिए, क्योंकि दूसरे मौके पर अगर आप असफल हुए तो पहले से कहीं अधिक लोग ये कहने के लिए तैयार हैं कि पहली जीत महज भाग्य की बात थी।
- सारी चिड़िया बारिश होने पर किसी आड़ में जाकर उससे बचती हैं। नहीं चील बादलों के ऊपर उड़कर बारिश से बचती है।
- अगर आप सूर्य की तरह चमकना चाहते हैं तो पहले उसकी तरह जलिए।
- हम सबके पास बराबर प्रतिभा नहीं है। हमारे पास प्रतिभा को विकसित करने का बराबर मौका है।
- सपने वे नहीं है जो हम सोते समय देखते हैं। सपने तो वो हैं जो हमें सोने नहीं देते।
- फेल (FAIL) का मतलब है- फर्स्ट एटेम्पट इन लर्निंग
- एण्ड (END) का मतलब है-एफर्ट नेवर डाई
- नो (NO) का मतलब है-नेक्स्ट अपॉर्चुनिटी
- अगर आप रेत पर अपने कदमों के निशान छोड़ना चाहते हैं तो एक ही उपाय है... कदम पीछे मत खींचिए।

डॉ. अबुल पाकीर जैनुलआबद्दीन अब्दुल कलाम

जन्म स्थान	: धनुषकोडी, रामेश्वरम
माता	: अशिमा जैनुलआबद्दीन
पिता	: जैनुलआबद्दीन मरक्कयार
डीआरडीओ में मुख्य वैज्ञानिक	: 1960
इसरो में स्थानान्तरण	: 1969
प्रधानमंत्री के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार	: 1992-99
भारत के राष्ट्रपति	: 2002-2007

पहले राष्ट्रपति जिन्होंने सुखोई विमान उड़ाया और सियाचिन भी गए।

जन्म : 15 अक्टूबर, 1931 ✦ निधन : 27 जुलाई, 2015

आखिरी ट्वीट:

शिलांग जा रहा हूँ। लिवेबल प्लेनेट अर्थ पर आईआईएम में कार्यक्रम में भाग लेने।

-ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने डॉ. कलाम के निधन को अपूरणीय क्षति बताते हुए कहा- **"राष्ट्र ने एक महान सपूत खो दिया है जो आजीवन जनता के राष्ट्रपति थे और अपनी मृत्यु के बाद भी जनता के राष्ट्रपति बने रहेंगे।"**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा- **"आज मैंने एक मार्गदर्शक खो दिया है। देश ने एक मार्गदर्शक खो दिया है। वह राष्ट्रपति थे तब भी कहते थे, मैं एक टीचर हूँ। और देखिए, वह अपने अंतिम समय में भी पढ़ा ही रहे थे। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।"**

डॉ. कलाम ने भारत को एक परमाणु ताकत बनाया। अग्नि व पृथ्वी जैसी मिसाइलें भी उनकी देन हैं। वे कहते ही नहीं थे कि महान सपने देखने वालों के सपने हमेशा श्रेष्ठ होते हैं, बल्कि खुद उन्होंने अपनी जिन्दगी की आखिरी सांस तक इसे फलीभूत करके भी दिखाया। यही कारण है कि आज कलाम को सलाम करते हुए हर भारतीय की आँख नम है।

-सह सम्पादक, शिविरा, बीकानेर

स्पट : भामाशाह सम्मान समारोह

भामाशाहों और प्रेरकों का सम्मान, राज्यपाल भी बने भामाशाह

□ महावीर प्रसाद गर्ग

21 वां राज्यस्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह 28 जून 2015 को बिड़ला सभागार जयपुर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल श्री कल्याण सिंह थे। अध्यक्षता माननीय शिक्षा राज्यमंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी ने की तथा विशिष्ट अतिथि माननीय ग्रामीण विकास एवं पंचायतराज मंत्री सुरेन्द्र गोयल रहे। इस अवसर पर शासन सचिव माध्यमिक शिक्षा श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव प्राथमिक शिक्षा श्री कुंजीलाल मीना, निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री सुवालाल तथा निदेशक प्राथमिक शिक्षा श्री बी.एल. मीना मंचासीन थे।

अतिथियों के आगमन पर स्वागत द्वार पर रोली का टीका व बैच लगाकर पुष्पगुच्छ से भामाशाह एवं प्रेरकों तथा महामहिम राज्यपाल महोदय का एन.सी.सी. कैडेट्स एवं पुलिस बैण्ड द्वारा 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत राष्ट्रगान 'जन-गण-मन अधिनायक...' के साथ की गई तत्पश्चात् माँ सरस्वती एवं भामाशाह के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलन माननीय अतिथियों द्वारा किया गया।

शासन सचिव प्राथमिक शिक्षा श्री कुंजीलाल मीना द्वारा मंचासीन अतिथियों, भामाशाहों, प्रेरकों एवं अधिकारियों का स्वागत किया गया।

महामहिम राज्यपाल श्री कल्याण सिंह को शिक्षा राज्यमंत्री श्री वासुदेव देवनानी एवं पंचायतीराज मंत्री श्री सुरेन्द्र गोयल ने पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया। श्री नरेशपाल गंगवार एवं श्री कुंजीलाल मीना ने शिक्षा राज्यमंत्री का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। श्री नरेशपाल गंगवार व श्री कुंजीलाल मीना शासन सचिव शिक्षा को निदेशक माध्यमिक श्री सुवालाल व निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा श्री बाबूलाल मीना द्वारा पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया गया।

जयपुर के विभिन्न विद्यालयों की

भामाशाह परिचय

भामाशाह (1552 से 1600 ई.) एक प्रख्यात जनरल, मंत्री एवं महाराणा प्रताप के करीबी सहयोगी थे। यह ओसवाल जैन समुदाय के एक कावड़िया गौत्र के थे। उनके पिता भारमल को राणा सांगा द्वारा रणथंभौर किले का किलेदार बनाया। बाद में महाराणा उदयसिंह प्रधानमंत्री थे। इनका महाराणा प्रताप ने मेवाड़ के प्रधानमंत्री के पद पर पदोन्नत किया। भामाशाह ने अपने साथ अपने छोटे भाई ताराचन्द के साथ मेवाड़ के लिए कई लड़ाईयां लड़ी। भामाशाह से ताराचन्द चार साल छोटे थे; जिन्होंने कई अफसरों पर मेवाड़ के सैनिक दलों की कमान संभाली। इन्होंने मुगल सेना के शिविरों पर हमला किया। वहां के धन को जीता, जिससे मेवाड़ का वित्त पोषण हुआ। भामाशाह को मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम था। वे अपनी शूरता और दानवीरता के लिए इतिहास में अमर है।

शिक्षिकाओं ने सरस स्वर लहरी में दानवीर भामाशाह से संबंधित गीत प्रस्तुत किया।

यह जीवन भी क्या जीवन है,
जो काम देश के आ न सका।
यह चन्दन भी क्या चन्दन है,
जो अपना वन महका न सका।

श्री नरेशपाल गंगवार सचिव माध्यमिक शिक्षा ने भामाशाह सम्मान समारोह का परिचय दिया और उन्होंने कहा कि राजस्थान की धरती पर दान देने की परम्परा रही है। शूरवीर व दानवीर भामाशाह ने मेवाड़ की रक्षा के लिए अपना तन, मन, धन महाराणा प्रताप के चरणों में अर्पित कर दिया। इसी भावना से यह भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित किया जाता है। इस गौरवशाली परम्परा को शिक्षा के क्षेत्र में भौतिक विकास के लिए काम में लेकर कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

शिक्षा के लिए दान श्रेष्ठ

शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी ने कहा कि शिक्षा का दान ही श्रेष्ठ दान है। उन्होंने संस्कृति से जुड़ी भारतीय परम्परा का हवाला देते हुए कहा कि जो दूसरे का कमाया खाता है वह 'विकृति' है और जो स्वयं कमा कर अपना भरण-पोषण करता है वह 'प्रकृति' है और जो अपनी कमाई से दूसरों का पोषण और दान करता है वह 'संस्कृति' है। शिक्षा राज्यमंत्री ने विभाग की विभिन्न योजनाएं जैसे-निःशुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण, मिड डे मील, पंचायत स्तर पर कक्षा 1 से 12 तक आदर्श विद्यालयों की स्थापना, स्टर्पिंग पैटर्न द्वारा सभी विद्यालयों में अध्यापकों का पदस्थापन कर शिक्षकों की कमी को पूरा करना है।

शिक्षा में हो रहे बदलाव को स्वीकार करें

श्री सुरेन्द्र गोयल मंत्री ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज ने अपने उद्बोधन में राजस्थान के गौरव और भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत को नमन करते हुए इस गौरवशाली परम्परा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। शिक्षकों से आह्वान किया कि शिक्षा में हो रहे बदलावों का स्वागत कर मन से स्वीकार करें और शिक्षा मंत्री जी का हौंसला बढ़ाएं। भामाशाहों का अभिनन्दन करते हुए इस पुनीत कार्य को जारी रखने हेतु अपील की।

महामहिम राज्यपाल एवं अतिथियों द्वारा भामाशाह प्रशस्ति-पुस्तिका का विमोचन किया गया। इस पुस्तिका में भामाशाहों एवं प्रेरकों का

संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनके द्वारा किये गये कार्यों का विवरण है।

भामाशाह एवं प्रेरकों का सम्मान

कार्यक्रम में भामाशाहों एवं प्रेरकों का जब सम्मान किया गया तो उपस्थित सभी व्यक्ति भाव विभोर हो गए। इस कार्यक्रम में उपस्थित हर व्यक्ति अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा था। कतारबद्ध सम्माननीय भामाशाह मंच पर आ रहे थे। उन्हें श्री कुंजीलाल मीना, प्रारम्भिक शिक्षा सचिव श्रीफल भेंट कर रहे थे तो शिक्षा राज्यमंत्री श्री देवनानी जी शॉल ओढ़ा रहे थे। महामहिम राज्यपाल महोदय प्रतीक चिह्न भेंट कर रहे थे और श्री सुरेंद्र गोयल पंचायतीराज मंत्री ने प्रमाण-पत्र प्रदान किए। सभागार में तालियों की गूँज हो रही थी। चारों ओर प्रसन्नता आनन्द और उल्लास का वातावरण था।

राज्यपाल बने भामाशाह

महामहिम राज्यपाल महोदय ने अपना उद्बोधन प्रारम्भ किया। आपने बताया कि मेवाड़ राजा महाराणा प्रताप के सेनापति, महामंत्री एवं सलाहकार श्री भामाशाह दानी ही नहीं महादानी थे; जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन के संचित कोष को स्वतंत्रता संग्राम एवं सेना संगठन हेतु महाराणा प्रताप को समर्पित कर दिया था। वह महादानी हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। ऐसा महान कार्य करने वाले लोग आज भी मौजूद हैं जो परहित के लिए अपनी कमाई समर्पित करते हैं। उनका सम्मान राज्य सरकार द्वारा हो रहा है। वे अपने जीवनकाल में ऐसे अनूठे कार्यक्रम में पहली बार उपस्थित हुए। ये उपस्थित सभी भामाशाह अपना स्वार्थ त्याग कर धन का मोह त्याग कर शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य कर रहे हैं, ये संन्यासी राष्ट्र निर्माण में अपनी सच्ची भूमिका निभा रहे हैं।

महाराणा प्रताप 'महान्'

महामहिम ने त्याग और बलिदान करने वालों को महान् बताया है। इस दृष्टि से महाराणा प्रताप महान त्यागी, बलिदानी, राष्ट्र भक्त थे। सही अर्थों में महाराणा प्रताप 'महान्' थे। राज्यपाल महोदय ने अपनी भावना व्यक्त की है कि 'महाराणा प्रताप महान्' जैसे व्यक्तित्व को बच्चों के पाठ्यक्रम में होना चाहिए, जिसे पढ़कर बच्चे अपनी गौरवशाली संस्कृति से परिचित हो सकें। महामहिम ने कहा कि 'प्रताप महान्' का स्टेच्यू जयपुर में होना चाहिए। उन्होंने अपने एक माह का वेतन शिक्षा के विकास हेतु देने की घोषणा कर महामहिम राज्यपाल भी प्रतीक स्वरूप भामाशाह बने।

गरिमामय मंच पर उपस्थित अतिथिगण द्वारा भामाशाह सम्मान।

शिक्षा पर प्रकाश डालते हुए महामहिम ने प्रारंभिक शिक्षा से उच्च शिक्षा तक गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता महसूस की। 1990 तक की लाखों डिग्रियां नहीं बँटी हैं इस पर भी अफसोस व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि कनवोकेशन कार्यक्रम में गाउन पहनकर डिग्री लेने वाले व्यक्ति के जीवन में एक उत्सव जैसा होता है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि शीघ्र ही बकाया डिग्रियां वितरित की जाएगी। आपने लर्निंग के साथ अर्निंग को भी महत्त्वपूर्ण बताया ताकि बेरोजगारी की समस्या से मुक्ति मिल सके। इस शांतिपूर्ण एवं अनुशासित वायुमंडल में सम्पन्न इस शिक्षा के महादान के कार्यक्रम में उपस्थित होकर महामहिम राज्यपाल स्वयं को सुखद अनुभूत कर रहे थे।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री सुवालाल

ने अतिथियों, भामाशाहों एवं प्रेरकों का अन्तर्मन से स्वागत किया तथा दानवीर भामाशाह के जीवन चरित्र का अध्यापकों एवं छात्रों को अनुसरण करने की अपील की तथा अगले वर्षों में शिक्षा हेतु अधिक दान देने एवं राजस्थान के विकास हेतु आह्वान किया।

इस गौरवशाली सम्मान समारोह के भव्य

कार्यक्रम के समापन में श्री बी.एल. मीना, निदेशक प्रारंभिक शिक्षा ने उपस्थित सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ज्योति जोशी एवं डॉ. पंकज ने संयुक्त रूप से किया।

समारोह की खास बातें

- भामाशाह की 463वीं जयंती के अवसर पर 21वां राज्य स्तरीय समारोह आयोजित किया गया।
- मुम्बई के एक परिवार के 12 सदस्यों का सम्मान।
- दूर-दराज के क्षेत्र में स्थित ढाणियों से आए कई अनपढ़ लोगों ने भी स्कूलों के लिए 10 लाख रुपये से अधिक दान दिया।
- शैक्षिक रूप से पिछड़े माने जाने वाले मेव समुदाय के अलवर के 10 से अधिक दानदाताओं का सम्मान।
- गंगानगर जिले के नरेन्द्र कुमार छाबड़ा और उनके पुत्र मोहित छाबड़ा ने 2.90 करोड़ रुपये का दान किया।
- मणि देवी फाउंडेशन ट्रस्ट कोलकाता के किशन मोदी ने झुंझुनूं के स्कूल में सर्वाधिक 1.35 करोड़ रुपये खर्च किए।
- 77 भामाशाहों ने 20.24 करोड़ रु. का आर्थिक सहयोग दिया।

सम्मानित हुए भामाशाहों एवं प्रेरकों की सूची इस प्रकार हैं–

भामाशाह

1. श्रीमती मणी देवी मोदी फाउण्डेशन ट्रस्ट, कोलकाता (पं.बं.) 135.00 लाख रुपये
2. श्री जोग सिंह राजपुरोहित, बैरठ (जालौर) 105.31 लाख रुपये
3. सेठ श्री नरेन्द्र कुमार छाबड़ा, अनूपगढ़ (श्री गंगानगर) 100.45 लाख रुपये
4. सेठ श्री मोहित कुमार छाबड़ा, अनूपगढ़ (श्री गंगानगर) 100.45 लाख रुपये
5. हिन्दुस्तान जिंक, श्री प्रवीण कुमार जैन, हुरड़ा (भील.) 91.36 लाख रुपये
6. श्री वीरेन्द्र कुमार कैलाश चन्द्र गुप्ता, जयपुर 75.85 लाख रुपये
7. श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, जेनारी गच्छछ, पुरी(उडीसा) 61.50 लाख रुपये
8. श्री मुकेश कुमार शर्मा, इम्फाल (मणिपुर) 60.00 लाख रुपये
9. ओरियन्ट सिन्टैक्स (प्रो. एपीएम इण्ड. लि.),भिवाड़ी 52.00 लाख रुपये
10. आर.टेक हाऊसिंग प्रा.लि., अलवर 42.20 लाख रुपये
11. श्री केवलराज हिंगड़, गोरेगाँव (प.), मुम्बई 40.12 लाख रुपये
12. वर्ल्ड विजन इण्डिया ए.डी.पी., राजगढ़ (अलवर) 39.26 लाख रुपये
13. श्री सीमेन्ट लि. (श्री मनोज महला), रास (पाली) 37.84 लाख रुपये
14. हिन्दुस्तान जिंक (श्री राजेन्द्र प्रसाद दशोरा), राजसमंद 34.20 लाख रुपये
15. नारंगी श्रीराम गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर 33.68 लाख रुपये
16. महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन, उदयपुर 33.20 लाख रुपये
17. श्री लक्ष्मीनारायण जाखड़, श्रीनगर (हनुमानगढ़) 33.13 लाख रुपये
18. श्री पी. प्यारेलाल जैन, एग्मोर (चैन्नई) 31.42 लाख रुपये
19. इन्फोसिस बी.पी.ओ. लि. श्री निसान्त सक्सैना, जयपुर 30.80 लाख रुपये
20. श्री माधव लाल जाट, लोढ़ियाना (राजसमंद) 30.77 लाख रुपये
21. श्री चाँदमल हरसौरा, डाबी तह. तालेड़ा (बूँदी) 30.33 लाख रुपये
22. एस.आर.एफ. लि.(डॉ. राजबीर सिंह), भिवाड़ी 30.06 लाख रुपये
23. मयूर यनिकोटर्स लि. (श्री सुरेश कुमार पोद्दार), जयपुर 27.70 लाख रुपये
24. इब्तिदा (श्री राजेश सिंघी), अलवर 26.24 लाख रुपये
25. आशियाना हाउसिंग लि. (श्री विशाल गुप्ता), भिवाड़ी 25.84 लाख रुपये
26. वण्डर सीमेंट लि., निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़) 25.47 लाख रुपये
27. माताश्री गोमती देवी जन सेवा निधि (ल्यूपिन), अलवर 25.42 लाख रुपये
28. श्री बहादुर सिंह राजावत, वैशाली नगर, जयपुर 22.91 लाख रुपये
29. आई.डी.एफ.सी. फाउण्डेशन, नई दिल्ली 22.55 लाख रुपये
30. त्रेहन होम डवलपर्स प्रा. लि., अलवर 21.13 लाख रुपये
31. श्री सिगवर्क फाउण्डेशन (एनजीओ), भिवाड़ी (अलवर) 20.67 लाख रुपये
32. श्रीराम पिस्टन्स एण्ड रिंगस लि., पथरेड़ी (अलवर) 19.33 लाख रुपये
33. कजरिया सिरामिक्स लि., गैलपुर (अलवर) 18.12 लाख रुपये
34. अक्ष ऑप्टिफाइबर लि. (श्री बी.आर. रखेचा), भिवाड़ी 17.17 लाख रुपये
35. जिलेट इण्डिया लि. (श्री बॉबी रैनोसी), भिवाड़ी 16.00 लाख रुपये
36. श्री फतेह मोहम्मद, नीकच तह. रामगढ़ (अलवर) 15.20 लाख रुपये
37. श्री उमरदीन, औदाका तह. रामगढ़ (अलवर) 15.07 लाख रुपये
38. रेशम देवी नानक चन्द मित्तल, अलवर 14.65 लाख रुपये
39. श्री तिलोक चन्द सुथार, तख्तगढ़ (पाली) 14.62 लाख रुपये
40. पेरनोड रिकॉर्ड इंडिया प्रा.लि.,कारोड़ा–बहरोड(अलवर) 14.26 लाख रुपये
41. श्री पूराराम चौधरी, गुडा अखेराज, देसुरी (पाली) 14.18 लाख रुपये
42. श्री सोहन लाल, कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
43. श्रीमती राजी देवी कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
44. श्री कुन्दनमल, बारोवली (पूर्व), मुम्बई 13.08 लाख रुपये
45. श्रीमती रेखा देवी, बारोवली (पूर्व), मुम्बई 13.08 लाख रुपये
46. श्री मनिष जैन, कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
47. श्रीमती निता मनिष जैन, कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
48. श्री जितेन्द्र कुमार, कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
49. श्रीमती अस्मिता जैन, कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
50. श्री चन्द्रेश जैन, कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
51. श्रीमती प्रीयंका जैन, कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
52. श्री भरत कुमार, कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
53. श्रीमती सेजल, कांदिवली, मुम्बई 13.08 लाख रुपये
54. श्री शिव कुमार पाण्डेय, सांगानेर, जयपुर 12.80 लाख रुपये
55. आशियाना हाउसिंग लि. (श्री विशाल गुप्ता), जयपुर 12.71 लाख रुपये
56. अक्ष ऑप्टिफाइबर लि., रींगस (सीकर) 12.27 लाख रुपये
57. श्री इन्द कुमार तोलानी, अलवर 12.12 लाख रुपये
58. श्री रुस्तम, ऐलाका, तिजारा (अलवर) 12.00 लाख रुपये
59. श्री रामगोपाल अग्रवाल, खण्डेला (सीकर) 11.28 लाख रुपये
60. श्री नारायण दास गुरनानी, जयपुर 11.27 लाख रुपये
61. श्री यासीन खान, तिजारा (अलवर) 11.00 लाख रुपये
62. श्री सुमेर, बांझड़ा, पो.ग्वालदा, तह. तिजारा (अलवर) 11.00 लाख रुपये
63. श्री समसूदीन, जैरोली, तह. तिजारा (अलवर) 11.00 लाख रुपये
64. श्री बून्नी खाँ, जैरोली, तह. तिजारा (अलवर) 11.00 लाख रुपये
65. श्री बसीर, बांझड़ा, पो.ग्वालदा, तह. तिजारा (अलवर) 11.00 लाख रुपये
66. इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन लि., दौराई (अजमेर) 10.66 लाख रुपये
67. श्री रामावतार अग्रवाल, हैदराबाद (आ.प्र.) 10.65 लाख रुपये
68. श्री सुखपाल जाट, ढाकपुरी, उमरैण (अलवर) 10.50 लाख रुपये
69. श्री नेमीचन्द तोसनीवाल, कोलकात्ता 10.44 लाख रुपये
70. श्री दिलिप सिंह शेखावत, सबलपुरा (सीकर) 10.31 लाख रुपये
71. श्री बिरदीचन्द अग्रवाल, कालाडेरा, चौमूं (जयपुर) 10.17 लाख रुपये
72. श्री रामकुमार पुरोहित, अहमदाबाद (गुजरात) 10.07 लाख रुपये
73. श्री सूरज, मालियर जट्ट, विलासपुर, तह. तिजारा 10.00 लाख रुपये
74. श्री दीनू खाँ, पो.ग्वालदा, तह. तिजारा (अलवर) 10.00 लाख रुपये
75. श्री मखमूल, पो.ग्वालदा, तह. तिजारा (अलवर) 10.00 लाख रुपये
76. श्री इन्द्र सिंह, ईसाली (पाली) 10.00 लाख रुपये
77. श्री मोटाराम, ईसाली (पाली) 10.00 लाख रुपये

प्रेरक

1. श्री तिलक राज 'पंकज', अलवर
2. श्रीमती विजय इन्द्रा, उदावास (झुंझुनूं)
3. श्री मलकीयत सिंह गिल गुरुजी, अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर)
4. श्रीमती कुलदीप कौर वोहरा, अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर)
5. श्री शंकर लाल गुप्ता, जयपुर
6. श्री वेदप्रकाश आदित्य, झुंझुनूं
7. श्री बुधराम महला, झुंझुनूं
8. श्री महेन्द्र सिंह यादव, अलवर
9. श्री विष्णु दत्त स्वामी, भिवाड़ी (अलवर)
10. श्री गुमान सिंह जाटव, अलवर
11. श्री बंशीलाल कुमावत, घाणेराव–देसुरी (पाली)
12. श्री नन्दलाल सिंह जोधा, बाबरा–रायपुर (पाली)
13. श्री सतीश कुमार शर्मा, जयपुर
14. श्री अशोक कुमार आहूजा, अलवर
15. श्रीमती दामिनी दाँत्यां, उदयपुर
16. श्री ब्रजराज शर्मा, पाली
17. श्री राजेश कुमार, अलवर
18. श्री बद्रीलाल जाट, झौर (राजसमंद)
19. श्री ओम प्रकाश मुद्गल, डाबी (बूँदी)
20. श्री मिठ्ठन लाल, रामगढ़ (अलवर)

–प्रधानाचार्य,
शहीद अमित भारद्वाज रा.उ.मा.वि.,
माणक चौक, जयपुर
मो. 9414466463

नदी को पार करना पौरुष का काम है, वरना बहाव के साथ तो लाशें भी चली जाती हैं। –स्वामी विवेकानन्द

फर्नीचर वितरण कार्यक्रम

राजकीय विद्यालयों का कायाकल्प

❑ अमित शर्मा

राजस्थान की इदवस्थली के रूप में प्रसिद्ध तथा शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक नगरी, शैक्षिक राजधानी का गौरव प्राप्त करने वाले अजमेर का सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास बहुत समृद्ध रहा है। किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास में शिक्षा तथा समुदाय की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। निःसन्देह शिक्षा तथा समाज एक दूसरे के पूरक अवयव हैं। जहाँ शिक्षा को मानसिक, बौद्धिक एवं वैचारिक दृष्टि से उन्नत कर श्रेष्ठ समाज की आधारशिला शिक्षालयों में रखी गयी है, सहज ही उन विद्या मंदिरों तथा गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता का अनुभव करते हैं।

यह एक सुखद संयोग ही है कि राजस्थान राज्य के माननीय शिक्षा मंत्री प्रो. वासुदेव देवनानी अजमेर जिले के प्रभारी मंत्री भी है। अपनी शिक्षा दीक्षा अजयमेरु की पावन धरा से ग्रहण करने वाले मंत्री महोदय का शहर के विद्यालयों से आत्मिक लगाव सहज तथा स्वाभाविक है। राज्य में शिक्षा के क्षेत्र आमूल चूल परिवर्तन का बीड़ा उठाने वाले मंत्री जी ने अजमेर शहर के राजकीय विद्यालयों को भौतिक दृष्टि से सम्पन्न बनाने की दिशा में एक अनूठा पायलेट प्रोजेक्ट प्रारम्भ किया है। अजमेर के कायड में स्थित हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड कम्पनी के प्रबंधकों से सम्पर्क कर औद्योगिक इकाइयों के सामाजिक सरोकारों को शैक्षिक उन्नयन से जोड़ते हुए उन्हें शहर के राजकीय विद्यालयों में फर्नीचर, पेयजल टंकियां, वाटरकूलर आदि सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु भामाशाह बनने के लिए प्रेरित किया। हिन्दुस्तान जिंक प्रबंध निदेशक श्री के.सी. मीणा के अनुसार अजमेर शहर के लगभग 60 उच्च माध्यमिक, माध्यमिक एवं उच्च प्राथमिक व प्राथमिक विद्यालयों में 4000 टेबल-स्टूल, 200 डेस्क, 500 बैंच, 3 वाटर कूलर तथा 41 पानी की टंकियों का वितरण किया गया। अजमेर उत्तर विधानसभा क्षेत्र की विभिन्न स्कूलों में एक ही चरण में लगभग 80 लाख रुपये की लागत

अजमेर उत्तर से भामाशाह प्रोजेक्ट की माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा शुरुआत

की भौतिक सामग्री का वितरण अपने आप में एक प्रेरक उदाहरण है। विभिन्न विद्यालयों में फर्नीचर वितरण कार्यक्रमों में माननीय मंत्री महोदय के उद्बोधन में संदेश था कि राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षण, निःशुल्क पाठ्य सामग्री, मिड डे मिल कार्यक्रम, माध्यमिक स्तर पर साइकिल वितरण, लेपटॉप वितरण, गार्गी पुरस्कार जैसी प्रोत्साहन योजनाएं तथा योग्यतम शिक्षक होने के बावजूद मात्र भौतिक साधन सुविधाओं की कमी से विद्यार्थी निजी विद्यालयों की तरफ आकर्षित होते हैं तो सरकारी विद्यालय में फर्नीचर व पेयजल की कमी नहीं रहने दी जाएगी। उन्होंने राजस्थान के सभी विधायकों, सांसदों को पत्र लिखकर अपने स्वयं के क्षेत्र के विद्यालयों में बुनियादी सुविधाएं भामाशाहों के साधन से उपलब्ध कराने हेतु प्रेरित करने का आह्वान किया।

राज्य सरकार प्रदेश के सरकारी विद्यालयों का कायाकल्प करने में जुटी है। स्कूलों में फर्नीचर, पेयजल, शौचालय, विद्युत आदि सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ ही

पर्याप्त स्टाफ की तैनाती एवं शिक्षा में गुणात्मक सुधार के प्रयास गम्भीरतापूर्वक किये जा रहे हैं। आजादी के बाद एक सत्र में एक साथ असंख्य विद्यालय क्रमोन्नयन के बाद ही शिक्षकों की पदोन्नति, पदस्थापन की प्रक्रिया, शैक्षिक विकास का उदाहरण है। अब हमारी जिम्मेदारी है कि प्रदेश के सरकारी विद्यालयों का शैक्षणिक स्तर उन्नत हो। विद्यालयों का वातावरण स्वच्छ व सुन्दर बनाकर पढ़ाई के स्तर को सुधारें।

माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने अजमेर शहर में राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय फाइसागर, रा.उ.मा.वि. वैशाली नगर, रा.उ.मा.वि. तोपदड़ा, रा.बा.उ.मा.वि. कृष्णगंज, रा.बा.उ.मा.वि. सावित्री, रा.मोई.उ.मा.वि., रा.उ.मा.वि. पुलिस लाइन तथा राजकीय मॉडल बा.उ.मा.वि. अजमेर में फर्नीचर वितरण कार्यक्रम में सहभागिता देकर नवप्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया। उन्होंने क्षेत्र के अभिभावकों, शिक्षकों तथा भामाशाह का आह्वान किया कि वे सभी अपने संयुक्त प्रयासों से विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा से जोड़ें तथा विद्यालयों को समृद्ध करें।

रा.मा.वि. लोहागल में छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु जिंक लिमिटेड कम्पनी ने बास्केटबाल कोर्ट बनवाने का प्रशंसनीय कदम उठाया है। जिंक लिमिटेड कम्पनी कायड की ओर से इस विद्यालय को 10 लाख रुपये की राशि का चैक इस हेतु माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के माध्यम से प्रदान करवाया गया।

इस कार्यक्रमों के माध्यम से माननीय शिक्षा मंत्री महोदय ने विद्यालय विकास एवं प्रबन्धन समिति के सदस्यों को भी विद्यालय में सक्रिय भागीदारी निभाने हेतु प्रेरित किया। कार्यक्रमों में स्थानीय जन प्रतिनिधियों, अभिभावकों व समाजसेवी व्यक्तियों को उचित मंच प्रदान किया गया। आशा है माननीय शिक्षा मंत्री महोदय का यह प्रयास पूरे राजस्थान में आदर्श के रूप में प्रस्तुत होगा। राजकीय

विद्यालयों में वितरित सामग्री का विवरण इस प्रकार है–

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	बैग संख्या	राशि	बैग की दरी	राशि	पानी की दरी	राशि	कैनवास	राशि
1.	राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, [illegible]	200	147000.00	2	4400.00	0	0.00		
2.	[illegible]	225	165375.00	2	4400.00	0	0.00		
3.	राजकीय [illegible]	100	73500.00	1	2200.00	0	0.00		
4.	राजकीय [illegible]	185	135975.00	1	2200.00	0	0.00		
5.	राजकीय [illegible]	60	44100.00	0	0.00	0	0.00		
6.	राजकीय [illegible]	55	40425.00	0	0.00	0	0.00		
7.	राजकीय [illegible]	55	40425.00	1	2200.00	0	0.00		
8.	राजकीय [illegible]	100	73500.00	0	0.00	0	0.00		
9.	राजकीय [illegible]	100	73500.00	2	4400.00	0	0.00		
10.	राजकीय [illegible]	400	294000.00	3	6600.00	2	40042.50		
11.	राजकीय [illegible]	60	44100.00	1	2200.00	0	0.00		
12.	राजकीय [illegible]	55	40425.00	1	2200.00	0	0.00		
13.	राजकीय [illegible]	56	41160.00	0	0.00	0	0.00		
14.	राजकीय [illegible]	50	36750.00	1	2200.00	0	0.00		
15.	राजकीय [illegible]	300	220500.00	1	2200.00	0	0.00		
16.	राजकीय [illegible]	100	73500.00	0	0.00	0	0.00		
17.	राजकीय [illegible]	200	147000.00	0	0.00	0	0.00		
18.	राजकीय [illegible]	160	117600.00	0	0.00	0	0.00		
19.	राजकीय [illegible]	300	220500.00	1	2200.00	1	40042.50		
20.	राजकीय [illegible]	100	73500.00	1	2200.00	0	0.00		
21.	राजकीय [illegible]	50	36750.00	0	0.00	0	0.00		
22.	राजकीय [illegible]	150	99750.00	2	4400.00	0	0.00		
23.	राजकीय [illegible]	110	80850.00	0	0.00	0	0.00		
24.	राजकीय [illegible]	110	80850.00	0	0.00	0	0.00		
25.	[illegible]	50	36750.00	1	2200.00	1	40042.50		
26.	राजकीय [illegible]	150	110250.00	0	0.00	0	0.00		
	योग	3464	2542032.00	21	46200.00	3	142007.50		

27. राजकीय [illegible] में 10.00 लाख रुपये का गैस चालित [illegible] दिया गया

क्र. सं.	विद्यालय का नाम	बैग संख्या	राशि	बैग की दरी	राशि	पानी की दरी	राशि	कैनवास	राशि
1.	राजकीय [illegible], [illegible], अजमेर	50	36750.00	5	3400.00	2	4400.00	25	18375.00
2.	राजकीय [illegible], अजमेर	30	24500.00	0	0.00	1	2200.00	10	7350.00
3.	राजकीय [illegible] अजमेर	35	30625.00	30	9000.00	1	2200.00	10	7350.00
4.	[illegible] राजकीय [illegible] अजमेर	50	36750.00	0	0.00	1	2200.00	10	7350.00
5.	राजकीय [illegible], अजमेर	50	36750.00	20	6000.00	1	2200.00	20	14700.00
6.	राजकीय [illegible] अजमेर	5	4050.00	10	4000.00	1	2200.00	10	7350.00
7.	राजकीय [illegible], अजमेर	15	11250.00	0	0.00	1	2200.00	10	7350.00
8.	[illegible] अजमेर	50	36750.00	20	6000.00	0	0.00	10	7350.00
9.	राजकीय [illegible], अजमेर	5	4050.00	5	2400.00	0	0.00	10	7350.00
10.	राजकीय [illegible] अजमेर	0	0.00	10	4000.00	1	2200.00	0	0.00
11.	राजकीय [illegible], [illegible], अजमेर	50	36750.00	4	1800.00	1	2200.00	25	18375.00
12.	[illegible] अजमेर	0	0.00	10	4000.00	1	2200.00	10	7350.00
13.	राजकीय [illegible] अजमेर	5	4050.00	0	0.00	1	2200.00	25	18375.00
14.	राजकीय [illegible], अजमेर	5	4050.00	0	0.00	0	0.00	5	3675.00
15.	[illegible]	30	24500.00	0	0.00	0	0.00	0	0.00
16.	[illegible]	50	36750.00	0	0.00	0	0.00	0	0.00
17.	[illegible]	5	4050.00	0	0.00	0	0.00	0	0.00
18.	[illegible]	4	4540.00	0	0.00	0	0.00	0	0.00
19.	[illegible]	50	36750.00	0	0.00	0	0.00	0	0.00
20.	राजकीय [illegible]	30	24500.00	0	0.00	0	0.00	0	0.00
21.	[illegible], अजमेर	50	36750.00	0	0.00	2	4400.00	25	18375.00
22.	राजकीय [illegible] अजमेर	50	36750.00	30	6000.00	2	4400.00	50	36750.00
23.	राजकीय [illegible], अजमेर	50	36750.00	15	3000.00	2	4400.00	50	36750.00
24.	[illegible], अजमेर	50	36750.00	0	0.00	2	4400.00	100	73500.00
25.	राजकीय [illegible] अजमेर	5	4050.00	30	14400.00	0	0.00	10	7350.00
26.	राजकीय [illegible], अजमेर	5	4050.00	15	7200.00	0	0.00	10	7350.00
27.	राजकीय [illegible] अजमेर	5	4050.00	10	4000.00	0	0.00	10	7350.00
28.	[illegible] राजकीय [illegible], अजमेर	0	0.00	0	0.00	0	0.00	90	66150.00
	योग	484	355848.00	204	81200.00	24	44000.00	386	283500.00

–शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
कार्यालय उपनिदेशक (मा.), शिक्षा
अजमेर मण्डल, अजमेर

इस माह का गीत

वह जीवन भी क्या...

वह जीवन भी क्या जीवन है, जो काम देश के आ न सका।
वह चन्दन भी क्या चन्दन है, जो अपना वन महका न सका।

जिसकी धरती पर जनम लिया, जिसकी समीर से सांस चली।
जिसके अमृत से प्यास बुझी, जिसकी माटी में देह पली।
वह क्या सपूत जो जनमभूमि के प्रति कर्तव्य निभा न सका।।
वह जीवन भी...

मुनिवर दधीचि हो गए अमर, जिनकी हड्डियों से वज्र बना।
संकट समाज का दूर किया, देकर पावन शरीर अपना।
वह मानव क्या समाज के हित, जो प्राण-प्रसून चढ़ा न सका।
वह जीवन भी...

ऐसे महान चाणक्य जिन्होंने चन्द्रगुप्त का सृजन किया।
अत्याचारी राजा को रौंदा, यूनानी शत्रु भगा दिया।
वह नाविक क्या जो तूफानों में नौका पार लगा न सका।।
वह जीवन भी...

राणा का जीवन, जीवन था, जिसने महलों को छोड़ दिया।
रोटियां घास की रखा वन में, आजादी का संघर्ष किया।
वह देशप्रेम क्या देशप्रेम जो कंटक पथ अपना न सका।।
वह जीवन भी...

राणा के पास नहीं पैसा, पैसे के बिना नहीं सेना।
तब भामाशाह बढ़ा आगे, लेकर अपना पैसा-गहना।
वह धन क्या, अवसर आने पर जो, त्याग-भाव दिखला न सका।।
वह जीवन भी...

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल

अनुभव ज्ञान के खिलते फूल

❒ दयाराम महरिया

शिक्षा सर्वसुलभता एवं सहजता के लिए राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल की स्थापना 21 मार्च, सन् 2005 ई. में की गई। राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल (आर.एस.ओ.एस.), स्कूल से बाहर के सीखने के संसाधनों को औपचारिक मान्यता देने की युक्ति है। कक्षा 10वीं व 12वी की परीक्षा हेतु न्यूनतम क्रमश: 14 व 15 वर्ष का कोई भी व्यक्ति पंजीयन करवा सकता है। आयु की अधिकतम सीमा नहीं है।

पंजीयन : आवेदन-पत्र वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है। आवेदन-पत्र की मुद्रित या फोटो प्रति भी मान्य है। पंजीयन राज्य भर के 442 सन्दर्भ केन्द्रों पर करवाया जा सकता है।

विषयों का चयन : कक्षा 10वीं के 15 व 12वीं के 20 विषयों में से किन्हीं पाँच विषयों को चयन करने की छूट होती है। आर.एस.ओ.एस. के द्वारा परीक्षा में बैठने के लिए गणित, अंग्रेजी व विज्ञान विषय की अनिवार्यता नहीं है। **माध्यमिक स्तर ग्रुप 'अ'** हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत, पंजाबी ग्रुप 'ब' गणित*, विज्ञान*, सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, व्यवसाय अध्ययन, गृह विज्ञान*, मनोविज्ञान, भारतीय संस्कृति तथा विरासत, चित्रकला*, डेटा एंट्री कार्य*, उच्च माध्यमिक स्तर ग्रुप 'अ' हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू **ग्रुप 'ब'** गणित, भौतिकी*, रसायन विज्ञान*, जीव विज्ञान*, इतिहास, भूगोल*, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, व्यवसाय अध्ययन, लेखाशास्त्र, गृह विज्ञान*, मनोविज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान*, समाज शास्त्र, चित्रकला*, पर्यावरण विज्ञान* एवं डेटा एंट्री कार्य*

टिप्पणी : 1. स्टार (*) द्वारा दर्शाये गये विषयों में सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक दोनों परीक्षाएं हैं। 2. ग्रुप 'अ' में सभी भाषाएं सम्मिलित हैं व ग्रुप 'ब' में चयनित विषयों का चयन किया जा सकता है। 3. एक भाषा अनिवार्य व अधिकतम दो भाषाओं का चयन किया जा सकता है।

टी.ओ.सी. : अन्य मान्यता प्राप्त बोर्डो से अनुत्तीर्ण होने पर अधिकतम उत्तीर्ण दो विषयों एवं राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के अभ्यर्थियों को अधिकतम चार विषयों में क्रेडिटों का स्थानान्तरण (टी.ओ.सी.) का लाभ मिलता है।

आंशिक प्रवेश एवं दोहरा नामांकन : इस योजना के अन्तर्गत कोई भी ऐसा अभ्यर्थी जो पूर्व में किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड/विश्वविद्यालय से माध्यमिक/उच्च माध्यमिक या कोई अन्य समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुका है, वह शैक्षिक योग्यता बढ़ाने के लिए अन्य विषयों में अपनी पसंद के अनुसार एक या एक से अधिक विषयों (अधिकतम चार विषय) में पंजीकरण करवा सकता है। ऐसे अभ्यर्थी को पास होने पर केवल अंकतालिका ही दी जाती है उन्हें प्रमाण पत्र नहीं दिया जाता है।

व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम : अध्ययन में आने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु विषय विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में वर्ष में एक बार 15 दिवसीय (25 दिसम्बर से 8 जनवरी तक) व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रमों का आयोजन सभी सन्दर्भ केन्द्रों पर किया जाता है।

सार्वजनिक परीक्षाएँ : एक वर्ष में दो बार परीक्षाएं अक्टूबर-नवम्बर व मार्च-अप्रेल में होती है। एक बार पंजीयन करवाने के पश्चात् उत्तीर्ण होने के लिए अभ्यर्थी को 5 वर्षों में 9 अवसर मिलते हैं। उत्तीर्ण विषय छूटते जाते हैं।

पंजीकरण हेतु प्रवेश की तिथियाँ : आवेदकं के पंजीकरण हेतु प्रवेश की तिथियाँ सभी सन्दर्भ केन्द्रों पर निम्नलिखित हैं-

- 01 जुलाई, 2015 से 17 अगस्त, 2015 तक (बिना विलम्ब शुल्क)
- 18 अगस्त, 2015 से 15 सितम्बर, 2015 तक (250 रु. विलम्ब शुल्क सहित)
- 16 सितम्बर, 2015 से 30 सितम्बर, 2015 तक (350 रु. विलम्ब शुल्क सहित)
- 01 अक्टूबर, 2015 से 31 अक्टूबर, 2015 तक (500 रु. विलम्ब शुल्क सहित)

नोट : (1) 31 अक्टूबर, 2015 के बाद किसी भी अभ्यर्थी का सत्र 2015-16 के लिए आवेदन पत्र स्वीकार नहीं किया जायेगा। (2) सार्वजनिक अवकाश, रविवार होने पर अगला कार्य दिवस स्वत: ही अन्तिम तिथि के रूप में मान्य होगा।

मान्यता : राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल द्वारा जारी 10वीं व 12वीं के प्रमाण-पत्रों को केन्द्र व राज्य सरकार के द्वारा सी.बी.एस.ई., माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान या अन्य बोर्डों के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। रेलवे बोर्ड व सेना में भी मान्यता प्राप्त है।

आई.टी.आई. कोर्स : राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प. 3 (2) शिक्षा-6/2015 जयपुर दिनांक 04.05.2015 के अनुसार नेशनल कौंसिल फॉर वोकेशनल ट्रेनिंग (एनसीवीटी) से मान्यता प्राप्त आई.टी.आई. परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् भाषा विषय में (हिन्दी, अंग्रेजी) राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल से उत्तीर्ण कर लेने पर उक्त आदेश की अनुपालना में आर.एस.ओ.एस. की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण के समकक्ष होगा। विस्तृत विवरण वेबसाइट पर देखें।

वेबसाइट : राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी, पंजीयन आवेदन-पत्र एवं विवरणिका आर.एस.ओ.एस. की website : http://www. rsos. rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

विशेषताएं : पाठ्यक्रम की सरलता व शिक्षा की सहजता के साथ-साथ परीक्षा का लचीलापन स्टेट ओपन स्कूल की विशेषता है। तनावमुक्त होकर अभ्यर्थी अपनी सुविधा अनुसार परीक्षा उत्तीर्ण कर सकता है। ओपन स्कूल से जुड़कर अभ्यर्थी अपने ज्ञान व अनुभव का सुदृढ़ीकरण व संवर्धन करता है। उसके ज्ञान का प्रमाणीकरण होने पर जहाँ आत्मसन्तोष मिलता है वहीं आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है।

उपलब्धियाँ : राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल में प्रारम्भ से अब तक (सत्र 2014-15) 4,90,285 अभ्यर्थी इस योजना से जुड़ चुके हैं। गत सत्र 2014-15 में माध्यमिक 49,205 एवं उच्च माध्यमिक 27,452 इस प्रकार कुल 76,657 अभ्यर्थी पंजीकृत हुए।

-सचिव
राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर
मो. 9950999735

सकारात्मक चिन्तन

लक्ष्य बनाएं बड़ा

□ डॉ. कुंजलता सारस्वत

यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि व्यक्ति की जैसी मानसिकता होती है उसका व्यक्तित्व भी वैसा ही निर्मित और पल्लवित होता है। सुदृढ़ मानसिकता का अर्थ है–सुदृढ़ व्यक्तित्व। स्वस्थ्य व सशक्त मानसिकता से व्यक्ति के भीतर तात्कालिक निर्णय लेने की प्रतिभा, क्षमता का विकास सम्भव है। उसकी विचार शक्ति प्रबल होती है, आत्म विश्वास जाग्रत होता है। वह इन रहस्य सूत्रों के माध्यम से बड़े से बड़ा लक्ष्य निर्धारित करता है। दृढ़ इच्छा शक्ति व पूर्ण लगन के साथ योजनाबद्ध तरीके से कर्म करने पर उसे उपलब्धियाँ हासिल होती हैं। वे उपलब्धियां ही उसे इतिहास पुरुष बनाती हैं।

जब तक किसी व्यक्ति को यह ज्ञात नहीं हो कि उसे कहां जाना है? तब तक वह उचित दिशा में आगे कैसे बढ़ सकता है? अपने निर्धारित लक्ष्य के अनुसार ही व्यक्ति कार्य आरम्भ करता है, श्रम करता है। उदाहरणार्थ– जिसका लक्ष्य क्रिकेट का सफल खिलाड़ी बनना है, उसके लिए अधिक समय खेलना आवश्यक है। जबकि डॉक्टर, इंजीनियर बनने की इच्छा रखने विद्यार्थियों को अधिक समय पढ़ने में बिताना जरूरी होगा। अपने जीवन के लक्ष्य को सामने रखकर व्यक्ति दैनिक, साप्ताहिक, मासिक कार्ययोजना तैयार कर लक्ष्य की छोटी–छोटी मंजिले पार करता है।

सर्वप्रथम आवश्यकता होती है– एक लक्ष्य निर्धारण की। क्योंकि यदि आप दो खरगोशों के पीछे एक साथ भागते हैं तो आप किसी को भी नहीं पकड़ सकते। अतः आप एक लक्ष्य निर्धारित करें किन्तु वह लक्ष्य बड़ा होना चाहिए, महान होना चाहिए। लक्ष्य निर्धारण के संदर्भ में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम का भी यही कहना है कि

''छोटा लक्ष्य बनाना पाप है,
छोटे सपने देखना अक्षम्य है।''

व्यक्ति बड़ा लक्ष्य लेकर चलता है तो उसे तैयारी भी बड़ी ही करनी पड़ती है। लक्ष्य प्राप्त होने से पहले ही व्यक्ति का कद बढ़ना

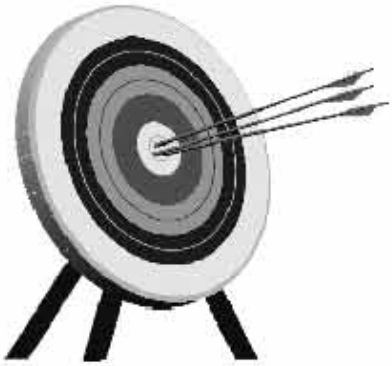

आरम्भ हो जाता है, उसमें आत्मविश्वास बढ़ने लगता है।

''कोई लक्ष्य ऐसा नहीं है जो
व्यक्ति की क्षमताओं से बड़ा हो''

इसी दृढ़ विश्वास के साथ एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे डॉ. अब्दुल कलाम ने महान लक्ष्य निर्धारित किया। कठोर परिश्रम, दृढ़ निष्ठा, सकारात्मक दृष्टिकोण, देशभक्ति की भावना के साथ कर्मशील रहे, परिणाम स्वरूप पद्मभूषण, पद्मविभूषण, भारत विज्ञान के सम्मान प्राप्त किये। वैज्ञानिक जगत, शैक्षिक जगत के आदर्श नायक बने। भारत के राष्ट्रपति पद पर आसीन होकर हमारे प्रेरणा स्रोत बने।

यह सत्य है कि हजारों मील का सफर पहले कदम से प्रारम्भ होता है। अतः लक्ष्य प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि–

हर दिन का स्वागत उत्साहपूर्वक करें,
हर दिन अपनी मंजिल की ओर एक कदम बढ़ायें

यदि प्रयास निरन्तर जारी रखेंगे तो कठिन से कठिन, बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने में अवश्य सफल हो जाओगे। अनियमित प्रयास लक्ष्य प्राप्ति में बाधक होते हैं। नियमितता तथा कर्म की निरन्तरता के बारे में कहा गया है–

हो के मायूस ना यूं शाम की तरह ढलते रहिए,
जिंदगी तो एक सुबह है सूरज की तरह रहिए,
ठहरोगे अगर राह में तो पिछड़ जाओगे
धीरे–धीरे ही सही मगर राह पर निरन्तर चलते रहिए

लगातार प्रयास से एक छोटी सी आरी ठोस लोहे के दो टुकड़े कर देती है। कमजोर रस्सी सख्त पत्थर को घिस देती है फिर हम तो संसार की महत्वपूर्ण कृति–मानव हैं।''

अक्सर यह देखा जाता है कि व्यक्ति स्वयं के कार्यों को आखिरी वक्त तक टालते रहते हैं और पूर्णाहुति का समय नजदीक आने पर उस कार्य को शीघ्रातिशीघ्र, भागदौड़ में पूरा करके तमगा प्राप्त करने की प्रबल इच्छा रखते हैं। अधिकतर विद्यार्थी भी प्रायः इसी मानसिकता से ग्रसित रहते हैं। अध्ययन कार्य के प्रति अनियमित रहते हैं। परीक्षा अवधि निकट आने पर दिन रात एक करके वर्ष भर के कार्य को चन्द दिनों में पूरा करके श्रेष्ठ अंक, सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने की अभिलाषा रखते हैं। क्या यह परिणाम सम्भव है? कभी नहीं, जीवन में अनियमितता कभी भी हमें श्रेष्ठ नहीं बना सकती। ऐसी स्थिति में व्यक्ति की क्षमताओं का पूर्ण उपयोग असम्भव है। अतः निर्धारित लक्ष्य को टुकड़ों में विभाजित कर, योजनाबद्ध तरीके से निश्चित समय अवधि में पूर्ण करना नितान्त आवश्यक होता है।

'आराम हराम है'' वर्तमान आराम में क्षणिक सुख है। इस सुख का परित्याग कर अपने सपने को साकार करने के जुनून को प्राथमिकता प्रदान करो। अस्थायी सुख,सुविधा की कल्पना करना भी महापाप है। कहते हैं–

उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहां जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है।।

पंक्तियों को सार्थक करना है अतः उठो, जागो, स्वयं को पहचानो, महान लक्ष्य का निर्धारण करो। लक्ष्य प्राप्ति की प्रबल आकांक्षा, आत्मविश्वास जाग्रत करो, मेहनत करो, परिश्रम करो, संघर्ष करो, कार्य के प्रति निष्ठा व समर्पण के भाव रखो, चिन्तन मनन सकारात्मक रखो, मंजिल अवश्य मिलेगी। तत्पश्चात संसार के समस्त सुख, ऐश्वर्य आपकी मुट्ठी में होंगे।

–व्याख्याता, अर्थशास्त्र
राज.बा.उ.मा.विद्यालय, किशनगढ़ (अजमेर)

आदेश-परिपत्र : अगस्त 2015

1. विमुक्त, घुमन्तु, अर्द्धघुमन्तु (DNT) केन्द्र प्रवर्तित योजना के अन्तर्गत छात्र/छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति वर्ष 2015-16 के प्रस्ताव भिजवाने बाबत। ● 2. अधिसूचना का राजस्थान राजपत्र में प्रकाशन कराये जाने बाबत। ● 3. इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार वर्ष 2015 के प्रस्ताव के संबंध में। ● 4. स्वैच्छिक क्षेत्र विकास केन्द्र के संबंध में । ● 5. मान्यता समिति तत्काल प्रभाव से भंग। ● 6. स्वैच्छिक संगठन प्रमाणन । ● 7. गैर-शैक्षणिक कार्यों में शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति नहीं करने बाबत। ● 8. 2014-15 से कक्षा 1 से 8 में शिक्षण कार्य करवा रहे शिक्षकों एवं संस्था प्रधानों से उनकी क्षमता परिवर्द्धन एवं शिक्षण कार्य की गुणवत्ता में सुधार हेतु शिक्षक मूल्यांकन प्रपत्र भरवाये जाने के संबंध में। ● 9. शिक्षक मूल्यांकन कार्यक्रम के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में। ● 10. सत्र 2015-16 में आयोज्य 33वीं सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता का पंचांग आवश्यक निर्देशों सहित अनुपालनार्थ प्रसारित। ● 11. सत्र 2015-16 की 60वीं जिला, राज्य स्तरीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक (17 व19 वर्ष आयु वर्ग) विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु प्रतियोगिता पंचांग आवश्यक निर्देशों सहित अनुपालनार्थ ● 12. शिक्षक दिवस 5 सितम्बर, 2015 के अवसर पर झण्डियों का वितरण कर धन संग्रह बाबत।

1. विमुक्त, घुमन्तु, अर्द्धघुमन्तु (DNT) केन्द्र प्रवर्तित योजना के अन्तर्गत छात्र/छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति वर्ष 2015-16 के प्रस्ताव भिजवाने बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/छा.प्रो.प्र./द/DNT(CSS)/पूमै/विज्ञप्ति/2015-16 दिनांक : 06-07-15 ● 1. निदेशक संस्कृत शिक्षा विभाग राजस्थान, जयपुर 2. निदेशक प्रारंभिक शिक्षा विभाग राजस्थान बीकानेर 3. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय) ● विषय : विमुक्त, घुमन्तु, अर्द्धघुमन्तु (DNT) केन्द्र प्रवर्तित योजना के अन्तर्गत छात्र/छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति वर्ष 2015-16 के प्रस्ताव भिजवाने बाबत।

केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत डी.एन.टी. समुदाय (एस.सी., एस.टी. एवं ओ.बी.सी. के अन्तर्गत नहीं आते हो) के छात्र/छात्राओं को देय पूर्व मैट्रिक छात्रवृति के संबंध में शासन के पत्रांक प. 19(1) शिक्षा-6/2012 दिनांक 23.02.2015 के अनुसार नवीन निर्देश एवं पात्रता मानदण्ड तैयार किये गये थे। इन आदेशों की पालना में आप नीचे अंकित निर्देशों, शर्तों एवं पात्रता मानदण्डों का गहनता से अध्ययन कर अपने जिले के पात्र छात्र/छात्राओं के प्रस्ताव तैयार करने की कार्यवाही अविलम्ब प्रारम्भ करें। छात्र/छात्राओं से आवेदन पत्र प्रवेश के समय ही समस्त औपचारिकताएँ पूर्ण करते हुए प्राप्त किया जाना सुनिश्चित करें। अपने जिले के पात्र छात्र/छात्राओं के प्रस्ताव निम्नांकित चरणबद्ध कार्यक्रम के अनुसार तैयार कर जि.शि.अ. (माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय) द्वारा निदेशालय को अलग-अलग भिजवाना सुनिश्चित करें।

चरणबद्ध कार्यक्रम :

क्र.सं.	विवरण	निर्धारित तिथि
1.	छात्र/छात्रा द्वारा संस्था प्रधान को आवेदन प्रस्तुत करना	05.08.2015
2.	संस्था प्रधान द्वारा जि.शि.अ. कार्यालय को प्रस्ताव प्रस्तुत करना	10.08.2015
3.	समेकित प्रस्ताव निदेशालय माध्यमिक को प्रस्तुत करना	25.08.2015

अ. आवेदन :

डी.एन.टी. समुदाय के छात्र/छात्राओं हेतु नवीन आवेदन पत्र का प्रारूप संलग्न किया जा रहा है। यह नवीन आवेदन पत्र ही मान्य होगा एवं उक्त आवेदन पत्र का प्रारूप विभागीय वेबसाइट www.rajshiksha.gov.in पर भी उपलब्ध है। उन्हें वेबसाइट से डाउन लोड कर पर्याप्त मात्रा में फोटो कॉपी करवाकर उपयोग में लिया जा सकता है।

ब. पात्रता/शर्तें :

1. राज्य सरकार द्वारा मान्य डी.एन.टी. समुदाय की जाति की सूची में आवेदक छात्र/छात्रा की जाति का होना अनिवार्य है।
2. इस योजना में निम्नानुसार उल्लेखित जातियों के विद्यार्थी ही पात्र होंगे :-

1.	विमुक्त जातियां	बावरी, कंजर, सांसी, बागरी, बावरिया, मोगिया, नट, नाईक, मुल्तानिस, भाट
2.	घुमन्तु जातियां	बालदीयाज, बंजारा, परधिस, दोमाबरिस, गाडिया-लोहार, इरानिस, जोगी कालबेरिया, जोगी कनफटा, खुरपलट्स, कुलफलट्स, सिकलीगर, घीसादिस।
3.	अर्द्ध घुमन्तु जातियां	सारंगीवाला-भोपा, रैबारी, राठ, मंगलियास, भाया, कन्नीस, जंगलस, जालूकूस, झानस, सिन्दूलस।
4.	जोगी (घुमन्तु जातियां में शामिल जातियों को छोड़कर)	गिरीनाथ, अजयपाल, अगमनाथ, नामाथ, जालंधर, मसानी
5.	रामसस्वामी	
6.	भारादिजाधव	

3. छात्र/छात्रा केन्द्र सरकार/राज्य सरकार के अथवा शिक्षा विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त विद्यालयों में कक्षा 1 से 10 तक में नियमित छात्र के रूप में अध्ययनरत रहे हो।
4. छात्र/छात्राओं के माता-पिता जीवित हो या उनके न होने पर संरक्षक की वार्षिक आय 2.00 लाख रुपये की सीमा तक हो तथा आय प्रमाण पत्र राजस्व (ग्रुप-1) विभाग के पत्रांक प. 13(34)राज/ग्रुप-।/2012 दिनांक 09.08.2012 के अनुसार आय उद्घोषणा पत्र में प्रस्तुत करना होगा।

5. छात्र/छात्रा जिसे केन्द्रीय, राजकीय/सार्वजनिक स्रोत से अध्ययनरत हेतु किसी भी प्रकार की छात्रवृत्ति या भत्ता नहीं मिलता हो।
6. कक्षा 1 से 10 तक प्रत्येक वर्ष में C ग्रेड से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
7. यदि कोई छात्र वार्षिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो उसकी छात्रवृत्ति रोक दी जावेगी। किन्तु यदि वह उसी कक्षा को आगामी सत्र में उत्तीर्ण कर लेता है तो छात्रवृत्ति पुनः चालू कर दी जावेगी। इस हेतु पुनः आवेदन करना होगा।
8. छात्र-छात्रा को भुगतान डीबीटी मोड के तहत किया जाएगा अतः छात्र-छात्रा के बैंक खाता होना एवं उसका आधार नं. से लिंक होना अनिवार्य है, अतः आवेदन के समय इसका ध्यान रखा जावें।
9. छात्रवृत्ति के विस्तृत प्रचार-प्रसार की व्यवस्था व्यापक स्तर पर की जाना सुनिश्चित की जावे ताकि अधिक से अधिक पात्र छात्र/छात्राओं को योजना का लाभ मिल सके।
10. छात्रवृति दरें निम्नानुसार है :

क्र.सं.	वर्ग	कक्षा	दरें (10 माह हेतु)
1.	छात्र/छात्रा	1 से 8	1000/- प्र. माह
2.	छात्र/छात्रा	9 से 10	1500/- प्र. माह

स. संलग्न दस्तावेज :-

आवेदन पत्र के साथ लगने वाले समस्त दस्तावेजों की सत्यापित फोटो प्रतियां ही मान्य होगी।

1. आय प्रमाण पत्र बिन्दु संख्या B-3 के अनुसार (मूल)
2. परीक्षा की अंक तालिका की प्रमाणित छायाप्रति।
3. यदि आवेदक निशक्त/विधवा/तलाकशुदा महिला के पुत्र-पुत्री/विधवा महिला के पुत्र/पुत्री श्रेणी से संबंधित है तो संबंधित प्रमाण पत्र की प्रमाणित छायाप्रति।

शिक्षण संस्थाओं से प्राप्त आवेदन-पत्रों का लेखा-जोखा संलग्न प्रपत्र **'ब'** में संधारित कर कार्यालय रिकार्ड में सुरक्षित रखा जाये। रजिस्टर में प्रविष्टि का क्रमांक एवं आवेदन पत्र कार्यालय में प्राप्त होने का दिनांक आवश्यक रूप से अंकित किया जाए। आवेदन पत्र की गहनता से जाँच की जाए एवं जांच से सन्तुष्ट होने के उपरान्त ही उपर्युक्त मानदण्ड/शर्तें एवं प्राथमिकता के आधार पर छात्रवृत्ति स्वीकृति की कार्यवाही की जाए तथा मांग राशि के प्रस्ताव संलग्न निर्धारित प्रपत्र **'अ'** में मय प्रमाण-पत्र के हार्ड कॉपी सहित वाहक स्तर पर दिनांक 25.08.2015 तक आवश्यक रूप से भिजवाना सुनिश्चित करें। यदि आप द्वारा निर्धारित दिनांक तक प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किये गये तो आपकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी तय करते हुए अनुशासनात्मक कार्यवाही के प्रस्ताव राज्य सरकार को प्रेषित कर दिये जाएंगे।

नोट :- राज्य सरकार के आदेश क्रमांक प. 19(5) शिक्षा-6/02 जयपुर दिनांक 24.11.2009 के अनुसार विद्यालय में एक बार जाति प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने के उपरान्त उसी विद्यालय में पुनः जाति प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने के लिए बाध्य नहीं किया जावे तथा राज्य सरकार के आदेश क्रमांक पं. 3 (29) शिक्षा-6/2014 दिनांक 18.12.14 के अनुसार 'रमसा' द्वारा संचालित मॉडल स्कूलों के विद्यार्थियों को राजस्थान के राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के समान लाभ दिये जावें। ● संलग्न : प्रपत्र 'अ', 'ब' व आवेदन पत्र ● (सुवालाल) निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

केन्द्र प्रवर्तित योजनान्तर्गत डीएनटी समुदाय के छात्र/छात्राओं की पूर्व मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना का आवेदन पत्र

सत्र 2015-2016

राजपत्रित अधिकारी द्वारा प्रमाणित फोटो

1. छात्र/छात्रा का नाम .....
2. जन्मतिथि (अंकों में) .....
   (शब्दों में).....
3. पिता का नाम .....
4. माता का नाम .....
5. निवासी (1) राजस्थान
   (2) जिले का नाम .....
6. डीएनटी समुदाय में जाति का नाम.....
7. माता-पिता/संरक्षक की वार्षिक आय (गत सत्र की वार्षिक आय भरें).....
8. माता-पिता/संरक्षक की श्रेणी .....
9. माता-पिता/संरक्षक आयकरदाता : है/नहीं
10. गत उत्तीर्ण की गई कक्षा .....
11. गत उत्तीर्ण कक्षा के प्राप्तांक

कुल पूर्णांक	कुल प्राप्तांक	प्राप्तांक प्रतिशत या ग्रेड

वर्तमान कक्षा में अनुत्तीर्ण होने के फलस्वरूप दूसरी बार अध्ययन कर रहे छात्र छात्रवृत्ति पाने के लिए अपात्र होंगे।

12. गत कक्षा में अध्ययनरत रहे विद्यालय का नाम एवं पूरा पता .....
    .....
13. छात्र-छात्रा के बैंक खाते का विवरण-
    1. बैंक का नाम .....
    2. शाखा का नाम .....
    3. खाता संख्या .....
    4. बैंक का एमआईसीआर कोड .....
    5. बैंक का आईएफएससी कोड .....
    6. आधार नम्बर .....
14. स्थायी पता :
    छात्र/छात्रा का नाम .....
    गांव ..... पोस्ट .....
    वाया ..... जिला .....
    फोन नं. मय STD कोड.....
    मोबाइल नं. .....

माता-पिता/संरक्षक और छात्र/छात्रा द्वारा घोषणा

मैं घोषणा करता हूँ कि :-

योजना संबंधी सभी नियमों/निर्देशों का भली भांति अध्ययन कर लिया है, जिनका मैं पूर्णतया पालना करुंगा/करुंगी। मेरे द्वारा प्रदत्त तथ्यों (संलग्न दस्तावेजों) में कोई भी गलत पाया जाता है तो मैं स्वीकृत समस्त

छात्रवृत्ति विभाग को वापस जमा कराने का वचन देता/देती हूँ। मैं अन्य किसी प्रकार की छात्रवृत्ति प्राप्त नहीं कर रहा/रही हूँ।

माता/पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर छात्र/छात्रा के हस्ताक्षर

संस्था प्रधान का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि छात्र/छात्रा ..... पुत्र/पुत्री ..... के द्वारा प्रस्तुत आवेदन पत्र की पूर्ण जांच कर ली गई है तथा आवेदन पत्र में प्रस्तुत सभी तथ्यों से संबंधित दस्तावेज प्रमाणित है एवं उनमें अंकित तथ्य सही है। छात्र/छात्रा को सत्र 2015-16 की छात्रवृत्ति स्वीकृति की अनुशंसा की जाती है।

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर

मय मोहर

प्रपत्र-अ

पूर्व मैट्रिक डी.एन.टी. समुदाय छात्रवृत्ति प्रस्ताव निदेशालय को भिजवाने हेतु

क्र. सं.	जिला	कक्षा 1 से 8			चाही गई राशि (कुल छात्र/छात्रा संख्या × 1000/-)	कक्षा 9 से 10			चाही गई राशि (कुल छात्र/छात्रा संख्या × 1500/-)	कुल मांग (कॉलम संख्या 6 एवं 10 का योग)
		छात्र	छात्रा	योग		छात्र	छात्रा	योग		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

प्रमाण-पत्र

''यह प्रमाणित किया जाता है कि योजना में वर्णित शर्तों के अनुसार ही पात्र छात्र/छात्राओं का चयन करते हुए उक्त प्रस्ताव प्रस्तुत किये गये हैं कोई भी पात्र छात्र/छात्रा योजना के लाभ से वंचित नहीं रहा है।''

हस्ताक्षर

जि.शि.अ.

प्रपत्र-ब

पूर्व मैट्रिक डी.एन.टी. समुदाय छात्रवृत्ति की सूचियां कार्यालय रिकार्ड में संधारित रखने हेतु प्रपत्र

क्र. सं.	जिला	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	विद्यालय का नाम व पूर्ण पता	कक्षा	छात्र/छात्रा के घर का पूरा पता	गत कक्षा में प्राप्तांक (प्राप्तांक प्रतिशत में अंकित किये जाये)	माता/पिता/ संरक्षक की वार्षिक आय	डी.एन.टी. समुदाय में जाति	माता/पिता/ संरक्षक की श्रेणी
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

2. अधिसूचना का राजस्थान राजपत्र में प्रकाशन कराये जाने बाबत।

● राजस्थान सरकार ● कार्मिक (क-2)विभाग ● निदेशक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री विभाग, राजस्थान जयपुर। ● क्रमांक-प.2(6)कार्मिक/क-2/84 जयपुर दिनांकः 15.6.2015 ● विषयः-अधिसूचना का राजस्थान राजपत्र में प्रकाशन कराये जाने बाबत।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निदेशानुसार लेख है कि कृपया संलग्न राजस्थान शिक्षा अधीनस्थ सेवा नियम, 1971 जारी करने हेतु अधिसूचना (हिन्दी अनुवाद सहित) दिनांक 15 जून 2015 को राजस्थान के असाधारण राजपत्र विशेषांक भाग 4(ग) एस.आर.दिनांक 15 जून 2015 में प्रकाशित कराये जाने की व्यवस्था हेतु अधीक्षक, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर को प्राधिकृत पत्र जारी करने की व्यवस्था करें।

(ओ.पी. गुप्ता) संयुक्त शासन सचिव

प्रतिलिपिः-

9. अधीक्षक, राजकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर को दिनांक 15.6.2015 के राजस्थान राजपत्र विशेषांक भाग 4(ग) एस.आर.आर. में प्रकाशित कराये जाने हेतु प्रेषित है। कृपया अधिसूचना से संबंधित राजपत्र की तीन प्रतियां इस विभाग को भी उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें।
10. सहायक शासन सचिव, मंत्रिमण्डल सचिवालय को, मंत्रिमण्डल की आज्ञा संख्या 111/2015 दिनांक 30.05.2015 एवं ज्ञापन क्रमांक प. 16(2) शिक्षा-2/2012 दिनांक 28.05.2015 के संदर्भ में।
11. शासन सचिव, माध्यमिक शिक्षा विभाग।
12. संयुक्त शासन सचिव, माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा विभाग।
13. आयुक्त/निदेशक, माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा विभाग, बीकानेर।
14. सहायक शासन सचिव, प्रशासनिक सुधार (ग्रुप-7) विभाग को 9 अति. प्रतियों के साथ।
15. विधि (संहिताकरण)/विधि पुस्तकालय/सहायक विधि प्रारूपकार (प्रारूपण)।
16. महालेखाकार, लेखापरीक्षा, राजस्थान जयपुर।

संयुक्त शासन सचिव

प्रतिलिपि निम्न को भी:-

8. सचिव, राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर को 25 प्रतियों के साथ।
9. सचिव, राजस्थान विधान सभा (अधीनस्थ विधान संबंधी समिति) जयपुर को 20 प्रतियों के साथ।
10. रजिस्ट्रार, राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर/जयपुर/राजस्थान सिविल सेवा अपील अधिकरण, जयपुर।
11. सचिव, राजस्थान लोकायुक्त सचिवालय, जयपुर।
12. सम्पादक, शिविरा/सचिवालय संदेश। लेखाविज्ञ
13. निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, जयपुर को समाचार पत्रों में प्रकाशन हेतु।
14. रजिस्ट्रार, उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली को 5 प्रतियों सहित।

संयुक्त शासन सचिव

प्रतिलिपि निम्न को भी :

8. प्रमुख सचिव, राज्यपाल, राजस्थान, जयपुर।
9. सचिव, मुख्यमंत्री राजस्थान, जयपुर।
10. उप सचिव, मुख्य सचिव, राजस्थान जयपुर।
11. निजी सचिव, शासन सचिव, कार्मिक विभाग।
12. एसीपी, कम्प्यूटर सैल, कार्मिक विभाग को आवश्यक कार्यवाही हेतु।
13. अद्यतन लिपिक को 5 प्रतियों में।
14. गार्ड फाईल।

संयुक्त शासन सचिव

● राजस्थान सरकार कार्मिक विभाग (क-ग्रुप-2) ● सं. एफ. 2(6)डीओपी/ए-।।/84 जयपुर दिनांकः 15-6-2015 ● अधिसूचना

भारत के संविधान के अनुच्छेद 309 के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राजस्थान के राज्यपाल, राजस्थान शिक्षा अधीनस्थ सेवा नियम, 1971 को और संशोधित करने के लिए, इसके द्वारा निम्नलिखित नियम बनाते हैं, अर्थात्:-

1. **संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ-** (1) इन नियमों का नाम राजस्थान शिक्षा अधीनस्थ सेवा (दूसरा संशोधन) नियम, 2015 है।
   (2) ये 24.03.2015 से प्रवृत्त हुए समझे जाऐंगे।
2. **अनुसूची-I का संशोधन-** राजस्थान शिक्षा अधीनस्थ सेवा नियम, 1971 से संलग्न अनुसूची-I में शीर्ष अनुभाग च- सामान्य अध्यापक के अधीन-

(i) क्रम संख्यांक 8 (ङ) के सामने स्तंभ 4 के मद (i) में विद्यमान अभिव्यक्ति ''या डिप्लोमा'', जहां कहीं भी आयी हो, हटायी जायेगी।

(ii) क्रम संख्यांक 8 (ङ) के सामने स्तंभ 4 के मद (ii) में विद्यमान अभिव्यक्ति ''या डिप्लोमा'', जहां कहीं भी आयी हो हटायी जायेगी।

(iii) क्रम संख्याक 8(ङ) के सामने स्तंभ 4 के मद (iii) में विद्यमान अभिव्यक्ति ''या डिप्लोमा'', जहां कहीं भी आयी हो, हटायी जायेगी।

(iv) क्रम संख्यांक 8(ङ) के सामने स्तंभ 6 के मद (i) में विद्यमान अभिव्यक्ति ''या डिप्लोमा'', जहां कहीं भी आयी हो, हटायी जायेगी।

(v) क्रम संख्यांक 8 (ङ) के सामने स्तंभ 6 के मद (ii) में विद्यमान अभिव्यक्ति ''या डिप्लोमा'', जहां कहीं भी आयी हो, हटायी जायेगी।

(vi) क्रम संख्यांक 8(ङ) के सामने स्तंभ 6 के मद (iii) में विद्यमान अभिव्यक्ति ''या डिप्लोमा'', जहां कहीं भी आयी हो, हटायी जायेगी।

राज्यपाल के आदेश और नाम से, (ओ.पी. गुप्ता)

● Government of Rajasthan, Department of Personal (A-Gr-II) ● No. F.2 (6) DOP/A-II/84 Jaipur, Dated : 15.6.15 ● Notification

In exercise of the powers conferred by the proviso to Article 309 of the Constitution of India, the Governor of Rajasthan hereby makes the following rules further to amend the Rajasthan Educational Subordinate Service Rules, 1971, namely:-

1. **Short title and commencement.-** (1) These rules may be called the Rajasthan Educational Subordinate Service (Second Amendment) Rules, 2015.
   (2) They shall be deemed to have come into force with effect from 24-03-2015.
2. **Amendment of Schedule-I.-** In Schedule-I appended to the Rajasthan Educational Subordinate Service Rules, 1971, under the heading **Section** F - General Teachers ,-

(i) in item (i) of column 4 against serial number 8(e), the existing expression "or Diploma", wherever occurring, shall be deleted.

(ii) in item (ii) of column 4 against serial 'number 8(e), the existing expression "or Diploma", wherever occurring, shall be deleted.

(iii) in item (iii) Of column 4 against serial number 8(e), the existing expression "or Diploma", wherever occurring, shall be deleted.

(iv) in item (i) of column 6 against serial number 8(e), the existing expression "or Diploma", wherever occurring, shall be deleted.

(v) in 'item (ii) of column 6 against serial number 8(e), the existing expression "or Diploma", wherever occurring, shall' e deleted.

(vi) in item (iii) of column 6 against serial number 8(e), the existing expression "or Diploma", wherever occurring, shall be deleted.

By order and in the name of the Governor, (O.P. Gupta) Joint Secretary to the Government.

3. इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार वर्ष 2015 के प्रस्ताव के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/छाप्रोप्र/स-1/60126/इं.प्रि.पु./2015-16/ दिनांकः- 02/07/2015 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, (माध्यमिक-प्रथम) ● विषय : इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार वर्ष 2015 के प्रस्ताव के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार द्वारा जारी परिपत्र क्रमांक प.17(13)शिक्षा-1/2008 दिनांक 21.05.2011 एवं संशोधित पत्र दिनांक 17.08.2011, 01.05.2012 एवं 28.03.2013 के अनुसार माध्यमिक शिक्षा एवं संस्कृत शिक्षा विभाग के अध्ययनरत सामान्य, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक वर्ग, विशेष पिछड़ा वर्ग एवं निःशक्त की ऐसी बालिकाओं को जो बोर्ड की कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षाओं में प्रत्येक जिले में प्रथम स्थान प्राप्त करती हैं को क्रमशः 75000 एवं 100000 रुपये का इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार बालिका शिक्षा फाउण्डेशन जयपुर द्वारा प्रदान किया जाता है।

अतः निर्देशित किया जाता है कि अपने जिले के उक्त सात वर्गों की बालिकाओं की सूची जिन्होंने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की कक्षा 10 व 12 वीं में जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है की सूची वर्गानुसार संलग्न प्रपत्र-'अ' व 'ब' में मय प्रमाण-पत्र के हार्ड कॉपी एवं सॉफ्ट कॉपी सहित दिनांक 01.08.2015 तक इस कार्यालय को उपलब्ध करावें। कक्षा 12वीं के लिए प्रत्येक वर्ग को देय पुरस्कार में सभी संकाय (कला, वाणिज्य, विज्ञान) में से अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा का चयन करते हुए प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाना है।

आपको विदित है कि उपर्युक्त पुरस्कार प्रति वर्ष 19 नवम्बर को बालिका शिक्षा फाउण्डेशन जयपुर के माध्यम से प्रदत्त किया जाता है। अतः माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से यथा समय उक्त परिणामों की जिला स्तरीय वरीयता सूचियाँ (प्रत्येक वर्गानुसार) प्राप्त करें एवं राज्य सरकार के द्वारा जारी नियमों एवं निर्देशों के अनुसार समयबद्धता को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव प्रस्तुत करें। इसमें किसी प्रकार का विलम्ब नहीं किया जावे।

नोटः-

1. जिला शिक्षा अधिकारी प्रस्ताव भेजने से पूर्व ये सुनिश्चित कर लेवें कि पात्र छात्रा नियमित अध्ययनरत है या नहीं।
2. निःशक्त वर्ग के भी प्रस्ताव भेजने से पूर्व यह सुनिश्चित कर लेवें कि छात्रा विकलांग आदि है या नहीं। संलग्न उपर्युक्तानुसार

सुवालाल, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

प्रपत्र-अ (कक्षा 12 के लिए)

जिला.....

क्र. सं.	वर्ग (कैटेगरी)	छात्रा का नाम	पिता का नाम	विद्यालय का नाम	विषय वर्ग (संकाय)	प्राप्तांक/ प्रतिशत	जिला
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	सामान्य						
2.	अनु. जाति						
3.	अनुसूचित जनजाति						
4.	अन्य पिछड़ा वर्ग						
5.	अल्पसंख्यक						
6.	निःशक्त						
7.	विशेष पिछड़ा वर्ग						

नोटः कक्षा 12 के लिए जिले में प्रत्येक वर्ग को देय पुरस्कार में सभी संकाय (कला, वाणिज्य, विज्ञान) में से अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली एक ही छात्रा का चयन करते हुए प्रस्ताव प्रस्तुत करें।

प्रपत्र-ब (कक्षा 10 के लिए)

क्र. सं.	वर्ग (कैटेगरी)	छात्रा का नाम	पिता का नाम	विद्यालय का नाम	प्राप्तांक/ प्रतिशत	जिला
1	2	3	4	5	6	7
1.	सामान्य					
2.	अनुसूचित जाति					
3.	अनुसूचित जनजाति					
4.	अन्य पिछड़ा वर्ग					
5.	अल्पसंख्यक					
6.	निःशक्त					
7.	विशेष पिछड़ा वर्ग					

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से प्राप्त श्रेणी/वर्ग वार प्राप्त सूचियों के अनूसार मिलान के पश्चात ही पात्र छात्राओं को वर्ष 2015 के लिए देय इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार के उक्त प्रस्तुत प्रस्तावों में कोई भी अपात्र छाया का नाम सम्मिलित नहीं किया गया हैं।

हस्ताक्षर जि.शि.अ. मय मोहर

4. स्वैच्छिक क्षेत्र विकास केन्द्र के संबंध में

● राजस्थान सरकार, आयोजना (समन्वय) विभाग ● क्रमांक : प. 2(7) आयो/ग्रुप-2/2012, जयपुर दिनांक 29-05-2015 ● अति आवश्यक ● आज्ञा

महामहिम राज्यपाल महोदय की आज्ञा अनुसार ''स्वैच्छिक क्षेत्र विकास केन्द्र'' को एतद् द्वारा तत्काल प्रभाव से बंद/समाप्त किया जाता है। यह सक्षम स्तर से अनुमोदित है।

आज्ञा से-**अखिल अरोरा,**

शासन सचिव, आयोजना

5. मान्यता समिति तत्काल प्रभाव से भंग

● राजस्थान सरकार, आयोजना (समन्वय) विभाग ● क्रमांक : प. 2(7) आयो/ग्रुप-2/2012, जयपुर दिनांक 29-05-2015 ● अति आवश्यक ● आज्ञा

स्वैच्छिक क्षेत्र विकास केन्द्र के अन्तर्गत पंजीकृत स्वयंसेवी संस्थाओं को मान्यता (Accreditation) प्रदान करने वाली मान्यता समिति (Accreditation Committee) को एतद् द्वारा तत्काल प्रभाव से भंग किया जाता है। यह सक्षम स्तर से अनुमोदित है।

आज्ञा से-**अखिल अरोरा,** शासन सचिव, आयोजना

शिविरा में सम्माननीय रचनाकारों से निवेदन है कि शिविरा में प्रकाशनार्थ रचना भेजते समय बताए जा रहे प्रपत्र में अपने से सम्बन्धित आवश्यक जानकारी अनिवार्यतः देने की कृपा करें। ऑन लाइन भुगतान व्यवस्था लागू हो जाने के कारण बैंक खाता सम्बन्धी जानकारी मिलने पर ही रचनाओं के प्रकाशनोपरांत दिया जाने वाला पारिश्रमिक/मानदेय दिया जाना संभव है। लम्बित प्रकरण निस्तारित करने और भविष्य में भी भुगतान सम्बन्धी मामला लम्बित न रहे इस हेतु आपसे बताए जा हरे प्रपत्रानुसार सूचना देने की अपेक्षा है। व.सं.

(1) व्यक्तिगत विवरण

1. नाम एवं पद .....
2. पिता/पति का नाम .....
3. जन्म दिनांक ..... आयु (वर्ष)..... .....
4. पूर्ण पता (पिनकोड सहित) .....
   .....
   .
5. धारित पद .....
6. विशिष्ट योग्यताएं एवं रचनात्मक अवदान .....

(2) ऑन लाइन भुगतान हेतु आवश्यक विवरण

1. नाम .....
2. पैन नं. .....
3. बैंक का नाम .....
4. ब्रांच का नाम .....
5. खाता सं. .....
6. बैंक IFSC No. .....
7. MICR No. .....
8. फोन नं.- 1. बेसिक .....
   2. मोबाइल .....

प्रमाणित किया जाता है कि शिविरा/नया शिक्षक/शिक्षक दिवस प्रकाशन के अन्तर्गत प्रकाशित रचनाओं के मानदेय का भुगतान ऑन लाइन बैंक खाते के माध्यम से अधोहस्ताक्षरकर्ता को करने के लिए प्रस्तुत उपर्युक्त सूचनाएं पूर्णतः सही हैं जिनकी अच्छी तरह से जांच कर ली गयी है। किसी भी तरह का परिवर्तन होने पर तत्काल सूचना भिजवा दी जाएगी।

दिनांक हस्ताक्षर रचनाकार

6. स्वैच्छिक संगठन प्रमाणन

● राजस्थान सरकार, आयोजना (समन्वय) विभाग ● क्रमांक : प. 2(7) आयो/ग्रुप-2/2012, जयपुर दिनांक 29-05-2015 ● अति आवश्यक ● आज्ञा

स्वैच्छिक संगठनों द्वारा स्वैच्छिक क्षेत्र विकास केन्द्र से प्रमाणन प्राप्त करने एवं राज्य सरकार के विभागों द्वारा स्वैच्छिक संगठनों का चयन प्रमाणनशुदा संगठनों में से ही करने की बाध्यता एतद् द्वारा तत्काल प्रभाव से समाप्त की जाती है। यह सक्षम स्तर से अनुमोदित है।

आज्ञा से-**अखिल अरोरा,** शासन सचिव, आयोजना

7. गैर-शैक्षणिक कार्यों में शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति नहीं करने बाबत।

● राजस्थान सरकार, प्रारम्भिक शिक्षा विभाग ● क्रमांक : प. 9(2) प्रा.शि./2015, जयपुर दिनांक 7-07-2015 ● परिपत्र ● विषय : गैर-शैक्षणिक कार्यों में शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति नहीं करने बाबत्।

शिक्षा विभाग में कार्यरत शिक्षकों को मूल पदस्थापित स्थान से अन्य विभाग के कार्यालयों यथा जिला कलेक्टर, उपखण्ड, तहसील, निर्वाचन, जिला परिषद् व पंचायत समिति कार्यालय अथवा अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति या कार्य व्यवस्था हेतु निर्देशित कर कार्य करवाया जाता हैं। यह निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 की धारा 27 का स्पष्ट उल्लंघन है। अधिनियम की धारा 25 के अनुसार विद्यालयों में छात्र शिक्षक अनुपात बनाये रखने के लिए धारा 27 में यह प्रावधान है कि किसी भी शिक्षक को दस वर्षीय जनगणना, विभीषिका राहत कार्यों एवं यथास्थिति, स्थानीय प्राधिकारी या राज्य विधान मण्डलों तथा संसद के निर्वाचनों से संबंधित कर्तव्यों से भिन्न किसी गैर-शैक्षिक प्रयोजनों के लिए अभिनियोजित नहीं किया जावे।

राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम 2011 के नियम 21(3) के अनुसार "यदि राज्य सरकार या स्थानीय प्राधिकारी का कोई व्यक्ति धारा 25 की उप धारा (2) के उपबन्धों का अतिक्रमण करता है तो वह अनुशासनात्मक कार्यवाही के लिए व्यक्तिशः उत्तरदायी होगा।"

प्रायः यह पाया गया है कि शिक्षकों को निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 की धारा 27 में वर्णित कार्यों से इत्तर गैर-शैक्षिक कार्यों में लगाया जाता है तथा चुनाव संबंधी कार्य संपादित हो जाने के उपरांत भी लंबे समय तक प्रतिनियुक्ति पर रखा जाता है, जिससे शाला में शिक्षण कार्य प्रभावित होता है, जो विद्यार्थियों के हित में नहीं है।

शिक्षकों को प्रतिनियुक्ति पर नहीं लगाने के संबंध में समय-समय पर शासन के स्तर से भी निर्देश जारी किये जाते रहे हैं। इस संबंध में न्यायालय स्तर से भी प्रतिकूल टिप्पणियां प्राप्त हुई है तथा मा. विधानसभा सदस्यों द्वारा विधानसभा में प्रश्न उठाए जाते है।

अतः निर्देशित किया जाता है कि जिला कलेक्टर, उपखण्ड, तहसील, निर्वाचन, जिला परिषद व पंचायत समिति कार्यालय अथवा अन्य विभागों में शिक्षकों को गैर शैक्षिक कार्यों हेतु प्रतिनियुक्ति पर नहीं लगाया जावें। यदि वर्तमान में उपरोक्त वर्णित कार्यालयों में शिक्षक प्रतिनियुक्ति/कार्य-व्यवस्थार्थ पदस्थापित किये हुए है, तो उन्हें तत्काल

अपने मूल पदस्थापन स्थान हेतु कार्यमुक्त करावें।

कृपया इन निर्देशों की कठोरता से पालना सुनिश्चित करावें।

कुंजीलाल मीना, शासन सचिव • कार्यालय निदेशक प्रारंभिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर, • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/अभिलेख/1610/परिपत्र/2015, दिनांक 16-07-2015

8. 2014-15 से कक्षा 1 से 8 में शिक्षण कार्य करवा रहे शिक्षकों एवं संस्था प्रधानों से उनकी क्षमता परिवर्द्धन एवं शिक्षण कार्य की गुणवत्ता में सुधार हेतु शिक्षक मूल्यांकन प्रपत्र भरवाये जाने के संबंध में।

• राजस्थान सरकार प्रारम्भिक शिक्षा विभाग • क्रमांक : 20855 दिनांक : 26.6.2015 •परिपत्र

राज्य सरकार ने 2014-15 से राज्य के समस्त राजकीय प्राथमिक/उच्च प्राथमिक/माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित कक्षा 1 से 8 में शिक्षण कार्य करवा रहे सभी शिक्षकों एवं संस्था प्रधानों से उनकी क्षमता परिवर्द्धन एवं शिक्षण कार्य की गुणवत्ता में सुधार हेतु शिक्षक मूल्यांकन प्रपत्र भरवाये जाने का निर्णय लिया गया था। सत्र 2015-16 से इस प्रपत्र को अद्यतन एवं अपवर्द्धन कर छमाही आधार पर आवश्यक रूप से शिक्षकों द्वारा भरवाया जाना है। इन प्रपत्रों के द्वारा शिक्षकों की समस्त संस्थापन सम्बन्धित सूचनाएं संकलित की जाकर उनके कार्य निष्पादन का मूल्यांकन किया जाना है। शिक्षकों द्वारा भरे गये प्रपत्र संस्था प्रधान की टिप्पणी पश्चात विद्यालय/संस्था प्रधान के द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के सम्बन्धित पोर्टल पर अपलोड होंगे। संस्था प्रधानों द्वारा भरे गये प्रपत्र सम्बन्धित नियंत्रण अधिकारी (बीईईओ या जो भी हो) की टिप्पणी के पश्चात सम्बन्धित विद्यालय/संस्था प्रधान की जिम्मेदारी पर सर्व शिक्षा अभियान के पोर्टल पर अपलोड करवाने होंगे।

इस बार छमाही आधार पर भरवाये जा रहे प्रपत्र आवश्यक (Mandatory) रूप से भरने होंगे। जिन शिक्षकों/संस्था प्रधानों के प्रपत्र पोर्टल पर निर्धारित समयावधि में अपलोड नहीं होंगे, उनकी आगामी वेतन वृद्धि लागू नहीं होगी। • संलग्न : प्रपत्र एवं दिशा निर्देश • (कुंजीलाल मीणा) शासन सचिव।

9. शिक्षक मूल्यांकन कार्यक्रम के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में।

• राजस्थान सरकार प्रारम्भिक शिक्षा विभाग • क्रमांक : 20857 दिनांक : 26.6.15 • निदेशक, प्राथमिक/माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर • विषय : शिक्षक मूल्यांकन कार्यक्रम के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत राज्य सरकार ने 2014-15 से राज्य के समस्त राजकीय प्राथमिक/उच्च प्राथमिक/माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित कक्षा 1 से 8 में शिक्षण कार्य करवा रहे सभी शिक्षकों एवं संस्था प्रधानों से उनकी क्षमता परिवर्द्धन एवं शिक्षण कार्य की गुणवत्ता में सुधार हेतु शिक्षक मूल्यांकन प्रपत्र भरवाये जाने का निर्णय लिया गया था। सत्र 2015-16 से इस प्रपत्र को अद्यतन एवं अपवर्द्धन कर छमाही आधार पर आवश्यक रूप से शिक्षकों द्वारा भरवाया जाना है। इन प्रपत्रों के द्वारा शिक्षकों की समस्त संस्थापन सम्बन्धित सूचनाएं संकलित की जाकर उनके कार्य निष्पादन का मूल्यांकन किया जाना है। शिक्षकों द्वारा भरे गये प्रपत्र संस्था प्रधान की टिप्पणी पश्चात विद्यालय/संस्था प्रधान के द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के सम्बन्धित पोर्टल पर अपलोड होंगे। संस्था प्रधानों द्वारा भरे गये प्रपत्र सम्बन्धित नियंत्रण अधिकारी (बीईईओ या जो भी हो) की टिप्पणी के पश्चात सम्बन्धित विद्यालय/संस्था प्रधान की जिम्मेदारी पर सर्व शिक्षा अभियान के पोर्टल पर अपलोड करवाने होंगे। इस सम्बन्ध में निदेशालय स्तर पर निम्नलिखित कार्यवाही की जानी है-

1. इस बार छमाही आधार पर भरवाये जा रहे प्रपत्र आवश्यक (Mandatory) रूप से भरने होंगे।
2. जिन शिक्षकों/संस्था प्रधानों के प्रपत्र पोर्टल पर निर्धारित समयावधि में अपलोड नहीं होंगे, उनकी वेतन वृद्धि लागू नहीं होगी।
3. प्रपत्र के अपलोड होने से प्राप्त डाटा रिपोर्ट के आधार पर उत्कृष्ट कार्य करने वाले एवं औसत से कम (असंतोषजनक) कार्य निष्पादित करने वाले शिक्षकों/संस्था प्रधानों के विरुद्ध नियमानुसार आवश्यक कार्यवाही की जानी है। इस सम्बन्ध में सम्बन्धित शिक्षकों की सूचनाओं/डाटा रिपोर्ट हेतु आयुक्त, राप्राशिप कार्यालय से नियमित समन्वयन करें।

(कुंजीलाल मीणा) शासन सचिव

शिक्षक मूल्यांकन प्रपत्र
विद्यालय संबंधी सूचना
भाग-1

1. विद्यालय का नाम (अंग्रेजी में).....
2. विद्यालय का नाम (हिन्दी में).....
3. विद्यालय का स्थान.....
4. पिनकोड.....
5. विद्यालय श्रेणी (✓ करें)-प्राथमिक/उ.प्रा./माध्यमिक/उ.मा.
6. विद्यालय का स्थापना वर्ष.....
7. विद्यालय का प्रबंधन-शिक्षा विभाग/पंचायतीराज/संस्कृत
8. विद्यालय की निम्नतम कक्षा.....
9. विद्यालय की उच्चतम कक्षा.....
10. डाइस कोड.....
11. केजीबीवी/सीसीई/नॉन सीसीई.....
12. विद्यालय का नामांकन-

कक्षा	1	2	3	4	5	6	7	8	कुल
छात्र									
छात्रा									
कुल									

13. विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की कुल संख्या

क्र.सं.	शिक्षकों का नाम	M/F	क्र.सं.	शिक्षकों का नाम	M/F
1			2		
3			4		
5			6		

14. प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक का नाम.....
15. प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक का ई-मेल.....
16. प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक का मोबाइल नं. .....
17. कक्षा आठ वैकल्पिक बोर्ड परीक्षा से सम्बन्धित सूचनाः-

17.1 गत सत्र का समग्र परिणाम ग्रेड में-

नामांकन	प्रविष्ट	A+	A	B	C	D

17.2 गत सत्र के परीक्षा परिणाम का विषयवार संख्यात्मक विवरण (ग्रेड में)-

विषय	प्रविष्ट	A+	A	B	C	D
विज्ञान						
अंग्रेजी						
गणित						
सा.विज्ञान						
हिन्दी						
संस्कृत						

18. संस्था प्रधान बिन्दु संख्या 18.1 से 18.6 की सूचना सम्बन्धित बॉक्स में ✓ या × से भरें-

18.1 प्रति कक्षा एक सप्ताह में कम से कम एक बार शिक्षण कार्य का अवलोकन किया जाता है?

18.2 शिक्षकों की मासिक बैठक कर बच्चों की शैक्षिक प्रगति पर चर्चा की जाती है?

18.3 प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षकों को शिक्षण के संबंध में लिखित रूप से मार्गदर्शन दिया जाता है?

18.4 प्रधानाध्यापक द्वारा विद्यालय से संबंधित दस्तावेजों का समय पर संधारण किया गया है?

18.5 प्रधानाध्यापक शिक्षकों द्वारा बच्चों को दिए गए अभ्यास कार्य का अवलोकन कर गलतियों के सुधार हेतु सुझाव देते है?

18.6 विद्यालय प्रबन्धन समिति (एसएमसी) में उपलब्ध राशि का समय पर अवलोकन किया गया है?

19. विद्यालय उपलब्धियाँ :

19.1 विद्यालय उपलब्धियाँ : सम्बन्धित बॉक्स में ✓ या × से भरें-

1.	नामांकन वृद्धि	
2.	8 वीं कक्षा में मेरिट	
3.	राज्य/जिला स्तरीय खेलों में भाग	
4.		
5.		
6.		

19.2 अन्य गतिविधियाँ : सम्बन्धित बॉक्स में ✓ या × से भरें-

1.	स्काउट व गाइड	
2.	एन.सी.सी.	
3.	एस.यू.पी.डब्ल्यू.	
4.	रैली	
5.	नाट्य कार्यक्रम (जागरूकता कार्यक्रम)	
6.	वार्षिक उत्सव	

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर

शिक्षक प्रोफाइल

भाग-2

(इस भाग को शिक्षक द्वारा जुलाई 2015 में भरा जाना है इसके बाद आवश्यकता होने पर अपडेट किया जाना है।)

1. नाम.....
2. लिंग : महिला ..... पुरुष .....
3. जन्म तिथि : दिनांक..... माह..... वर्ष.....
4. पिता/पति का नाम.....
5. मोबाइल नम्बर.....
6. ई-मेल आईडी.....
7. शिक्षा विभाग में नियमित नियुक्ति पर प्रथम कार्य ग्रहण की दिनांक..... माह.....वर्ष.....

7.1 नियुक्ति का माध्यम : सीधी भर्ती/पद्दोन्नति/अनुकम्पा/अन्य (सम्बन्धित पर टिक करें)

7.2 वर्तमान धारित पद पर नियुक्ति आदेश तिथि : दिनांक....माह....वर्ष.....

8. वर्तमान पद 8.1 पद..... 8.2 ग्रेड I, II, III प्रबोधक
9. वर्तमान पद पर कार्य ग्रहण करने की तिथिः दिनांक....माह....वर्ष.....
10. एसआई नम्बर.....
11. जीपीएफ/सीपीएफ नम्बर.....
12. कर्मचारी यूनीक आई.डी. .....
13. प्रान (पेंशन रिटायरमेंट नम्बर) : .....
14. शैक्षणिक योग्यता (दिनांक 30 जून, 2015 तक)-(जो लागू नहीं हो उसे छोड़ दें)

योग्यता	वर्ष	ऐच्छिक विषय (यदि रहे हो तो)		
		1	2	3
सैकण्डरी				
हायर सै./सी.सै.				
बीए/बीएससी/बीकॉम				
एमए/एमएससी/एमकॉम				
अन्य शैक्षिक योग्यता				

15. प्रशैक्षणिक योग्यता (दिनांक 30 जून, 2015 तक)

सर्टिफिकेट/डिग्री का नाम	वर्ष	विषय
एस.टी.सी./सी.लिब./सी.पीएड.		
बी.एड./बी.लिब./बी.पीएड.		
एम.एड./एम.लिब./एम.पीएड		
अन्य		

16. विषय का नाम, जिसके लिए नियुक्ति हुई है-(उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अध्यापन कराने वाले एवं लेबल 2 में नियुक्त शिक्षकों हेतु), उस विषय का नाम : .....

17. प्रथम नियुक्ति से लेकर अब तक के सेवाकाल का विवरण*-

क्र. सं.	पद	स्कूल का नाम व स्थान	ग्राम पंचायत	ब्लॉक	जिला	पदस्थापन अवधि (दिनांक)		कुल अवधि
						कब से	कब तक	माह में
1								
2								
3								
4								

*आवश्यकता होने पर पृथक से शीट संलग्न करें।

शिक्षक के हस्ताक्षर

शिक्षक की प्रशिक्षण सम्बन्धी सूचना

भाग-3

(यह भाग शिक्षक द्वारा जुलाई 2015 में भरा जाना है। उसके बाद आवश्यकतानुसार छमाही प्रतिवेदन के समय अपडेट किया जाना है)

1. सत्र 2013-14 से 30 जून 2015 तक जिन प्रशिक्षण/कार्यशालाओं में, जिस भूमिका में भाग लिया है, उसका विवरणः
   नोट : नीचे कॉलम संख्या 5 एवं 7 में 1, 2, 3, 4 एवं 5 में से कोई एक कोड भरें-

कॉलम संख्या 5 के लिए : शिक्षक = 1. प्रधानाध्यापक = 2. प्रशिक्षक = 3. सामग्री निमाणकर्ता = 4.

कॉलम संख्या 7 के लिए : डाईट = 1. एसएसए = 2. शिक्षा विभाग = 3. एसआईईआरटी = 4. गैर सरकारी संगठन/अन्य = 5 भरें।

1	2	3	4	5	6	7	8
क्र. सं.	प्रशिक्षण/कार्यशाला का नाम	वर्ष	प्रशिक्षण/कार्यशाला की अवधि	प्रशिक्षण में भूमिका	प्रशिक्षण/कार्यशाला का मुख्य बिंदु (उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए विषय भी लिखें)	प्रशिक्षण/कार्यशाला आयोजन कर्त्ता	ग्रेडिंग

आवश्यक होने पर पृथक से शीट संलग्न करें।

2. कम्प्युटर प्रशिक्षण प्राप्त किया है : हाँ ☐ नहीं ☐

(यदि हाँ तो इसका विवरण भी ऊपर की तालिका में दें)

शिक्षक के हस्ताक्षर

शिक्षक मूल्यांकन प्रपत्र

भाग-4

(छमाही आधार पर शिक्षक द्वारा भरा जाना है)

शिक्षक का नाम.....

पिता/पति का नाम.....

विद्यालय का नाम.....

कर्मचारी यूनिक आईडी.....

एस.आई. नं. .....

डायस कोड.....

छः माही : जुलाई से दिसम्बर.....जनवरी से जून.....

1. वर्तमान में पढ़ाई जाने वाली कक्षाएँ एवं विषय-

कक्षा	1	2	3	4	5	6	7	8
विषय 1								
विषय 2								
विषय 3								
विषय 4								

2. विगत छः माह में विद्यालय में शिक्षक की औसत भौतिक उपस्थिति : (संबंधित कॉलम में टिक करें)

60% से कम	60% से 80% तक	80% से अधिक	उपस्थिति के संबंध में सं.प्र./नि.अ. का अभिमत	
			सहमत	असहमत

3. अन्य विभाग/संस्था में प्रतिनियुक्ति पर रहे हैं तो उन दिवसों की संख्या व कारण :
   दिवस .....
   कारण 1.....
   2.....
   3.....
   अन्य कार्य हेतु : दिनों की संख्या.....कारण 1....2....3....

4. कृपया अपने कार्य निष्पादन को नीचे दिए गए मापदण्ड के अनुसार 1 से 5 तक स्वयं रेटिंग दें :
   (संस्था प्रधान यदि स्वयं शिक्षक के रूप में प्रपत्र भर रहा है तो कॉलम 4 को बीईईओ द्वारा भरा जाना है।)
   1-औसत से कम, 2-औसत, 3-अच्छा, 4-बहुत अच्छा, 6-उत्कृष्ट

क्रम	निष्पादन सूचक	शिक्षक द्वारा स्वमूल्यांकन	संस्थाप्रधान/नियंत्रण अधिकारी द्वारा मूल्यांकन
(1)	(2)	(3)	(4)
4.1	नियमित रूप से विद्यालय आना		
4.2	नियमित रूप से शिक्षण योजना बनाना और समीक्षा करना		
4.3	पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अन्य अध्ययन सामग्री का कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग करना		
4.4	नियमित रूप से बच्चों का आकलन करना		
4.5	बच्चों की शैक्षिक प्रगति को नियमित रूप से दर्ज करना		
4.6	बच्चों को शैक्षिक प्रगति के साक्ष्य/प्रमाण रखना		
4.7	सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करना		
4.8	बच्चों की प्रगति से अभिभावकों/एसएमसी सदस्यों को अवगत कराना		

4.9	बच्चों को पर्याप्त कक्षा एवं गृहकार्य देना और उसकी नियमित जाँच कर सुधारात्मक कार्य करना		
4.10	पुस्तकालय उपयोग हेतु बच्चों को प्रेरित करना		
	योग		

5. शिक्षक/संस्था प्रधान के उक्त निष्पादन सूचकों के आधार पर संस्था प्रधान/बीईईओ द्वारा शिक्षक/संस्था प्रधान को दी गई ग्रेडः (सम्बन्धित रेटिंग वाले बॉक्स पर टिक करें)

A	B	C	D	E

नोट : संस्था प्रधान कुल दी गई रेटिंग के आधार पर निम्नानुसार ग्रेड निकालेंः-

A ग्रेड (41 से 50 रेटिंग अंक) **B ग्रेड** (31 से 40 रेटिंग अंक) **C ग्रेड** (21 से 30 रेटिंग अंक) **D ग्रेड** (11 से 20 रेटिंग अंक) **E ग्रेड** (0 से 10 रेटिंग अंक)

नियंत्रण अधिकारी/संस्था प्रधान के हस्ताक्षर — शिक्षक/संस्था प्रधान/बीईईओ के हस्ताक्षर

6. शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य को बेहतर बनाने में महसूस की जाने वाली चुनौतियाँ : किन्हीं तीन बेहद कठिन चुनौतियों को घटते क्रम में वरीयता दें (वरीयता के अनुसार सम्बन्धित बॉक्स में क्रम दें जैसे- बड़ी चुनौती को 1. उससे छोटी चुनौती को 2 व इसी प्रकार से शेष चुनौतियों को घटते क्रम में वरीयता दें)

क्रम	चुनौतियाँ	शिक्षक के अनुसार	*संस्थाप्रधान/ नियंत्रण अधिकारी के अनुसार
6.1	बच्चों की अनियमितता		
6.2	अभिभावकों का असहयोग		
6.3	पाठ्यपुस्तकों का कठिन होना		
6.4	बच्चों का स्तर कमजोर होना		
6.5	प्रशिक्षणों की आवश्यकता		
6.6	विद्यालय में कार्य की अधिकता		
6.7	अन्य		

7. शिक्षक द्वारा जिन प्रशिक्षणों की आवश्यकता महसूस की जा रही है, उन्हें वरीयता के अनुसार संबंधित बॉक्स में क्रम दें। जैसे तीन सर्वाधिक आवश्यकता वाले प्रशिक्षण को आवश्यकतानुसार घटते क्रम में (1, 2, 3) वरीयता दें।

क्रम	चुनौतियाँ	शिक्षक के अनुसार	*संस्थाप्रधान/ नियंत्रण अधिकारी के अनुसार
7.1	सीसीई		
7.2	शिक्षण कौशल		
7.3	व्यक्तित्व विकास		
7.4	विज्ञान एवं गणित		
7.5	अंग्रेजी		
7.6	विद्यालय प्रबंधन		
7.7	कक्षाकक्ष प्रबंधन		
7.8	अन्य		

8. शिक्षक द्वारा स्वय के कार्य के बारे में किया गया योगदान/प्राप्त पुरस्कार सम्बन्धित कॉलम में (✓) भरें अन्यथा (×) भरें।

1. भामाशाह योजना में योगदान ☐
2. पुरस्कार ☐
3. लेखन कार्य ☐
4. अन्य योगदान ☐

संस्थाप्रधान/नियंत्रण अधिकारी के हस्ताक्षर — शिक्षक के हस्ताक्षर

*बिन्दु संख्या 5, 6 एवं 7 में संस्थाप्रधान/नियंत्रण अधिकारी द्वारा नियत स्थान पर प्रविष्टि की जावेगी।

भाग-5

बच्चों के शैक्षिक स्तर की कक्षावार स्थिति (स्वयं की शिक्षण कक्षा एवं विषय को शिक्षक द्वारा भरा जाना है।)
(गैर सीसीई विद्यालयों को ही भरना है)

1. गत मूल्यांकन का माह.....
2. गत मूल्यांकन के आधार पर बच्चों का शैक्षिक स्तर :

कक्षा	नामांकन	औसत उपस्थिति	मूल्यांकन में उप. (संख्या)	हिन्दी					अंग्रेजी					गणित				
				A	B	C	D	E	A	B	C	D	E	A	B	C	D	E
1																		
2																		
3																		
4																		
5																		
6																		
7																		
8																		
कुल																		

कक्षा	नामांकन	औसत उपस्थिति	मूल्यांकन में उप. (संख्या)	पर्यावरण अध्ययन					सामाजिक विज्ञान					विज्ञान				
				A	B	C	D	E	A	B	C	D	E	A	B	C	D	E
3																		
4																		
5																		
6																		
7																		
8																		
कुल																		

3. (a) शैक्षिक स्तर के मूल्यांकन पर संस्थाप्रधान/नियंत्रण अधिकारी का अभिमत : सहमत.....असहमत.....

दिनांक :..... शिक्षक के हस्ताक्षर

भाग–6

संस्था प्रधान के कार्य के सम्बन्ध में ब्लॉक शिक्षा अधिकारी/नियंत्रण अधिकारी की टिप्पणी

1. संस्था प्रधान के कार्य का समग्र मूल्यांकन (सम्बन्धित कॉलम में टिक/लघु हस्ताक्षर करें)

औसत से कम	औसत	अच्छा	बहुत अच्छा	उत्कृष्ट

दिनांक :

ब्लॉक शिक्षा अधि./नियंत्रण अधि. का नाम

मोबाइल नम्बर.....

ब्लॉक शिक्षा अधि. के हस्ताक्षर मय सील

10. सत्र 2015–16 में आयोज्य 33वीं सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता का पंचांग आवश्यक निर्देशों सहित अनुपालनार्थ प्रसारित

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर कार्यालय आदेश • सत्र 2015–16 में आयोज्य 33वीं सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता का पंचांग आवश्यक निर्देशों सहित अनुपालनार्थ प्रसारित किया जाता है। समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारम्भिक) को निर्देशित किया जाता है कि अपने अधीनस्थ विद्यालयों में पंचांग एवं निर्देशों को अविलम्ब प्रसारित करें।

33 वीं सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता निम्नांकित तिथियों में आयोजित की जावे:–

जिला स्तर पर:– 21–08–2015 से 22–08–2015 तक

राज्य स्तर :– 27–08–2015 से 29–08–2015 तक

राज्य स्तर पर नेहरू हॉकी (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता का आयोजन स्थल:–

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धौलपुर

आवश्यक दिशा–निर्देश

1. जिला स्तर पर विजेता टीम ही राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता में भाग लेगी तथा जिला स्तर पर विजेता टीम के जिन खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता सत्र में भाग लिया है वे ही खिलाड़ी उसी सत्र की राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता में भाग लेंगे। उस प्रतियोगिता सत्र में खिलाड़ियों का परिवर्तन नहीं किया जावे।
2. सत्र 2015–16 की 33वीं जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता हेतु छात्र की जन्म तिथि01.11.2015 को 15 वर्ष या उससे कम होनी चाहिए अर्थात 01–11–2000 या उसके पश्चात जन्म लेने वाले खिलाड़ी नेहरू हॉकी प्रतियोगिता (15 वर्ष छात्र) में भाग ले सकेंगे। साथ ही अन्तिम रूप से चिकित्सकीय प्रमाण पत्र जिसमें कि छात्र की आयु 15 वर्ष या उससे कम का प्रमाण पत्र हो आवश्यक रूप से संलग्न करें, इसके अभाव में छात्र प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेगा। जन्मतिथि में विवाद के क्रम में सम्बन्धित संस्था प्रधान जिम्मेदार होंगे। अतः विद्यालय अभिलेख से मिलान कर जन्म तिथि अंकों व शब्दों में योग्यता प्रमाण पत्र में दर्ज की जाए। इस प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु खिलाड़ी की पात्रता प्रवेश तिथि सभी कक्षाओं के लिए वास्तविक प्रवेश तिथि मान्य होगी।
3. राज्य स्तरीय नेहरू हॉकी प्रतियोगिता (15 वर्ष छात्र) में भाग लेने हेतु जिला स्तरीय नेहरू हॉकी (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता में कम से कम 4 टीमों का भाग लेना अनिवार्य होगा। इस न्यूनतम निर्धारित संख्या में टीमें जिला स्तर पर भाग नहीं लेती है तो ऐसी स्थिति में प्रतियोगिता सम्पन्न करवाकर संभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित कर दिए जाए, परन्तु टीम उस प्रतियोगिता सत्र में नेहरू हॉकी प्रतियोगिता (15 वर्ष छात्र) राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकेगी। उक्त सूचना जिला स्तरीय प्रतियोगिता प्रारम्भ होने के समय खिलाड़ियों को आवश्यक रूप से दी जाए।
4. सब जूनियर (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी जिला स्तरीय प्रतियोगिता में टीमों की संख्या 4 या 4 से कम होने पर लीग प्रणाली से एवं टीमों की संख्या 5 या 5 से अधिक होने पर नॉक–आउट प्रणाली से प्रतियोगिता की जाए।
5. जिला स्तर पर लीग प्रणाली में टाई पड़ने पर परिणाम हेतु निम्नानुसार टाई तोड़ी जाए:–
   1. लीग प्रणाली से खेले जाने वाले सभी खेलों के मैचों में विजेता दल को दो अंक व पराजित दल को शून्य अंक एवं बराबर रहने वाले दलों को एक–एक अंक दिया जायेगा।
   2. जिला स्तर पर आवश्यकतानुसार मैच जब लीग प्रणाली से खिलाए और दल बराबर रह जाते है तो प्राप्त गोल औसत को आधार मान कर टाई तोड़ी जाए। गोल का तात्पर्य है जिस दल के पक्ष में जितने गोल हुए है उनमें से उसी दल के विपक्ष में हुए गोल का औसत निकाल कर टाई तोड़ी जाए। यदि इस पद्धति से निर्णय की स्थिति न बन पाए तो जिस दल के पक्ष में अधिक संख्या में गोल रहे हो उसे ही विजेता घोषित कर दिया जाए।
6. राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता नॉक आउट प्रणाली से आयोजित की जावेगी। नॉक आउट प्रणाली में टाई पड़ने पर विभागीय हॉकी प्रतियोगिता के अनुरूप ही टाई ब्रेकर नियम लागू किया जाएगा।
7. राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता में दल हारते ही आयोजक हारे हुए दल को कार्यमुक्त कर देवें। सेमीफाइनल में हारने वाली टीमों के मध्य तीसरे एवं चौथे स्थान के लिए मैच करवाए जाए तथा 4 स्थानों के परिणाम निकाले जाए।
8. जिला स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता हेतु आयोजन स्थल का निर्धारण जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) नॉडल अधिकारी द्वारा किया जाएगा।
9. शिक्षा विभागीय अन्य विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में जिले के दल राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेते है जिसकी व्यवस्था सम्बन्धित जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा की जाती है। उसी व्यवस्था/प्रक्रिया अनुसार ही जिले के दल को नेहरू हॉकी

प्रतियोगिता (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता के लिए भेजा जाए। खिलाड़ियों का दैनिक भत्ता, अनुसांगिक प्रभार, यात्रा व्यय(रियायती दर) आदि समस्त व्यय अन्य विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं की भांति नियमानुसार छात्र कोष से वहन किए जायेंगे। अलग से कोई बजट आवंटित नहीं किया जाएगा।

10. जिला स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता आयोजन पर होने वाले व्यय अन्य विभागीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं की भांति जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) के पास उपलब्ध खेलकूद की अनारक्षित राशि 60 प्रतिशत राशि में से नियमानुसार कर सकेंगे।

11. शिक्षा विभाग के विशेष विद्यालय जैसे सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर एवं सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र विद्यालय में प्रवेश के लिये खिलाड़ी दल यदि एक ही विद्यालय से पूर्ण बनता है तो सीधे ही राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता में भाग लेंगे।

12. जिला स्तर पर विजेता विद्यालय की सूचना व भाग लेने वाले खिलाड़ियों की सूची परिणाम प्राप्त होते ही विजेता विद्यालय के संस्था प्रधान द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी (माध्य.) के माध्यम से राज्य स्तरीय नेहरू हॉकी प्रतियोगिता आयोजक संस्था प्रधान को समय पर भिजवाते हुए राज्य स्तर पर भाग लेने की सूचना भी भिजवाए।

13. जिला स्तर पर विजेता टीम मय आवश्यक अभिलेखों के दिनांक 26.08.2015 की प्रातः 10.00 बजे तक राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता आयोजक प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. धौलपुर को अपनी उपस्थिति देवें।

14. अन्य विभागीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं की भांति नेहरू हॉकी प्रतियोगिता का भी समस्त अभिलेख विद्यालय में तैयार किया जाए एवं सुरक्षित रखें।

15. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) अपने जिले कार्यक्रम तैयार कर उक्त प्रतियोगितार्थ जिला स्तर पर उच्च प्राथमिक विद्यालयों की टीमों को शामिल करने हेतु आदेश की प्रति अपने जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक) व ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी को भी पर्याप्त समय पूर्व भिजवाए।

16. 32 वीं राज्य स्तरीय (15 वर्ष छात्र) नेहरू हॉकी प्रतियोगिता 2014-15 के प्रथम चार स्थान के परिणाम इस प्रकार हैः- 1. अलवर 2. सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर 3. श्रीगंगानगर 4. हनुमानगढ़

17. सब जूनियर नेहरू हॉकी (15 वर्ष छात्र) प्रतियोगिता हेतु जिला एवं राज्य स्तर पर प्रत्येक दल में खिलाड़ियों की संख्या 16 होगी।

(सुवालाल) निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/मा/खेलकूद-3/35102/2015-16/नेहरु हॉकी/6-8 दिनांक : 22-7-15

11. सत्र 2015-16 की 60 वीं जिला, राज्य स्तरीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक (17 व19 वर्ष आयु वर्ग) विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु प्रतियोगिता पंचांग आवश्यक निर्देशों सहित अनुपालनार्थ

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • कार्यालय आदेश • सत्र 2015-16 की 60 वीं जिला, राज्य स्तरीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक (17 व19 वर्ष आयु वर्ग) विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु प्रतियोगिता पंचांग आवश्यक निर्देशों सहित अनुपालनार्थ प्रसारित किया जाता है। समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को निर्देशित किया जाता है कि अपने अधीनस्थ विद्यालयों में पंचांग एवं निर्देशों को अविलम्ब प्रसारित करें।

विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन हेतु निम्नानुसार खेल समूह बनाये गये हैः-

प्रथम समूह			द्वितीय समूह		
फुटबॉल	17,19 वर्ष	छात्र	तीरंदाजी (इण्डियन राउण्ड व फीटा राउण्ड)	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
जिम्नास्टिक	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा	बेडमिन्टन	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
हैण्डबाल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा	बास्केटबॉल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
हॉकी	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा	क्रिकेट	17,19 वर्ष	छात्र
जूडो	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा	खो-खो	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
सॉफ्टबाल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा	लॉन टेनिस	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
तैराकी	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा	टेबल टेनिस	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
वॉलीबाल	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा	कबड्डी	17,19 वर्ष	छात्र-छात्रा
कुश्ती	17,19 वर्ष	छात्र	-	-	-

तृतीय समूह

एथलेटिक्स	17 एवं 19 वर्ष	छात्र-छात्रा

प्रतियोगिता निम्न तिथियों के अनुसार ही आयोजित की जावेः-

समूह	विद्यालय	जिला स्तर	राज्य स्तर
प्रथम समूह	17.08.2015 से पूर्व	01.09.15 से 05.09.15 के मध्य (अधिकतम चार दिन)	11.09.15 से 16.09.15 तक
द्वितीय समूह	17.08.2015 से पूर्व	05.09.15 से 09.09.15 के मध्य (अधिकतम चार दिन)	19.09.15 से 24.09.15 तक
तृतीय समूह	17.08.2015 से पूर्व	05.10.15 से 08.10.15 तक	15.10.15 से 20.10.15 तक

निम्नांकित खेल की राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता माह सितम्बर/अक्टूबर में आयोजित होने के कारण उक्त समूहों की प्रतियोगिता तिथियां निम्नानुसार होगीः-

खेल का नाम	विद्यालय स्तर	जिला स्तर	राज्य स्तर
1. फुटबॉल 19 वर्ष छात्र	09.8.2015 से पूर्व	09.08.2015 से 12.08.2015 तक	19.08.2015 से 24.08.2015
2. लॉन टेनिस 17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	09.08.2015 से पूर्व	09.08.2015 से 12.08.2015 तक	19.08.2015 से 24.08.2015
3. टेबल टेनिस 17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	09.08.2015 से पूर्व	09.08.2015 से 12.08.2015 तक	19.08 2015 से 24.08.2015
4. हैण्डबॉल 17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	09.08.2015 से पूर्व	09.08.2015 से 12.08.2015 तक	19.08.2015 से 24.08.2015
5. कबड्डी 17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	09.08.2015 से पूर्व	09.08.2015 से 12.08.2015 तक	19.08.2015 से 24.08.2015

साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियां कार्यक्रम विद्यालय /क्षेत्रीय/जिला स्तर तक का आयोजन विभागीय खेलकूद नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 के अनुसार पूर्ववत जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं से पूर्व आयोजित करवायें। दिनांक 29 अगस्त 2015 मेजर ध्यानचंद जयंती को खेल दिवस के रूप में विद्यालय स्तर पर विविध खेलों के आयोजन किये जावें।

सत्र 2015-16 की 60 वीं राज्य स्तरीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक 17 वर्ष एवं 19 वर्ष आयुवर्ग विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिता आयोजक विद्यालयों के नाम व स्थान परिशिष्ट 1 व 2 पर संलग्न हैं।

उल्लेखनीय हैं कि वर्ष 2008-2009 में खेलकूद प्रतियोगिताओं के नियमों में परिवर्तन/परिवर्द्धन के संबंध में विस्तृत आदेश, क्रमांकः शिविरा-माध्य/खेलकूद/निजी/35427/05-06/108 दिनांक 04-7-08 के द्वारा पूर्व में प्रसारित किये जा चुके हैं, यथावत रहेंगे।

सत्र 2015-16 की प्रतियोगिताओं के सफल आयोजन हेतु निम्नांकित निर्देश प्रसारित किये जाते हैंः-

1. सभी अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि निर्धारित तिथियों के मध्य टीमों की संख्या के आधार पर न्यूनतम दिनों का कार्यक्रम तय कर जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं को आयोजित करें परन्तु क्षेत्रीय प्रतियोगिता आवश्यकतानुसार विद्यालयी स्तर की प्रतियोगिता के पश्चात् एवं जिला स्तरीय प्रतियोगिता से पूर्व आयोजित करावें। राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएं निर्धारित तिथियों एवं स्थानों पर निर्धारित विद्यालयों द्वारा आयोजित की जावेगी। तिथियों एवं प्रतियोगिताओं के स्थलों में कोई परिवर्तन नहीं किया जावेगा।
2. सत्र 2015-16 में सभी स्तर की प्रतियोगिताओं में संभागित्व के लिए खिलाड़ियों की जन्म तिथि निम्नानुसार होगीः-
   1. 19 वर्ष आयुवर्ग छात्र-छात्रा के लिए 01.01.1997 या उसके पश्चात् एवं कक्षा 6 से 12 तक नियमित अध्ययनरत।
   2. 17 वर्ष आयुवर्ग छात्र-छात्रा के लिए 01.01.1999 या उसके पश्चात एवं कक्षा 6 से 10 तक नियमित अध्ययनरत।
3. पूर्व की भांति राज्य के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी ही इन प्रतियोगिताओं हेतु पात्र होंगे।
4. शिक्षा विभागीय सभी खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु खिलाड़ी की पात्रता प्रवेश तिथि सभी कक्षाओं के लिए वास्तविक प्रवेश तिथि मान्य होगी।
5. प्रतियोगिता आयोजन के कार्यक्रम को निर्धारित करने (ड्राज डालने) की सुविधा हेतु सत्र 2014-15 में राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता के प्रथम आठ स्थानों के परिणाम परिशिष्ठ-3 से 6 पर संलग्न किये जा रहे है।
6. सभी स्तर की विद्यालयी छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं के आयोजन के समय प्रतियोगिता के संचालन हेतु निदेशालय के आदेश क्रमांक-शिविरा/खेलकूद-3/35101/04-05 दिनांक 20 अगस्त 2005 के अनुसार ही प्रतिनियुक्तियां की जावें। यथा संभव स्थानीय कार्मिकों/अध्यापकों की सेवाएं ली जावें।
7. सत्र 2015-16 की छात्र-छात्रा खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन शिक्षा विभागीय खेलकूद नियमावली एवं मार्गदर्शिका 2005 व उसके पश्चात समय-समय पर नियमों में हुए संशोधन एवं प्रदत्त निर्देशों के अनुरुप ही किया जावे तथा खेलों के नियम संबंधित खेल संघों के जो वर्तमान में संशोधित रूप में लागू है, के अनुरूप ही प्रतियोगिताओं को आयोजित किया जावे, परन्तु विभागीय आदेशों/नियमों को ध्यान में रखते हुए अनुपालना हो।
8. विशिष्ट विद्यालय जैसे सार्दुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर, सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र, शिक्षा विभागीय खेल छात्रावास के विद्यालय, संस्कृत शिक्षा निदेशालय के अधीनस्थ अध्ययनरत खिलाड़ियों का दल, राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद, जयपुर द्वारा संचालित खेल विद्यालय/छात्रावास/अकादमी के दल पूर्व की भांति सीधे ही राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता में भाग ले सकेंगे।
9. राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद, जयपुर द्वारा संचालित खेल विद्यालय/छात्रावास/अकादमी में प्रशिक्षणरत/अध्ययनरत खिलाड़ियों की सूची मय पूर्ण विवरण दिनांक 05.08.2015 तक आवश्यक रूप से वाहक स्तर पर इस कार्यालय को भिजवायें। (खेलवार छात्र सूची निर्धारित प्रारूप में सम्बन्धित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को 03 अगस्त2015 तक प्रस्तुत की जावे; जिससे जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) स्तर पर पूर्ण छानबीन पश्चात् प्रमाणित करते हुए उक्त सूचियां वाहक स्तर पर इस कार्यालय को दिनांकः 05.08.2015 तक भिजवाई जावेगी अन्यथा इन्हें सम्बद्ध खेल की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु ड्राज में सम्मिलित नहीं किया जा सकेगा। जिसका सम्पूर्ण दायित्व सचिव/ अध्यक्ष राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद, जयपुर एवं संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) का होगा।)

10. उक्त विशिष्ट विद्यालयों का दल पूर्ण नहीं होता है तो इन विशिष्ट विद्यालयों के खिलाड़ी एवं अन्य किसी विद्यालय का पूर्व में राष्ट्रीय विद्यालयी प्रतियोगिता में भाग ले चुका श्रेष्ठ खिलाड़ी किसी विशेष कारण से जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सका है तो राज्य स्तरीय चयन समिति के समक्ष उस खिलाड़ी का उक्त सत्र में प्रतियोगिता के समय अपने विद्यालय के संस्था प्रधान का नियमित विद्यार्थी होने का पत्र मय योग्यता प्रमाण पत्र एवं राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में संभागित्व प्रमाण पत्र (केवल पूर्व राष्ट्रीय विद्यालयी खिलाड़ी हेतु) की प्रमाणित छाया प्रति सहित खिलाड़ी स्वयं लेकर उपस्थित होता है तो चयन समिति द्वारा उसका परीक्षण किया जाकर चयन होने की स्थिति में निर्धारित संख्या में ही पूर्व राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर की राज्य स्तर पर तैयार की जाने वाली चयन सूची में सम्मिलित किया जावेगा। ऐसे खिलाड़ी राज्य स्तरीय प्रतियोगिता स्थल पर चयन परीक्षण हेतु प्रतियोगिता समाप्ति से तीन दिन पूर्व प्रातः 11:00 बजे तक प्रतियोगिता आयोजक संस्था प्रधान को उपस्थिति देवें। छात्रा खिलाड़ी महिला प्रभारी के साथ उपस्थिति देवें।

11. सभी सत्रपर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र एवं शिक्षा विभागीय खेल छात्रावासों के संस्था प्रधानों को निर्देशित किया जाता है कि सत्र 2015-16 की राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में खेल विशेष हेतु प्रशिक्षण योजनान्तर्गत चयनित खिलाड़ियों में से ही अपने दल का गठन करे। विद्यालय के अचयनित खिलाड़ियों को सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र/खेल छात्रावास के दल में सम्मिलित नहीं किया जावे। शिक्षा विभाग का विशिष्ट विद्यालय सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर के अन्तर्गत प्रवेश लिए खिलाड़ी संबंधित खेल में सीधे ही राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेंगे, एथलेटिक्स के छात्र अन्य खेलों में भी भाग ले सकते हैं, अन्य खेलों के छात्र एथलेटिक्स में भी भाग ले सकते हैं। इस हेतु विभाग द्वारा राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने पर ही राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेंगे। सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर के डे-स्कॉलर विद्यार्थियों का अलग से गठन कर अन्य सामान्य विद्यार्थियों के छात्र दलों की तरह जिला स्तरीय प्रतियोगिता में दल भिजवाया जा सकता है। डे-स्कॉलर को सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर की छात्रावासी खिलाड़ियों के चयनित दल में शामिल नहीं किया जावे।

12. सत्र 2003-04 से राज्य सरकार के पत्र क्रमांक प.16()शिक्षा-6/2002 दिनांक 7.1.2003 की अनुपालना में वर्तमान प्रतियोगिता शुल्क के नियमान्तर्गत संस्कृत शिक्षा के लिए जिले के सभी विद्यालयों से कुल छात्र-छात्रा संख्या के अनुसार सामान्य वर्ग से 5/- एवं आरक्षित वर्ग से 2/- प्रति छात्र-छात्रा की दर से एकत्रित राशि का 50% (प्रतिशत) राशि राज्य के समस्त संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) नॉडल अधिकारी को प्रतियोगिताओं के आयोजन से पूर्व जमा करवाने की शर्त पर संस्कृत शिक्षा के खिलाड़ियों को 19 वर्ष एवं 17 वर्ष आयुवर्ग के छात्र वर्ग के निम्न खेलोः- **वॉलीबाल, फुटबाल, कबड्डी, खो-खो, बेडमिंटन व कुश्ती** (शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित वजनवार) में एवं **एथलेटिक्स 19** वर्ष एवं 17 वर्ष छात्र वर्ग के राज्य स्तर पर होने वाले इवेन्ट्स में निदेशालय संस्कृत शिक्षा, राजस्थान को भी विशिष्ट विद्यालयों की भांति पृथक इकाई मानते हुए राज्य स्तर पर सीधे भाग लेने की स्वीकृति शिक्षा विभागीय नियमान्तर्गत प्रदान की गई है। निदेशालय संस्कृत शिक्षा राजस्थान के 19 वर्ष एवं 17 वर्ष छात्र खिलाड़ियों द्वारा उक्त खेलों में राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में पृथक इकाई के रूप में भाग लेने पर उसकी सूचना आयोजक विद्यालयों के संस्था प्रधान को प्रतियोगिता से 15 दिन पूर्व दी जायेगी। राष्ट्रीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगितार्थ चयन समिति द्वारा शिक्षा विभाग की निर्धारित प्रक्रियानुसार उन्हें चयन प्रक्रिया में शामिल किया जावेगा। यदि संस्कृत शिक्षा के खिलाड़ी का चयन राष्ट्रीय पूर्व प्रशिक्षण शिविर हेतु होता है तो उसका नाम चयन सूची में निर्धारित संख्या में ही शामिल होगा।

13. टेबल टेनिस, बैडमिंटन एवं लॉन टेनिस में दलीय स्पर्धा के साथ-साथ व्यक्तिगत स्पर्धा का आयोजन भी करवाया जाये। 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा के व्यक्तिगत स्पर्धा के आधार पर ही जिले के दल का गठन चयन विधि द्वारा किया जावेगा। दोनों वर्ग 17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा में अच्छे खिलाड़ियों को आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करने हेतु टेबल टेनिस, बैडमिंटन व लॉन टेनिस की दलीय स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाले दलो के दो खिलाड़ी एवं सेमीफाइनल में पहुंचने वाले दलों के 5 खिलाड़ी व्यक्तिगत स्पर्धा में भाग लेंगे। अन्य दलों से पूर्व की भांति 01 ही खिलाड़ी व्यक्तिगत स्पर्धा में भाग ले सकेगा। व्यक्तिगत स्पर्धा हेतु ड्राज डालते समय अच्छे खिलाड़ी को सीडिंग दी जावे। इनकी ड्राज दलीय स्पर्धा में सेमी फाइनल में पहुँचने वाले दलों के निर्धारण होने के बाद डाली जावे। क्वार्टर फाइनल में पहुंचने वाले दलों के 2 खिलाड़ियों एवं सेमीफाइनल में पहुंचने वाले दलों के 5 खिलाड़ियों के नाम व्यक्तिगत क्रमानुसार प्रभारी से लिखित में लिये जावे। उसके बाद सीडिंग देकर ड्राज डाली जावे। ड्राज डालते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जावे कि सेमी फाईनल में पहुंचने वाले दलों के प्रथम वरीयता वाले खिलाड़ियों का सेमीफाइनल से पहले मैच न हो सके। टेनिस प्रतियोगिता के क्वार्टर फाइनल से पूर्व के मैचों में बेस्ट ऑफ 13 गेम, क्वार्टर फाइनल व सेमी फाइनल में बेस्ट ऑफ 17 गेम तथा फाइनल में बेस्ट ऑफ 3 सैट द्वारा निर्णय किया जाये।

14. खिलाड़ी संख्या जो जिला स्तर पर निर्धारित है वही संख्या उनके लिए राज्य स्तरीय तथा राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता में लागू होगी। **सुविधा की दृष्टि से सभी स्तरों पर संभागी खिलाड़ियों की संख्या सत्र 2015-16 में निम्न प्रकार से होगीः-**

खेल का नाम	सीमावि स्तर (19 वर्ष छात्र-छात्रा)		मावि स्तर (17 वर्ष छात्र-छात्रा)	
	जिला स्तर	राज्य/राष्ट्रीय स्तर	जिला स्तर	राज्य/राष्ट्रीय स्तर
तैराकी	प्रत्येक इवेंट में दो	प्रत्येक इवेंट में दो	प्रत्येक इवेंट में दो	प्रत्येक इवेंट में दो

वॉलीबाल	12	12	12	12
हैण्डबाल	16	16	16	16
हॉकी	18	18	18	18
सॉफ्टबॉल	16	16	16	16
फुटबॉल(छात्र)	18	18	18	18
जूडो	वजनवार जूडोका-1	वजनवार जूडोका-1	वजनवार जूडोका-1	वजनवार जूडोका-1
कुश्ती	वजनवार पहलवान-1	वजनवार पहलवान-1	वजनवार पहलवान-1	वजनवार पहलवान-1
जिम्नास्टिक	07	07	07	07
बास्केटबॉल	12	12	12	12
क्रिकेट (छात्र)	16	16	16	16
बैडमिंटन	05	05	05	05
टेबल टेनिस	05	05	05	05
कबड्डी	12	12	12	12
खो-खो	12	12	12	12
लॉन-टेनिस	05	05	05	05
तीरंदाजी (इण्डियन राउण्ड)	04	04	04	04
तीरंदाजी (फीटा राउण्ड)	04	04	04	04
एथलेटिक्स	प्रत्येक इवेंट में दो	प्रत्येक इवेंट में दो	प्रत्येक इवेंट में दो	प्रत्येक इवेंट में दो

नोटः एथलेटिक्स एवं तैराकी में प्रत्येक रिले में खिलाड़ियों की संख्या चार होगी।

15. एथलेटिक्स व तैराकी 19 व 17 वर्ष आयुवर्ग की छात्र-छात्राओं द्वारा व्यक्तिगत स्पर्धा में विभाग द्वारा निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले प्रथम व द्वितीय, रिले में समय के आधार पर श्रेष्ठ चार, कुश्ती व जूडो के प्रत्येक भार में केवल प्रथम आने वाला, तीरंदाजी (इण्डियन व फीटा राउण्ड) में कुल अंकों के 30 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त कर मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी व जिम्नास्टिक में कुल अंकों के 40 प्रतिशत अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त कर मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी वरीयतानुसार निर्धारित संख्या में राज्य स्तर पर भाग लेंगे। निर्धारित मानदण्ड पूर्ण नहीं करने वाले खिलाड़ियों को उक्त खेलों की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में नहीं भिजवाया जावे। यह सुनिश्चित करने का दायित्व संबंधित जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-नोडल अधिकारी), शिविराधिपति, टीम प्रभारी एवं प्रशिक्षक का होगा। जिम्नास्टिक की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में कुल 40 प्रतिशत अंक प्राप्त कर निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी को ही मेरिट/भाग लेने का प्रमाण पत्र देय होगा। तीरंदाजी (इण्डियन व फीटा राउण्ड) की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में कुल 30 प्रतिशत अंक प्राप्त कर निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने वाले खिलाड़ी को ही भाग लेने का प्रमाण पत्र देय होगा लेकिन मेरिट प्रमाण पत्र के लिए न्यूनतम 40 प्रतिशत अंकों की बाध्यता यथावत रहेगी। दलीय स्पर्धाओं में भी दल द्वारा निर्धारित मानदण्ड पूर्ण करने पर दल के सभी सदस्यों को स्मरण/मेरिट प्रमाण पत्र दिए जावेंगे। राज्य स्तर पर निर्धारित मानदण्ड पूर्ण नहीं करने वाले खिलाड़ियों को भाग लेने/मेरिट प्रमाण पत्र नहीं दिये जावे। आदेश की अवहेलना करने वाले अधिकारी/कार्मिक के विरुद्ध खेलकूद प्रतियोगिता नियमावली, 2005 के बिन्दु संख्या 10.2.06 के अनुसार कार्यवाही की जावेगी।

16. खिलाड़ी, शारीरिक शिक्षक एवं संस्था प्रधान पात्रता/योग्यता प्रमाण पत्र का भली-भाँति मिलान करें। संस्था प्रधान की जन्मतिथि, नाम, पिता का नाम, प्रवेशांक (स्कॉलर) रजिस्टर से मिलान करने के पश्चात छात्र-छात्रा के पात्रता/योग्यता प्रमाण पत्र को प्रमाणित करें। खेल में भाग लेने/मेरिट प्रमाण पत्र संस्था प्रधान द्वारा प्रमाणित योग्यता प्रमाण पत्र के आधार पर ही तैयार किये जाते हैं। अतः बाद में इन प्रमाण पत्रों में दर्शाई गई जन्मतिथि, नाम आदि में परिवर्तन किया जाना संभव नहीं होगा।

17. विद्यालय/जिलों की टीमों के साथ आने वाले शारीरिक शिक्षक/प्रशिक्षक को निर्णायक रूप में नियुक्त किया जाता है तो सम्बन्धित शारीरिक शिक्षक निर्णायक रूप में कार्य करेगा। आदेशों की अवहेलना करने वाले के विरुद्ध कार्यवाही की जावेगी।

18. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) जिला स्तरीय आयुवर्ग खेल प्रतियोगिताओं के समेकित परिणाम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता से पूर्व निम्न प्रारूप में उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को निश्चित रूप से भिजवायेंः-

क्र. सं.	खेल का नाम	प्रति. स्थल का नाम	प्रति. अवधि	प्रथम तीन स्थानो के परिणाम (विद्यालय के नाम सहित)	संभागी टीमों की संख्या	कुल खिलाड़ी संख्या	निर्णायकों की संख्या	अन्य कार्मिकों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8	9

गत वर्षों में यह देखने में आया है कि कतिपय जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा ही उक्त सूचना भेजी जाती है। अतः भविष्य में सभी जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा उक्त निर्धारित प्रपत्र में सूचना भिजवाना सुनिश्चित किया जावें।

19. खेलकूद प्रतियोगिता शुल्क गत सत्रों के अनुसार सभी विद्यालयों से निम्न दरों के अनुसार वसूला जावेंः-

सामान्य वर्ग 05 रुपये प्रति छात्र-छात्रा

आरक्षित वर्ग(अनु.जाति, अनु. जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग) 02 रुपये प्रति छात्र-छात्रा

उक्त प्रतियोगिता शुल्क की कुल संग्रहीत राशि में से 40 प्रतिशत राशि राष्ट्रीय प्रतियोगिता हेतु अपने अपने जिलों में आरक्षित रखें। उक्त राशि निदेशालय के आदेशानुसार ही उपयोग में ली जावेगी। शेष रही 60 प्रतिशत राशि का व्यय करने के संबंध में खेलकूद नियमावली 2005 में प्रदत्त निर्देशानुसार कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी। संग्रहित की गई राशि की सूचना निर्धारित प्रपत्र में सत्र में दो

बार दिनांक 30-9-2015 एवं 31-3-2016 तक सभी जिला शिक्षा अधिकारी (मा) अनिवार्यतः उप निदेशक (खेलकूद एवं शारीरिक शिक्षा) माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर को भिजवाएंगे। उक्त प्रतियोगिता शुल्क की राशि राजकीय राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त गैर सरकारी/निजी एवं अनुदान प्राप्त समस्त शिक्षण संस्थाओं द्वारा माध्यमिक/उच्च माध्यमिक स्तर तक के समस्त विद्यालयों को भुगतान करना अनिवार्य है, चाहे विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेता हो अथवा नहीं। प्रतियोगिता शुल्क का भुगतान नहीं करने वाले विद्यालयों पर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-नोडल) अपने स्तर पर नियमानुसार कार्यवाही करें।

20. प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित होने वाली जिला स्तरीय उच्च प्राथमिक विद्यालयी खेलकूद छात्र-छात्रा प्रतियोगिता में यदि माध्यमिक/ उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 6 से 8 तक के छात्र-छात्रा खिलाड़ी भाग लेते है तो उक्त प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों की संख्या के आधार पर 5 रुपये (पाँच रुपये) प्रति खिलाड़ी की दर से, जिसके अन्तर्गत सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग सम्मिलित है, के आधार पर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वारा अपने जिले की समस्त विद्यालयों से ली गयी प्रतियोगिता शुल्क की 60 प्रतिशत राशि में से जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक) को राशि जमा करवायेंगे। उक्त आदेश प्रारंभिक शिक्षा राज., बीकानेर के पत्रांक शिविरा/प्रारं/खेकू/स्वाशि/7509/पंचांग/ 71 दिनांकः 27.8.01 के अनुसार इस कार्यालय के पत्रांक- शिविरा/मा/खेलकूद-35101/वार्षिक पंचांग/2001-02/26 दिनांक 30.08.2001 से जारी किया जा चुका है।

21. **जिला एवं राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों के भाग लेने/मेरिट प्रमाण पत्र प्रतियोगिता स्थल पर खिलाड़ी को अनिवार्यतः वितरित किया जावें। संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी एवं उपनिदेशक इस ओर विशेष ध्यान देते हुए इसकी पालना सुनिश्चित करें।** प्रमाण पत्र खिलाड़ी के योग्यता प्रमाण पत्र के फोटो से मिलान करने के पश्चात खिलाड़ी के प्रतिपर्ण पर हस्ताक्षर लेकर उपस्थित खिलाड़ी को ही दिया जावे। अनुपस्थित खिलाड़ी के प्रमाण पत्र को अन्य किसी को नहीं दिया जावे। प्रमाण पत्र पर क्रमांक छपवाने अनिवार्य है तथा प्रमाण पत्र का प्रतिपर्ण गत सत्रों की भांति छपाया जावे एवं अभिलेख में सुरक्षित रखा जावे। मेरिट प्रमाण पत्र प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को ही दिया जावे। मेरिट प्रमाण पत्र प्राप्त करने वाले खिलाड़ी को स्मरण प्रमाण पत्र भी दिया जावे। व्यक्तिगत एवं दलीय स्पर्धा में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को भी मेरिट प्रमाण पत्र दिया जावे। कुश्ती व जूडो में तृतीय स्थान का मेरिट प्रमाण पत्र रेपीचार्ज पद्धति के आधार पर दो खिलाड़ियों को देय होगा।

22. तैराकी, कुश्ती, जूडो, जिम्नास्टिक, लॉन टेनिस एवं तीरंदाजी 19 वर्ष एवं 17 वर्ष आयुवर्ग की राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएं खेलानुसार एक ही स्थान पर आयोजित होती है, जिसमें जिले के सभी आयु वर्ग के छात्र-छात्रा एक ही स्थान पर भाग लेते है। जिस जिले में दो जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) है, प्रतियोगिता स्थल पर दल के साथ जाने वाले दल नायक, प्रशिक्षक, शा. शिक्षक के आदेश जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) नॉडल अधिकारी द्वारा प्रसारित किये जावे। छात्रा दल के साथ महिला अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक/शिक्षक/महिला प्रभारी को ही लगाया जावे। अपरिहार्य कारणों से महिला अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक के स्थान पर पुरुष अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक को लगाया जाता है तो प्रतियोगिता आयोजक द्वारा प्रतियोगिता स्थल पर पुरुष अधिकारी/प्रशिक्षक/शारीरिक शिक्षक आदि की एवं छात्रा खिलाड़ियों के आवास की व्यवस्था अलग-अलग स्थानों पर की जावे। **यह ध्यान रखा जावें कि छात्रा टीम के साथ महिला प्रभारी अनिवार्य भेजी जावे। यह सुनिश्चित करना कि छात्राओं के साथ महिला प्रभारी भेजी गयी है या नहीं, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) का उत्तरदायित्व होगा।** जिला स्तरीय प्रतियोगिता स्थलों पर निर्णायक मंडल/चयन समिति में निर्धारित संख्यानुसार ही शारीरिक शिक्षकों को लगाया जावे। इस हेतु प्रतिनियुक्ति आदेश जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) के हस्ताक्षरों द्वारा ही जारी किये जावे। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में कार्यरत अधीनस्थ अधिकारी/उप जिला शिक्षा अधिकारी (शा.शि.) द्वारा प्रतिनियुक्ति आदेश अलग से प्रसारित नहीं किये जावे।

23. **S.G.F.I. (स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया) द्वारा कुश्ती, जूडो, कबड्डी एवं एथलेटिक्स प्रतियोगिता हेतु गत सत्र से वजन निर्धारण एवं इवेन्ट केटेगरी के नये मानदण्ड निर्धारित किये हैं, जिसकी प्रति आपको इस कार्यालय के पत्र दिनांक 14.08.2012 के द्वारा भेजी जा चुकी है। अतः जिला/राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं को इसी अनुरूप सम्पन्न करावें। निर्धारित मानदण्ड परिशिष्ट 9 पर संलग्न हैं।**

24. एथलेटिक्स एवं तैराकी में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित स्पर्धा के अनुसार ही जिला/राज्य स्तर पर प्रतियोगिताओं में स्पर्धाएं करवायें। इस हेतु निर्धारित स्पर्धा एवं इन स्पर्धाओं हेतु निर्धारित मानदण्ड परिशिष्टः- **7 से 8** संलग्न है।

25. निदेशालय पृथक्कीकरण के पश्चात जिन जिलों में दो जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) कार्यरत है उन जिलों से राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में एक ही दल भाग ले सकेगा। जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित करवाने हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) नॉडल अधिकारी होंगें।

26. जयपुर जिले से पूर्व की भाँति राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में खिलाड़ियों के दो दल भाग ले सकेंगे। छात्रा खिलाड़ियों का एक ही दल राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेगा। छात्रा खिलाड़ियों का जिला स्तरीय प्रतियोगिता हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) नॉडल अधिकारी होगें।

27. चयन समिति द्वारा पूर्व राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर हेतु जो सूची बनाई जाती है वह प्रतियोगिता स्थल पर घोषित नहीं की जावे।

28. राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में अधिक आयु के खिलाड़ियों को खेलने से रोकने तथा निर्धारित आयु के खिलाड़ियों को खेल का पर्याप्त अवसर देने हेतु राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं के आरम्भ से एक दिन पूर्व आयोजकों द्वारा गठित अधिकृत मेडिकल बोर्ड द्वारा सभी संभागियों का आयु सम्बन्धी मेडिकल परीक्षण करवाया जावेगा। इस हेतु समस्त सम्भागियों को प्रतियोगिता आरम्भ से एक दिन पूर्व प्रातः 10:00 बजे तक प्रतियोगिता स्थल पर उपस्थिति देनी होगी। अन्यथा दल प्रतियोगिता से वंचित होंगे।
29. सभी खेलों में संबंधित खेल फेडरेशन के नवीनतम नियम मान्य होंगे परन्तु आयोजन की दृष्टि से टाई ब्रेक, समय, सैट आदि के सम्बन्ध में शिक्षा विभागीय नियम मान्य होंगे। लीग प्रणाली तथा लीग-कम-लीग अर्थात् सुपर लीग प्रणाली से खेले जाने वाले सभी खेलों के मैचों में विजेता दल को 2 अंक व पराजित दल को 0 अंक एवं बराबर रहने वाले दलो को 1-1 अंक दिया जावेगा। विद्यालयी जिला/राज्य स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में लीग, लीग-कम-लीग अर्थात सुपर लीग प्रणाली से खेले गये समस्त खेलों के मैचों में टाई पड़ जाने अर्थात् अंकों के आधार पर खेल परिणाम बराबर रह जाये तो टाई निम्नानुसार तोड़ी जावेः-

    मैच जब पहली लीग प्रणाली या लीग-कम-लीग प्रणाली पर खिलायें और दल बराबर रह जाते हैं तो प्राप्त गोल/स्कोर/सेट के औसत को आधार मान कर टाई तोड़ी जावे। गोल/स्कोर/सेट का तात्पर्य है ''जिस दल के पक्ष में जितने गोल/स्कोर/सेट हुए है उनमें से उसी दल के विपक्ष में हुए गोल/स्कोर/सेट का अन्तर निकाल कर टाई तोड़ी जावे। यदि इस पद्धति से निर्णय की स्थिति न बन पाये तो जिस दल के पक्ष में अधिक संख्या में गोल/स्कोर/सेट रहे, उसे ही विजेता घोषित किया जावे, परन्तु यह गणना प्रत्येक स्तर के क्रम में अर्थात् लीग के लिए अलग तथा लीग-कम-लीग (सुपरलीग) के लिए अलग-अलग लागू होगी, दूसरे शब्दों में पहले लीग मैचेज के रहे परिणाम लीग कम लीग प्रणाली (सुपरलीग) में लागू नहीं होंगे। लीग या सुपर लीग प्रणाली से खेले जाने वाले मैचों में टीमों की संख्या दो (2) ही रह जाये या दो ही हो तो नॉक आउट प्रणाली की भाँति उस मैच का खेल विशेष के अनुसार परिणाम निकाल कर आगामी मैच के लिए दल का निर्धारण किया जावेगा।
30. विद्यालयी/क्षेत्रीय/जिला/राज्य स्तरीय विद्यालयी कुश्ती/जूडो में जिस केटेगरी/वजन के लिए जिस खिलाड़ी का चयन किया गया है,चयन परीक्षण भी उसी केटेगरी/वजन के खिलाड़ियों का आयोजित कर वजनवार दल गठन किया जावे एवं उसी वजन/केटेगरी में ही वह खिलाड़ी क्षेत्रीय/जिला/राज्य/राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेगा।
31. एथलेटिक्स में प्रत्येक इवेंट (दौड़ के अलावा) में खिलाड़ी को तीन-तीन अवसर दिये जाएंगे।
32. एथलेटिक्स एवं तैराकी की चैम्पियनशिप हेतु **रिले** में प्रथम द्वितीय व तृतीय को क्रमशः 10-6-3 अंक तथा अन्य स्पर्धाओं हेतु 5-3-1 अंक दिये जाएंगे।
33. 17 व 19 वर्ष आयु वर्ग के छात्र-छात्रा टीम खेल व व्यक्तिगत खेलो में राज्य स्तरीय प्रतियोगिता से पूर्व जिला स्तरीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जावें।
34. टीमों के अभिलेख, ध्वज आदि प्रतियोगिता स्थल पर ले जाने/जमा करवाने का उत्तरदायित्व संबंधित टीम/दल के दलाधिपति/दलनायक का होगा।

संलग्नः- उपरोक्तानुसार • सुवालाल निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक-शिविरा/मा./खेलकूद -3/35101/वार्षिक पंचांग/2015-16/दिनांकः- 22-7-2015

परिशिष्ट-1

60 वीं राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद (17 व 19 वर्ष छात्र-छात्रा) प्रतियोगिता वर्ष 2015-16 के आयोज्य विद्यालयों के नाम व स्थानों का विवरण

विशेष प्रथम समूह दिनांक 19-08-15 से 24-08-2015 तक

क्र. सं.	खेल का नाम	वर्ग	प्रतियोगिता आयोजन स्थल
1.	फुटबॉल	19 वर्ष छात्र	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नोहर (हनुमानगढ़)
2.	टेबल टेनिस	17,19 वर्ष छात्र	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सुभाष नगर भीलवाड़ा
3.	टेबल टेनिस	17,19 वर्ष छात्रा	संवित शिक्षण संस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय गांधी नगर, बीकानेर
4.	हैण्डबॉल	17,19 वर्ष छात्र	राजकीय माध्यमिक विद्यालय हाऊसिंग बोर्ड, पाली
5.	हैण्डबॉल	17,19 वर्ष छात्रा	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, निवाई (टोंक)
6.	कबड्डी	17,19 वर्ष छात्र	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिशुरानोली (सीकर)
7.	कबड्डी	17,19 वर्ष छात्रा	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, भीनमाल (जालोर)
8.	लॉन टेनिस	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, करनपुर (उदयपुर)

प्रथम समूह दिनांक 11-09-2015 से 16-09-2015 तक

1.	फुटबॉल	17 वर्ष छात्र	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, स्टेशन रोड, बारां
2.	जिम्नास्टिक	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	राजकीय माध्यमिक विद्यालय, रेलवे भरतपुर
3.	हॉकी	17 वर्ष छात्र	राजकीय माध्यमिक विद्यालय, भाटकड़ा (सिरोही)
4.	हॉकी	19 वर्ष छात्र	श्री गुरुनानक खालसा उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्रीगंगानगर

5.	हॉकी	17 वर्ष छात्रा	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, परबतसर (नागौर)
6.	हॉकी	19 वर्ष छात्रा	भारतीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रींगस (सीकर)
7.	जूडो	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	राजकीय माध्यमिक विद्यालय, नई हवेली, नाथद्वारा (राजसमन्द)
8.	सॉफ्टबॉल	17,19 वर्ष छात्र	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पुलिस लाईन, अजमेर
9.	सॉफ्टबॉल	17,19 वर्ष छात्रा	प्रियदर्शिनी पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, इन्दिरा कॉलोनी, बीकानेर
10.	तैराकी	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भुवाणा, उदयपुर
11.	वॉलीबाल	17,19 वर्ष छात्र	ज्योतिबा फुले उच्च माध्यमिक विद्यालय, करौली
12.	वॉलीबाल	17,19 वर्ष छात्रा	ग्रामोत्थान विद्यापीठ बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय संगरिया(हनुमानगढ़)
13.	कुश्ती	17,19 वर्ष छात्र	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मोहनपुरा कोटपूतली (जयपुर)

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया, उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

परिशिष्ट-2

द्वितीय समूह दिनांक 19-09-2015 से 24-09-2015 तक

क्र. सं.	खेल का नाम	वर्ग	प्रतियोगिता आयोजन स्थल
1.	तीरंदाजी	17,19 वर्ष छात्र-छात्रा	राजकीय नूतन उच्च माध्यमिक विद्यालय, बांसवाड़ा
2.	बेडमिंटन	17,19 वर्ष छात्र	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय महावीर नगर-III, कोटा
3.	बेडमिंटन	17,19 वर्ष छात्रा	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, महामन्दिर, जोधपुर
4.	बास्केटबाल	17,19 वर्ष छात्र	राजकीय प्रताप उच्च माध्यमिक विद्यालय, अलवर
5.	बास्केटबाल	17,19 वर्ष छात्रा	अन्तरी देवी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बाड़मेर
6.	क्रिकेट	17 वर्ष छात्र	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मनोहरपुर(जयपुर)
7.	क्रिकेट	19 वर्ष छात्र	मौलाना अबुल कलाम आजाद मुस्लिम उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोधपुर
8.	खो-खो	17,19 वर्ष छात्र	राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, दुर्गापुरा जयपुर
9.	खो-खो	17,19 वर्ष छात्रा	महिला विद्यापीठ, मीरा निकेतन कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर (चुरू)

तृतीय समूह दिनांक 15-10-2015 से 20-10-2015 तक

क्र. सं.	खेल का नाम	वर्ग	प्रतियोगिता आयोजन स्थल
1.	एथलेटिक्स	17,19 वर्ष छात्र	मेजर नटवर सिंह राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चित्तौड़गढ़
2.	एथलेटिक्स	17,19 वर्ष छात्रा	राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, झालावाड़

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया, उपनिदेशक(खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

परिशिष्ट-3

राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता 2014-15 के प्रथम आठ स्थानों के परिणाम (19 वर्ष छात्र)

खेल का नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठम	सप्तम	अष्ठम
बास्केटबाल	बाडमेर	जयपुर-1	सीकर	भीलवाड़ा	श्रीगंगानगर	अजमेर	सीकर	झुंझुनूं
क्रिकेट	जयपुर	जोधपुर	हनुमानगढ़	कोटा	श्रीगंगानगर	अलवर	सीकर	भीलवाड़ा
फुटबाल	जयपुर-।	सत्र पर्यन्त नोहर	हनुमानगढ़	जोधपुर	जोधपुर अकादमी	सीकर	उदयपुर	नागौर
हैण्डबाल	श्रीगंगानगर	जोधपुर	अजमेर	चितौडगढ़	अलवर	नागौर	कोटा	सीकर
हॉकी	एस.एस.एस बीकानेर	अलवर	भीलवाड़ा	झुंझुनूं	श्रीगंगानगर	हनुमानगढ़	जोधपुर	अजमेर
कबड्डी	भरतपुर	चुरू	नागौर	सीकर	जयपुर-।	श्रीगंगानगर	अजमेर	हनुमानगढ़
खो-खो	जयपुर-।	एस.एस.एस. बीकानेर	हनुमानगढ़	अजमेर	जयपुर-।।	बीकानेर	चित्तौड़गढ़	श्रीगंगानगर
सॉफ्टबॉल	जयपुर-।।	जोधपुर	श्रीगंगानगर	पाली	अजमेर	हनुमानगढ़	सिरोही	बाडमेर
वॉलीबॉल	हनुमानगढ़	झुंझुनूं	भीलवाड़ा	एस.एस.एस. बीकानेर	सीकर	श्रीगंगानगर	उदयपुर	जयपुर-।

बेडमिंटन (दलीय)	जयपुर-।	बीकानेर	कोटा	सिरोही	राजसमन्द	जोधपुर	अजमेर	भीलवाड़ा
लॉन टेनिस (दलीय)	जयपुर-।	अजमेर	उदयपुर	नागौर	जोधपुर	श्रीगंगानगर	झुंझुनूं	अलवर
टेबल टेनिस (दलीय)	जोधपुर	एस.एस.एस. बीकानेर	चूरु	जयपुर-।	भीलवाड़ा	कोटा	अजमेर	स.माधोपुर

एस.एस.एस. बीकानेर- सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर। स.प.- सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया
उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

परिशिष्ट-4

राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता 2014-15 के प्रथम आठ स्थानों के परिणाम(17 वर्ष छात्र)

खेल का नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठम	सप्तम	अष्ठम
बास्केटबाल	अजमेर	जयपुर-।	जैसलमेर एकेडमी	जोधपुर	नागौर	कोटा	हनुमानगढ़	भीलवाड़ा
क्रिकेट	उदयपुर	भीलवाड़ा	जोधपुर	बीकानेर	बाड़मेर	श्रीगंगानगर	कोटा	अजमेर
फुटबाल	अजमेर	श्रीगंगानगर	नागौर	उदयपुर	जयपुर-।	सीकर	अलवर	स.माधोपुर
हैण्डबाल	हनुमानगढ़	भीलवाड़ा	जोधपुर	कोटा	चुरू	अजमेर	झुंझुनूं	नागौर
हॉकी	अलवर	श्रीगंगानगर	भीलवाड़ा	अजमेर	झुंझुनूं	उदयपुर	हनुमानगढ़	डूंगरपुर
कबड्डी	चुरू	एस.एस.एस. बीकानेर	हनुमानगढ़	अजमेर	जैसलमेर	झुंझुनूं	अलवर	अकादमी करौली
खो-खो	हनुमानगढ़	अजमेर	जयपुर-।	जोधपुर	भीलवाड़ा	सीकर	पाली	नागौर
सॉफ्टबॉल	अजमेर	जोधपुर	सीकर	बूंदी	चुरू	उदयपुर	हनुमानगढ़	नागौर
वॉलीबॉल	झुंझुनूं	चुरू	भीलवाड़ा	नागौर	श्रीगंगानगर	हनुमानगढ़	उदयपुर	जयपुर-।
बैडमिंटन (दलीय)	राजसमंद	उदयपुर	पाली	कोटा	जयपुर-।	बारां	अजमेर	भरतपुर
लॉन टेनिस (दलीय)	बीकानेर	अजमेर	झुंझुनूं	कोटा	चित्तौड़गढ़	जोधपुर	जयपुर-।	अलवर
टेबल टेनिस (दलीय)	अजमेर	जयपुर-।	चुरू	पाली	जोधपुर	नागौर	सीकर	झुंझुनूं

एस.एस.एस. बीकानेर- सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर। स.प.- सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया
उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

परिशिष्ट-5

राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता 2014-15 के प्रथम आठ स्थानों के परिणाम (19 वर्ष छात्रा)

खेल का नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठम	सप्तम	अष्ठम
बास्केटबाल	अजमेर	जयपुर	भीलवाड़ा	कोटा	उदयपुर	जोधपुर	जयपुर एकेडमी	टोंक
हैण्डबाल	जयपुर अकादमी	चुरू	श्रीगंगानगर	सीकर	नागौर	बाडमेर	भीलवाड़ा	जोधपुर
हॉकी	महिला हॉकी एकेडमी अजमेर	सीकर	अजमेर	जोधपुर	नागौर	श्रीगंगानगर	चुरू	जयपुर
कबड्डी	नागौर	श्रीगंगानगर	सीकर	चुरू	हनुमानगढ़	झुंझुनूं	भीलवाड़ा	जयपुर

खो-खो	अलवर	जयपुर	हनुमानगढ़	सीकर	श्रीगंगानगर	भीलवाड़ा	चुरू	अजमेर
सॉफ्टबाल	हनुमानगढ़	झुंझुनूं	जोधपुर	बून्दी	उदयपुर	श्रीगंगानगर	जयपुर	बारां
वॉलीबाल	नागौर	हनुमानगढ़	सीकर	झुंझुनूं	अजमेर	भीलवाड़ा	श्रीगंगानगर	जयपुर
बेडमिन्टन (दलीय)	बीकानेर	जोधपुर	अजमेर	कोटा	बाडमेर	भरतपुर	जयपुर	हनुमानगढ़
लॉन टेनिस (दलीय)	अजमेर	झुंझुनूं	हनुमानगढ़	जोधपुर	जयपुर-।	कोटा	श्रीगंगानगर	-
टेबल टेनिस (दलीय)	अजमेर	अलवर	कोटा	बीकानेर	सिरोही	नागौर	सीकर	झुंझुनूं

स.प.- सत्र पर्यन्त प्रशिक्षण केन्द्र

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया
उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

परिशिष्ट-6

राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता 2014-15 के प्रथम आठ स्थानों के परिणाम (17 वर्ष छात्रा)

खेल का नाम	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	षष्ठम	सप्तम	अष्ठम
बास्केटबाल	जयपुर	भीलवाड़ा	सिरोही	अजमेर	उदयपुर	श्रीगंगानगर	सीकर	बीकानेर
हैण्डबाल	बाड़मेर	हनुमानगढ़	नागौर	अजमेर	जयपुर एकेडमी	जयपुर	जोधपुर	भीलवाड़ा
हॉकी	अजमेर	सीकर	टोंक	भीलवाड़ा	हनुमानगढ़	राजसमन्द	जयपुर	-
कबड्डी	हनुमानगढ़	चुरू	नागौर	श्रीगंगानगर	टोंक	सीकर	झुंझुनूं	राजसमन्द
खो-खो	अजमेर	श्रीगंगानगर	भीलवाड़ा	सीकर	हनुमानगढ़	बाड़मेर	झुंझुनूं	चित्तौड़गढ़
सॉफ्टबॉल	अजमेर	बून्दी	जोधपुर	झुंझुनूं	श्रीगंगानगर	जयपुर	बाड़मेर	सीकर
वॉलीबॉल	सीकर	जयपुर	हनुमानगढ़	भीलवाड़ा	टोंक	चुरू	नागौर	झुंझुनूं
बेडमिंटन (दलीय)	अजमेर	हनुमानगढ़	श्रीगंगानगर	भीलवाड़ा	अलवर	जयपुर	जोधपुर	झुंझुनूं
लॉन टेनिस (दलीय)	जयपुर	जोधपुर	अजमेर	हनुमानगढ़	कोटा	बीकानेर	झुंझुनूं	-
टेबल टेनिस (दलीय)	जयपुर	चुरू	जोधपुर	कोटा	अजमेर	पाली	सीकर	नागौर

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया
उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

परिशिष्ट-7

सत्र 2015-16 में राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता के लिए (आयुवर्गानुसार) एथलेटिक्स हेतु निर्धारित इवेन्ट्स एवं मानदण्ड

नाम इवेन्ट्स	19 वर्ष आयुवर्ग		17 वर्ष आयुवर्ग	
	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा
100 मीटर दौड़	12.5 Second	14 Second	13 Second	14.5 Second
200 मीटर दौड़	26.0 Second	30.5 Second	27.0 Second	32.5 Second
400 मीटर दौड़	55.0 Second	1 Min. 10 Sec.	57.0 10 Sec.	1 Min. 15 Sec.
800 मीटर दौड़	2 Min. 12 Sec	2 Min. 32 Sec	2 Min. 17 Sec.	2 Min. 37 Sec.
1500 मीटर दौड़	4 Min. 30 Sec.	5 Min.	4 Min. 40 Sec.	5 Min. 15 Sec.
3000 मीटर दौड़	----	14 Min. 30 Sec	13 Min. 10 Sec.	15 Min. 20 Sec.
5000 मीटर दौड़	21 Min.	25 Min.	----	----
100 मीटर बाधा दौड़	----	20 Sec. (86cm. height)	18 Sec. (99 cm. height)	21 Sec. (84cm. height)

110 मीटर बाधा दौड़	19 Sec. (106 cm)	----	----	----
400 मीटर बाधा दौड़	1 Min. 10 Sec (91 cm.)	1 Min. 22 Sec. (76 cm.)	----	----
उंची कूद	1.50 Meter	1.25 Meter	1.45 Meter	1.20 Meter
लम्बी कूद	5.30 Meter	4.25 Meter	5.25 Meter	4.15 Meter
त्रिकूद	11.00 Meter	8.50 Meter	10.50 Meter	7.50 Meter
बांस कूद	2.50 Meter	----	2.35 Meter	----
गोला फेंक	10 Meter (7.260 kg)	7 Meter (4 kg)	10 Meter (5.450 kg)	6.75 Meter (4 kg)
तश्तरी फेंक	30 Meter (2 kg)	16 Meter (1 kg)	30 Meter (1.5 kg)	15 Meter (1 kg)
भाला फेंक	32 Meter (800 gm)	20 Meter (600 gm)	31 Meter (800 gm)	19 Meter (600 gm)
हैमर थ्रो	28 Meter (7.260 kg)	14 Meter (4 kg)	28 Meter (5.450 kg)	----
3 कि.मी. वाक	----	----	----	20 Min.
5 कि.मी. वाक	29 Min.	33 Min.	31 Min.	----
4×100 मीटर रिले	52 Sec.	1 Min. 5 Sec.	53 Sec.	1 Min. 8 Sec.
4×400 मीटर रिले	4 Min.	4 Min. 50 Sec.	----	----

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

परिशिष्ट–8

सत्र 2015–16 के लिए राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता के लिए (आयुवर्गानुसार) तैराकी हेतु निर्धारित इवेन्ट्स एवं मानदण्ड

नाम इवेन्ट्स	छात्र		छात्रा	
	19 वर्ष	17 वर्ष	19 वर्ष	17 वर्ष
1. फ्री–स्टाइल				
50 मीटर	0:35:00	0:40:00	0:40:00	0:45:00
100 मीटर	1:30:00	1:35:00	2:15:00	2:25:00
200 मीटर	3:10:00	3:20:00	5:10:00	5:20:00
400 मीटर	6:55:00	7:00:00	10:30:00	10:40:00
800 मीटर	.....	15:00:00	20:30:00	....
1500 मीटर	28:30:00	....	....	....
4×100 मीटर रिले	6:15:00	6:30:00	7:00:00	7:00:00
2. मेडले रिले				
4×100 मीटर रिले	6:30:00	6:30:00	7:30:00	7:30:00
3. इण्डविजवल मेडले				
200 मीटर	3:30:00	3:40:00	6:15:00	6:30:00
400 मीटर	7:20:00	7:30:00	13:00:00	13:30:00
4. बैक स्ट्रॉक				
50 मीटर	0:41:00	0:43:00	0:49:00	0:51:00
100 मीटर	1:40:00	1:50:00	2:00:00	2:20:00
200 मीटर	4:10:00	4:30:00	6:00:00	6:20:00
5. ब्रेस्ट स्ट्रोक				
50 मीटर	0:43:00	0:45:00	0:51:00	0:53:00
100 मीटर	1:30:00	1:40:00	1:55:00	2:00:00
200 मीटर	3:40:00	3:50:00	5:30:00	6:00:00
6. बटर फ्लाई				
50 मीटर	0:38:00	0:40:00	0:46:00	0:48:00
100 मीटर	1:30:00	1:40:00	2:45:00	3:00:00
200 मीटर	3:45:00	3:55:00	6:00:00	6:15:00

नोट : एक तैराक तीन इवेन्ट्स तथा एक रिले में भाग ले सकता है।

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया

उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

परिशिष्ट–9

सत्र 2015–16 के लिए जिला एवं राज्य स्तरीय विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु कबड्डी, कुश्ती, जूडो के आयुवर्गानुसार वजन

कुश्ती 19 वर्ष के छात्र	कुश्ती 17 वर्ष के छात्र
42 किलोग्राम	42 किलोग्राम
46 किलोग्राम	46 किलोग्राम
50 किलोग्राम	50 किलोग्राम
55 किलोग्राम	54 किलोग्राम
60 किलोग्राम	58 किलोग्राम
66 किलोग्राम	63 किलोग्राम
74 किलोग्राम	69 किलोग्राम
84 किलोग्राम	76 किलोग्राम
96 किलोग्राम	85 किलोग्राम
120 किलोग्राम	100 किलोग्राम

जूडो (छात्र)		जूडो (छात्रा)	
19 वर्ष	17 वर्ष	19 वर्ष	17 वर्ष
-40 किलोग्राम	-40 किलोग्राम	-36 किलोग्राम	-36 किलोग्राम
-45 किलोग्राम	-45 किलोग्राम	-40 किलोग्राम	-40 किलोग्राम
-50 किलोग्राम	-50 किलोग्राम	- 44 किलोग्राम	-44 किलोग्राम
-55 किलोग्राम	-55 किलोग्राम	-48 किलोग्राम	-48 किलोग्राम
-60 किलोग्राम	-60 किलोग्राम	-52 किलोग्राम	-52 किलोग्राम
-65 किलोग्राम	-65 किलोग्राम	-56 किलोग्राम	-56 किलोग्राम
-71 किलोग्राम	-71 किलोग्राम	-61 किलोग्राम	-61 किलोग्राम
+71 किलोग्राम	+ 71 किलोग्राम	+61 किलोग्राम	+61 किलोग्राम

	कबड्डी (छात्र)		कबड्डी (छात्रा)	
आयुवर्ग	19 वर्ष	17 वर्ष	19 वर्ष	17 वर्ष
वजन	65 कि.ग्रा से कम	57 कि.ग्रा से कम	59 कि.ग्रा से कम	53 कि.ग्रा से कम
खेल मैदान	13×10 मीटर	12×8 मीटर	12×8 मीटर	12×8 मीटर

	एथलेटिक्स(छात्र)		एथलेटिक्स (छात्रा)	
इवेंट	19 वर्ष	17 वर्ष	19 वर्ष	17 वर्ष
100 M. Hurdle	-	91.4Cm	84Cm	76.2Cm
110 M. Hurdle	99.0Cm	-	-	-
400 M. Hurdle	91.4Cm	-	76.2Cm	-
Shot	6.0Kg	5Kg	4Kg	4Kg
Discus	1.75Kg	1.5Kg	1Kg	1Kg
Hammer	6Kg	5Kg	4Kg	4Kg
Javelin	800gms	700gms	600gms	600gms

प्रकाश चन्द्र जाटोलिया उपनिदेशक (खेलकूद)
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

12. शिक्षक दिवस 05 सितम्बर, 2015 के अवसर पर झण्डियों का वितरण कर धन संग्रह बाबत।

● राष्ट्रीय शिक्षण कल्याण प्रतिष्ठान ● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर (शिक्षक दिवस 05 सितम्बर, 2015) ● क्रमांक : शिविरा-मा/राशिकप्र/31582/2015-16 दिनांक 03-07-2015 ● 1. समस्त उप निदेशक (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) ● 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा) 3. समस्त ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी 4. सम्पादक, शिविरा पत्रिका ● विषयः शिक्षक दिवस 05 सितम्बर 2015 के अवसर पर झण्डियों का वितरण कर धन संग्रह बाबत।

माननीय सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन, भूतपूर्व राष्ट्रपति की जन्म तिथि 05 सितम्बर, 2015 को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने, समस्त शिक्षक समुदाय के प्रति समुचित आदर एवं सम्मान व्यक्त करने तथा शिक्षकों के कल्याणार्थ धन संग्रह करने के लिए देश के समस्त नगरों, ग्रामों, ग्राम खण्डों, पंचायत समितियों एवं उच्च माध्यमिक/माध्यमिक/उच्च प्राथमिक/प्राथमिक विद्यालयों (राजकीय/गैरराजकीय) के स्तर पर शिक्षक दिवस को पूर्व की भांति उल्लास एवं शालीनता से मनाया जावे। इस सम्बन्ध में कृपया निम्नानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें।

1. **झण्डियों के जिलेवार लक्ष्य के अनुसार धनराशि संग्रह :-**
   शिक्षक वर्ग के कल्याणार्थ विभिन्न योजनाओं का राष्ट्रीय स्तर पर संचालन करने हेतु झण्डियों की बिक्री से धन राशि एकत्रित की जानी होती है। तद्विषयक शिक्षकों के कल्याणार्थ 36.00 लाख रुपये की धन राशि संग्रह किए जाने का जिलेवार संलग्न विवरणानुसार लक्ष्य निर्धारित किया हुआ है। शिक्षक कल्याण कोष में धन संग्रह पूर्ण मनोयोग एवं सम्पूर्ण प्रयास से एक अभियान के रूप में शिक्षक दिवस 05 सितम्बर से झण्डियों की बिक्री का शुभारंभ कर 30.09.2015 तक शिक्षकों के कल्याणार्थ धन संग्रह किया जाना है। तत्पश्चात् सचिव कोषाध्यक्ष राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान शिक्षा विभाग, राजस्थान, बीकानेर को एकत्रित धन राशि का बैंक ड्राफ्ट भेजा जावे।
2. **धन संग्रह हेतु शिक्षा अधिकारी एवं शिक्षक वर्ग व अन्य का सहयोग :-**
   लक्ष्य की पूर्ति के लिए शिक्षा जगत के समस्त वर्ग के अधिकारी, व्याख्याता,अध्यापक, कर्मचारी एवं पंचायत समितियों के अधीन कार्यरत विद्यालयों के शिक्षकों (राजकीय/गैरराजकीय) छात्र/छात्रा से इस कार्य को सम्पन्न कराने, दानस्वरूप धन एकत्रित करने एवं अपने सम्पूर्ण योगदान करने हेतु निवेदन किया जावे ताकि धन संग्रह अधिकाधिक हो सके एवं लक्ष्य की प्राप्ति संभव होकर शिक्षकों के कल्याणार्थ अनेक अन्य योजनाएं प्रारम्भ हो सकें।
3. **धन संग्रह हेतु अन्य सुप्रसिद्ध संस्थाओं एवं दान-दाताओं का सहयोग-**
   1. योजना की सफलता के लिए स्थानीय निकाय, चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज, रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब, जर्नलिस्ट एसोसिएशन, शिक्षक संघों, पत्रकार बन्धुओं एवं संघों, अन्य विशिष्ट जन-समुदाय एवं व्यक्तियों से शिक्षकों के कल्याणार्थ धन-संग्रह के लिए सहयोग प्राप्ति हेतु बैठकों का आयोजन कर निवेदन किया जावे ताकि लक्ष्य की प्राप्ति हो सके एवं इन्हें इस अवसर की उपादेयता तथा कार्यक्रमों की जानकारी हो सके।
   2. स्वेच्छा से चन्दा एवं दानदाताओं से दान स्वरूप धन-संग्रह हेतु औद्योगिक प्रतिष्ठानों/उद्योगपतियों को कार्यक्रमों की जानकारी सहित उदारता से सहयोग करने हेतु व्यक्तिशः एवं इनके संगठनों से निवेदन करना। दान की कोई सीमा नहीं है। दानदाताओं का नाम, पता एवं राशि के उल्लेख सहित अलग से पत्र प्रेषित करें ताकि धन्यवाद का पत्र प्रेषित किया जा सके।

4. योजना की सफलता हेतु कार्यक्रमों का आयोजन–

धन संग्रह हेतु इस अवसर पर विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाना आवश्यक है ताकि समाज में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका की जानकारी परिलक्षित हो सके। ऐसे कार्यक्रमों में किसी भी सम्माननीय एवं सुप्रसिद्ध व्यक्तियों को आमंत्रित किया जा सकता है।

5. धन संग्रह हेतु प्रचार, प्रसार, सांस्कृतिक तथा अन्य कार्यक्रमों का आयोजन–

जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा) अपने जिले में एवं संस्था प्रधान उच्च माध्यमिक/माध्यमिक/उच्च प्राथमिक/प्राथमिक विद्यालयों में उपर्युक्त कार्यक्रमों के अतिरिक्त अन्य कार्यक्रम भी निम्नानुसार आयोजित करें:–

1. विशिष्ट स्थानों पर वर्णनात्मक पोस्टरों, सिनेमा स्लाइड्स, दूरदर्शन, टेलिविजन अखिल भारतीय एवं स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से प्रचार-प्रसार करवाना।
2. केन्द्र सरकार से प्राप्त पोस्टर्स का वितरण करना, पोस्टर को उचित स्थान पर लगाया जावे।
3. सिनेमा मालिकों/प्रदर्शकों से 05 सितम्बर को एक शो की आय राष्ट्रीय कल्याण प्रतिष्ठान के लिए दान करने का अनुरोध करना।
4. राजकीय/गैर राजकीय शिक्षण संस्थाओं सहित विभिन्न संगठनों, शिक्षकों द्वारा उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य करने पर उन्हें सम्मानित करने जैसे विशेष समारोह आयोजित किए जा सकते हैं। शिक्षकों को भावी पीढ़ी के निर्माता के रूप में प्रस्तुत करते हुए उनके जीवनवृत योगदान तथा दृष्टिकोणों पर वाद-विवाद प्रतियोगिताओं एवं संगोष्ठियों आदि का आयोजन किया जावे।
5. सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं, संगोष्ठियां, खेल-कूद प्रतियोगिताएं, मैत्रीपूर्ण क्रिकेट, फुटबॉल, टेबल-टेनिस, बैडमिन्टन, खो-खो आदि कार्यक्रमों का आयोजन।
6. सांस्कृतिक संगठनों एवं शिक्षक संघों, शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से शिक्षक दिवस से एक या दो दिन पूर्व विशेष मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित करवाकर कोष के लिए धन संग्रह करवाना।

6. शिक्षकों के कल्याणार्थ प्रतिष्ठान के लिए धन-संग्रह हेतु उत्तरदायित्व :–

समस्त उप निदेशक (माध्यमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा), समस्त जिलों के शिक्षा अधिकारियों (माध्यमिक/प्रारम्भिक) द्वारा राजकीय/गैर राजकीय विद्यालयों में झण्डियों का वितरण करवाकर शिक्षकों के कल्याणार्थ **शिक्षक दिवस दिनांक 05.09.2015 को झण्डियों की बिक्री का शुभारंभ कर धन-संग्रह करवाना।** धन संग्रह किए जाने एवं शिक्षक दिवस 05 सितम्बर के समस्त कार्यक्रमों को शालीनता एवं पूर्ण उत्साह से सम्पन्न कराये जाने तथा प्रतिष्ठान के लिए अपना सम्पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रदान करने की कार्यवाही करना।

7. झण्डियों का मूल्य, वितरण व्यवस्था एवं लक्ष्य अनुसार धन संग्रह:–

1. झण्डियों की बिक्री मूल्य 2/- (दो रुपये) निर्धारित की गई है।
2. राज्य में जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक-द्वितीय, जयपुर द्वारा सीधे ही जिलों के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक) को झण्डियों का वितरण किया जावेगा।
3. जिले के जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) अपने अधीनस्थ राजकीय/गैरराजकीय उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में झण्डियों का वितरण करेंगें तथा निर्धारित लक्ष्य के अनुसार मार्गदर्शन एवं धन-संग्रह करवायेंगे। झण्डियों के विक्रय से विद्यालयों द्वारा संग्रहित धनराशि संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक द्वारा एकत्रित की जावेगी तथा उस धनराशि का एक ही ड्राफ्ट निदेशालय में भिजवावें। ध्यान रखें कि विद्यालय स्तर से सीधे ही निदेशालय को ड्राफ्ट नहीं भिजवायें।
4. जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक शिक्षा) अपने अधीनस्थ ब्लॉक शिक्षा अधिकारियों को प्रा./उ.प्रा. (राजकीय/गैरराजकीय) विद्यालयों से धन संग्रह हेतु मार्गदर्शन देंगे तथा धन संग्रह करवायेंगे एवं झण्डियों के विक्रय से एकत्रित राशि का समेकित बैंक ड्राफ्ट निदेशालय को भेजेंगे।

8. झण्डियों की बिक्री से प्राप्त राशि कहां से और किसको कैसे भेजी जावे :–

कृपया झण्डियों की बिक्री एवं अन्य आयोजनीय कार्यक्रमों से प्राप्त धन राशि का बैंक ड्राफ्ट राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर (NATIONAL FOUNDATION FOR TEACHERS WELFARE FUND SEC. EDU. RAJ., BIKANER) के नाम बनाकर प्रेषित करें।

अतः हम समस्त का उत्तरदायित्व है कि 05 सितम्बर शिक्षक दिवस को पूर्ण शालीनता एवं उत्साह पूर्वक मनावे एवं इस कल्याणकारी योजना में अधिक से अधिक झण्डियों की बिक्री कर (राजकीय/गैरराजकीय संस्थाओं से) धनराशि जुटाने हेतु अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

नोटः– 1. जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक/प्रारंभिक) द्वारा जो झंडियां विद्यालयों में विक्रय हेतु वितरण की जाती है, उस विक्रय से प्राप्त राशि के बैंक ड्राफ्ट विद्यालयों द्वारा सीधे ही निदेशालय भेजे जाते थे, के क्रम में निर्देशित किया जाता है कि अब उक्त एकत्रित धन राशि निदेशालय को विद्यालयों द्वारा सीधे न भेजी जाकर जिला शिक्षा अधिकारी स्तर पर संग्रहित कर जिले का एक ही बैंक ड्राफ्ट बनाकर निदेशालय को प्रेषित किया जावे। 2. बैंक ड्राफ्ट भिजवाने हेतु पता-सचिव कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

● उप निदेशक (प्रशासन) राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

शिविरा पंचांग

अगस्त, 2015					
रवि	30	2	9	16	23
सोम	31	3	10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5	12	19	26
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	29

कार्य दिवस 24, रविवार 05 , अवकाश 02, उत्सव 02 ● 1 अगस्त से–विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जांच एवं अभिलेख संधारण, सामुदायिक मुखियाओं की एक दिवसीय कार्यशाला ब्लॉक स्तर पर आयोजन। **3–5 अगस्त**–प्रथम परख (सभी कक्षाओं के लिए)। **6–9 अगस्त**–प्रत्येक विद्यालय में बाल संसद का गठन। **15 अगस्त**–स्वतन्त्रता दिवस (अवकाश-उत्सव अनिवार्य)। समुदाय जागृति दिवस (प्रथम) कार्यक्रम का आयोजन (एसएसए द्वारा)। **21–22 अगस्त**–जिला स्तरीय नेहरू हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन (15 वर्ष छात्र)। **26 अगस्त**–यूडाइस हेतु संकुल/ब्लॉकवार विद्यालयों की सूची तैयार करना (प्रारम्भिक/ माध्यमिक)। **27–29 अगस्त**–राज्य स्तरीय नेहरू हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन। **29 अगस्त**–रक्षा बन्धन (अवकाश) एवं संस्कृत दिवस (उत्सव), ध्यानचन्द जयन्ती पर खेलकूद गतिविधियों का आयोजन। **31 अगस्त**–श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार-2015 के लिए राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) को आवेदन करना। अभिभावकों एवं शिक्षकों की संयुक्त बैठक आयोजित कर प्रथम परख के प्रगति-पत्र विद्यार्थियों/अभिभावकों को वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार विमर्श। **प्रा.शिक्षा/मा.शिक्षा–1.** उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों हेतु विज्ञान एवं गणित आधारित प्रशिक्षण (एसएसए द्वारा)। **2.** केजीबीवी/मेवात बालिका आवासीय विद्यालयों में वार्षिक आधारभूत सामग्री, पूरक टीएलएम, स्टेशनरी एवं अन्य शैक्षिक सामग्री का वितरण 6-8 अगस्त के मध्य करना। (एसएसए द्वारा) **3.** सीसीई आधारित कलस्टर स्तरीय बैठकों का आयोजन। (एसएसए द्वारा) **4.** 25 अगस्त तक राज्य स्तर से निर्धारित क्वालिटी मॉनीटरिंग टूल्स प्रारूप प्रथम समस्त विद्यालय के ऑनलाइन करवाये जाने है। (एसएसए द्वारा) **5.** रमसा द्वारा विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्यों का प्रशिक्षण। **6.** 17 अगस्त 2015 से पूर्व प्रथम/द्वितीय/तृतीय समूह की विद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता का विद्यालय स्तर पर आयोजन।

माह : अगस्त, 2015

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ्क्रमांक	पाठ का नाम
1.8.2015	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
3.8.2015 से 5.8.2015 तक प्रथम परख (सभी कक्षाओं के लिए)						
6.8.2015	गुरुवार	जयपुर	3	हिन्दी	1	मन करता है
7.8.2015	शुक्रवार	उदयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	2	राम रसोड़ा
8.8.2015	शनिवार	जयपुर	4	हिन्दी	3	कदम्ब का पेड़
10.8.2015	सोमवार	उदयपुर	6	सामाजिक विज्ञान	2	सौर मण्डल
11.8.2015	मंगलवार	जयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	3	मच्छर और हम
12.8.2015	बुधवार	उदयपुर	3	पर्यावरण अध्ययन	3	कहाँ-कहाँ से भोजन
13.8.2015	गुरुवार	जयपुर	6	हिन्दी	3	नादान दोस्त
14.8.2015	शुक्रवार	उदयपुर	5	हिन्दी	3	खाओ, कपड़ों खाओ
17.8.2015	सोमवार	जयपुर	5	हिन्दी	4	किताबें
18.8.2015	मंगलवार	उदयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	6	खेती का काम
19.8.2015	बुधवार	जयपुर	6	संस्कृत	7	समुद्र तटः
20.8.2015	गुरुवार	उदयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	7	टूर्नामेंट
21.8.2015	शुक्रवार	जयपुर	3	हिन्दी	10	पलक की डोर
22.8.2015	शनिवार	उदयपुर	4	हिन्दी	8	गोडावन
24.8.2015	सोमवार	जयपुर	4	पर्यावरण अध्ययन	10	किस्सा कपड़े का
25.8.2015	मंगलवार	उदयपुर	6	सामाजिक विज्ञान	8	विविधता में एकता
26.8.2015	बुधवार	जयपुर	6	हिन्दी	10	झाँसी की रानी
27.8.2015	गुरुवार	उदयपुर	6	संस्कृत	8	अस्माकम् विद्यालयः
28.8.2015	शुक्रवार	जयपुर	5	हिन्दी	10	नानक भील
31.8.2015	सोमवार	उदयपुर	4	हिन्दी	10	वेणेश्वरधाम

निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर

फादर कामिल बुल्के स्मृति

मानवीय करुणा की दिव्य चमक

❒ डॉ. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

संस्मरण स्मृतियों से बनता है और स्मृतियों की विश्वसनीयता उसे महत्त्वपूर्ण बनाती है। फ़ादर कामिल बुल्के पर लिखा सर्वेश्वर का यह संस्मरण इस कसौटी पर खरा उतरता है। अपने को भारतीय कहने वाले फ़ादर बुल्के जन्मे तो बेल्जियम (यूरोप) के रैम्सचैपल शहर में जो मिशनों, पादरियों, धर्मगुरुओं और संतों की भूमि कही जाती है परंतु उन्होंने अपनी कर्मभूमि बनाया भारत को। फ़ादर बुल्के एक संन्यासी थे परंतु पारंपरिक अर्थ में नहीं। सर्वेश्वर का फादर बुल्के से अंतरंग संबंध था जिसकी झलक हमें इस संस्मरण में मिलती है। लेखक का मानना है कि जब तक रामकथा है, इस विदेशी भारतीय साधु को याद किया जाएगा तथा उन्हें हिंदी भाषा और बोलियों के अगाध प्रेम का उदाहरण माना जाएगा।

फादर को ज़हरबाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था उसके लिए ज़हर का विधान क्यों हो? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था। वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे? एक लंबी, पादरी के सफ़ेद चोगे से ढकी आकृति सामने है- गोरा रंग, सफेद झाँईं मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखे-बाँहे खोल गले लगाने को आतुर। इतनी ममता, इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था। मैं पैंतीस साल से इसका साक्षी था। तब भी जब वह इलाहाबाद में थे और तब भी जब वह दिल्ली आते थे। आज उन बाँहों का दबाव मैं अपनी छाती पर महसूस करता हूँ।

फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फादर बुल्के थे। हमारे हँसी मज़ाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फ़ादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सल्य भी जैसे किसी ऊँचाई पर देवदारु की छाया में खड़े हों।

कहाँ से शुरू करें! इलाहाबाद की सड़कों पर फ़ादर की साइकिल चलती दीख रही है। वह हमार पास आकर रुकती है, मुसकुराते हुए उतरते हैं, 'देखिए-देखिए मैंने उसे पढ़ लिया है और मैं कहना चाहता हूँ.... उनको क्रोध में कभी नहीं देखा, आवेश में देखा है और ममता तथा प्यार में लबालब छलकता महसूस किया है। अकसर उन्हें देखकर लगता है कि बेल्जियम में इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष में पहुँचकर उनके मन में संन्यासी बनने की इच्छा कैसे जाग गई जबकि घर भरा-पूरा था- दो भाई, एक बहिन, माँ,पिता सभी थे।

''आपको अपने देश की याद आती है?''

''मेरा देश तो अब भारत है।''

''मैं जन्मभूमि की पूछ रहा हूँ?''

''हाँ आती है। बहुत सुंदर है मेरी जन्मभूमि-रेम्सचैपल।''

''घर में किसी की याद?''

''माँ की याद आती है-बहुत याद आती है।''

फिर अक्सर माँ की स्मृति में डूब जाते देखा है। उनकी माँ की चिट्ठियां अकसर उनके पास आती थीं। अपने अभिन्न मित्र डॉ. रघुवंश को वह उन चिट्ठियों को दिखाते थे। पिता और भाइयों के लिए बहुत लगाव मन में नहीं था। पिता व्यवसायी थे। एक भाई वहीं पादरी हो गया है। एक भाई काम करता है, उसका परिवार है। बहन सख्त और ज़िद्दी थी। बहुत देर से उसने शादी की। फ़ादर को एकाध बार उसकी शादी की चिंता व्यक्त करते उन दिनों देखा था। भारत में बस जाने के बाद दो या तीन बार परिवार से मिलने भारत से बेल्जियम गए थे।

''लेकिन मैं तो संन्यासी हूँ।''

''आप सब छोड़कर क्यों चले आए?''

''प्रभु की इच्छा थी।'' वह बालकों की सी सरलता से मुसकराकर कहते, ''माँ ने बचपन में ही घोषित कर दिया था कि लड़का हाथ से गया और सचमुच इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष की पढ़ाई छोड़कर फ़ादर बुल्के संन्यासी होने जब धर्म गुरु के पास गए और कहा कि मैं संन्यास लेना चाहता हूँ तथा एक शर्त रखी (संन्यास लेते समय संन्यास चाहने वाला शर्त रख सकता है) कि मैं भारत जाऊँगा।''

''भारत जाने की बात क्यों उठी?''

''नहीं जानता, बस मन में यह था।''

उनकी शर्त मान ली गई और वह भारत आ गए। पहले 'जिसेट संघ' में दो साल पादरियों के बीच धर्माचार की पढ़ाई की। फिर 9-10 वर्ष दार्जिलिंग में पढ़ते रहे। कलकत्ता (कोलकाता) से बी.ए. किया और इलाहाबाद से एम.ए.। उन दिनों डॉ. धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। शोधप्रबन्ध प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में रहकर 1950 में पूरा किया- 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास।' 'परिमल' में उसके अध्याय पढ़े गए थे। फादर ने मातरलिंक के प्रसिद्ध नाटक 'ब्लू बर्ड' का रूपांतर भी किया है 'नीलपंछी' के नाम से। बाद में वह सेंट जेवियर्स कॉलिज, राँची में हिन्दी तथा संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष हो गए और यहीं उन्होंने अपना प्रसिद्ध अंग्रेजी-हिन्दी कोश तैयार किया और बाइबिल का अनुवाद भी... और वहीं बीमार पड़े, पटना आए। दिल्ली आए और चले गए- 47 वर्ष देश में रहकर और 73 वर्ष की जिन्दगी

बीकर।

फादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। कभी-कभी लगता है वह मन से संन्यासी नहीं थे। रिश्ता बनाते थे तो तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद मिलने के बाद भी उसकी गंध महसूस होती थी। वह जब भी दिल्ली आते ज़रूर मिलते-खोजकर, समय निकाल कर, गर्मी, सर्दी, बरसात झेलकर मिलते, चाहे दो मिनट के लिए ही सही। यह कौन संन्यासी करता है? उनकी चिंता हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी। हर मंच से इसकी तकलीफ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुंझलाते देखा है और हिन्दी वालों द्वारा ही हिन्दी की उपेक्षा पर दुख करते उन्हें पाया है। घर-परिवार के बारे में, निजी दुख-तकलीफ के बारे में पूछना उनका स्वभाव था और बड़े से बड़े दुःख में उनके मुख से सांत्वना के बादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है। 'हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह।' मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फादर के शब्दों से झरती विरल शांति भी।

आज वह नहीं है। दिल्ली में बीमार रहे और पता नहीं चला। बाँहें खोलकर इस बार उन्होंने गले नहीं लगाया। जब देखा तब वे बाँहें दोनों हाथों की सूची उँगलियों को उलझाए ताबूत में बिस्म पर पड़ी थीं। जो शांति बरसती थी वह चेहरे पर थिर थी। तरलता जम गई थी। वह 18 अगस्त 1982 की सुबह दस बजे का समय था। दिल्ली में कश्मीरी गेट के निकलसन कब्रगाह में उनका ताबूत एक छोटी-सी नीली गाड़ी में से उतारा गया। कुछ पादरी, रघुवंश जी का बेटा और उनके परिजन राजेश्वर सिंह उसे उतार रहे थे। फिर उसे उठा कर एक लंबी सँकरी, उदास पेड़ों की घनी छाँह वाली सड़क से कब्रगाह के आखिरी छोर तक ले जाया गया जहाँ धरती की गोद में सुलाने के लिए कब्र अवाक् मुँह खोले लेटी थी। ऊपर करील की घनी छाँह थी और चारों ओर कब्रों और तेज़ धूप के वृत्त। चैनेंद्र कुमार, विजयेन्द्र स्नातक, अजित कुमार, डॉ. निर्मला जैन और मसीही समुदाय के लोग, पादरीगण, उनके बीच में गैरिक वसन पहने इलाहाबाद के प्रसिद्ध विज्ञान शिक्षक डॉ. सत्यप्रकाश और डॉ. रघुवंश भी जो अकेले उस सँकरी सड़क की ठंडी उदासी में बहुत पहले से खामोश दुख की किन्हीं अपरिचित आहटों से दबे हुए थे, सिमट आए थे कब्र के चारों तरफ। फादर की देह पहले कब्र के ऊपर लिटाई गई। मसीही विधि से अंतिम संस्कार शुरू हुआ। राँची के फादर पास्कल तोयना के द्वारा। उन्होंने हिन्दी में मसीही विधि से प्रार्थना की फिर सेंट जेवियर्स के रेक्टर फादर पास्कल ने उनके जीवन और कर्म पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, 'फादर बुल्के धरती में जा रहे हैं। इस धरती से ऐसे रत्न और पैदा हों।' डॉ. सत्यप्रकाश ने भी अपनी श्रद्धांजलि में उनके अनुकरणीय जीवन को नमन किया। फिर देह कब्र में उतार दी गई...।

मैं नहीं जानता इस संन्यासी ने कभी सोचा था या नहीं कि उसकी मृत्यु पर कोई रोएगा। लेकिन उस क्षण रोने वालों की कमी नहीं थी। (नम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है।)

इस तरह हमारे बीच से वह चला गया जो हममें से सबसे अधिक छायादार फल-फूल गंध से भरा और सबसे अलग, सबका होकर, सबसे ऊँचाई पर, मानवीय करुणा की दिव्य चमक में लहलहाता खड़ा था। जिसकी स्मृति हम सबके मन में जो उनके निकट थे किसी यज्ञ की पवित्र आग की आँच की तरह आजीवन बनी रहेगी। मैं उस पवित्र ज्योति की याद में श्रद्धानत हूँ।

(क्षितिज-भाग-2 कक्षा-10 'अ' पाठ्यक्रम के लिए हिन्दी की पाठ्यपुस्तक से साभार)

प्रेरक प्रसंग

आचारः प्रथमो धर्मः

बहुत सम्मानित और आदरणीय एक राजपुरोहित थे। जब वे दरबार में आते, राजा भी खड़ा होकर राजपुरोहित का सम्मान करता। राजपुरोहित ने एक प्रयोग किया। जब वे राजदरबार से घर गए, रास्ते में कोषागार आया। राजपुरोहित ने वहां से दो मोती उठा लिए। खजांची यह देखकर अवाक और चिन्तित हो गया। दूसरे और तीसरे दिन भी यही हुआ। खजांची ने राजा को स्थिति से अवगत कराया। राजा ने जांच करवाई, सच्चाई सामने आ गई। अगले दिन जब राजपुरोहित दरबार में आए, राजा ने सम्मान नहीं दिया। राजपुरोहित समझ गए-दवा काम कर गई है। राजा ने पूछा-राजपुरोहित जी! आपने मोती लिए? हाँ राजन्। मैंने मोती लिए थे। मैं परीक्षा करना चाहता था। किस बात की परीक्षा? राजा ने पूछा।

राजन्। मैं जानना चाहता था-ज्ञान बड़ा है या आचार? मेरा जो सम्मान होता है, पूजा प्रतिष्ठा है, वह ज्ञान के कारण है या आचरण के कारण। मैंने परीक्षा करके देख लिया है- मेरा ज्ञान मेरे पास है। उसमें कोई अन्तर नहीं आया। अन्तर आया है आचरण में। मेरे आचरण से आपकी भौंहे तन गई। मैंने समझ लिया-मेरी प्रतिष्ठा का कारण आचरण है-ज्ञान नहीं।

ईंट से लगाव

पंडित मदनमोहन मालवीय ने चन्दे से एकत्रित राशि से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इससे उन्हें बड़ा लगाव था। एक बार वे एक छात्रावास का निरीक्षण करने गए। एक कमरे में छात्र ने दीवार के एक कोने में पेंसिल से कुछ हिसाब लिख रखा था। मालवीय जी ने उसे समझाया-'मेरे हृदय में तुम्हारे प्रति जितनी ममता और लगाव है, उतना ही लगाव विश्वविद्यालय की प्रत्येक ईंट से है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में तुम ऐसी गलती फिर नहीं करोगे।' फिर उन्होंने जेब से रुमाल निकाल कर दीवार को साफ कर दिया।

संकलन : भुवनेश जीनगर, बीकानेर

राष्ट्रीय खेल दिवस

दर्शक दीर्घा में मचलती पास आने की स्पर्धा

❑ सुभाष चन्द्र कल्यां

"मैं जीते जी किसी दूसरे देश में नहीं जी सकता। मेरे लिए देश पहले है, धन-दौलत बाद में। तुम जिस देश की मिट्टी में पलकर बड़े हुए हो, तुम उसी की सम्पति हो।" यह बात मेजर ध्यानचन्द ने प्रतिक्रिया स्वरूप अपने साथी खिलाड़ियों से कहीं थी जब हिटलर ने ध्यानचन्द के हॉकिई करिश्में को देखकर जर्मन सेना में ऊँचा ओहदा देने की पेशकश की थी। वाकई देश-प्रेम की यह मिसाल अन्यत्र तलाशने पर भी नहीं मिलती। विदेशी स्टेडियम में जब वे हॉकी खेलते चीते जैसी स्फूर्ति व गेंद के स्टिक से चिपके रहने की जादूगरी के साथ गोल दागते तब भीड़ दर्शक दीर्घा से बाहर निकलकर उनकी पीठ थपथपाने के लिए मचल उठती पुलिस को उन्हें जबरन रोकना पड़ता। हॉकी की एक ऐसी ही शख्सियत का नाम है- मेजर ध्यान चंद, जिनका जन्म 29 अगस्त, 1905 में तीर्थस्थल इलाहाबाद (प्रयाग) में हुआ जिनका बाद में हॉकी खेल ही जीवन का सम्पूर्ण तीर्थ बन गया।

1928 के अपने पहले ओलंपिक खेल जो एम्सटर्डम में हुए थे। ध्यानचंद ने अपनी पहली पारी में अकेले चौदह गोल दागकर सबको विस्मय में डाल दिया। अपने शुरूआती खेल में ही ध्यानचन्द ने अच्छी तरह समझ लिया था- उड़ान पंखों से नहीं, हौंसले से होती है। अपने इस हौंसले की इफाजत 1932 व 1936 तक ओलंपिक खेलों तक निरन्तर बनाए रखी। 1932 लॉस एंजिल्स ओलंपिक खेल में जो प्रदर्शन मेजर ध्यानचन्द ने किया उसे देख लोगों को लगने लगा वाकई यह कोई खिलाड़ी नहीं कोई करिश्मा है जिसे थामा नहीं जा सकता। यहीं से लोगों की जुबान पर यह जुमला सिर चढ़कर बोलने लगा-'ऊपर चांद तो नीचे ध्यान चंद'। जर्मनी के 1936 हॉकी ओलम्पिक खेल के फाइनल मैच को हिटलर भी देखने स्टेडियम में पहुँचे। यह मैच भारत व जर्मनी के बीच खेला जाना था। हिटलर खुशी के साथ स्टेडियम में

दाखिल हुए पर लौटे दुखी चेहरे के साथ। भारत ने जर्मनी को 8-1 के अंतर से मात दे डाली। इस फाइनल मैच में सर्वाधिक गोल मेजर ध्यान चन्द ने ही किए। हिटलर ध्यानचंद के खेल के इतने दीवाने हो गए कि उन्हें वे पाने के लिए तरह-तरह के पैंतरे चलाने लगे पर ध्यानचंद ने अपने हाव-भाव से दिखा दिया- जीना वहाँ, मरना यहाँ। मतलब साफ था मेरा देश ही मेरे लिए सबसे बड़ा है।

आस्ट्रेलिया सरकार ने चाहा मेजर ध्यानचंद को उनकी हॉकी टीम का कोच बनाया जाए। आजादी के बाद जनरल के.एम. करियप्पा के जरिए यह संदेश ध्यानचंद तक पहुँचा दिया। जनरल करियप्पा ने कहा, "कोच बनना चाहते हो तो चले जाओ आस्ट्रेलिया"। ध्यानचंद ने सहजता व सरलता से कहा," जिस मेडल को प्राप्त करने के लिए हमने इतना बड़ा परिश्रम किया उसे हराने के लिए मैं आस्ट्रेलिया का कोच बनना पसंद नहीं करता।" कितना बड़ा सम्मान था उनके मन में इस देश के लिए! कोई एक दो उदाहरण ही नहीं है। उदाहरणों का खजाना बहुत बड़ा है उनकी देश भक्ति का हमारे पास।

मेजर ध्यानचंद को मेजर की रैंक सही अर्थों में नहीं मिली थी। यह उनके लिए ऑनरेरी रैंक थी। उनकी हॉकी से जुड़ी रूमानियत व गहराई को देख यह सम्मान उन्हें दिया गया था। अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेज उन्हें यह सम्मान एक उपाधि तक ही सीमित रखना चाहते थे। वास्तविक वाले पदों से भारतीयों को महरूम रखना उनकी खुशी में ईजाफा लाती थी। लेकिन यह अंग्रेज लोगों का खेल के प्रति प्यार व आकर्षण ही था कि किसी भारतीय खिलाड़ी की उपलब्धि पर वास्तविक पद की जगह आभासी पद ही दे दिया जाए जिससे उसे थोड़ी बहुत ही खुशी मिल सके।

मेजर ध्यानचंद हॉकी के सर्वकालिक खिलाड़ी है। हॉकी खेल में उन्होंने चार सौ गोल दागे पर उन्हें वह सम्मान नहीं मिला जो मिलना चाहिए। ध्यानचंद का एक बड़ा दुर्भाग्य यह भी रहा कि वे क्रिकेट के खिलाड़ी नहीं रहे। आज हम एक खेल के पीछे पागलपन लिए दौड़ रहे हैं। हॉकी व अन्य खेल डॉयनासोर बन विलुप्ति की कोठरी में बंद नजर आ रहे हैं। हॉकी जो हमारी रक्त धमनियों, संस्कृति व राष्ट्रीय गौरव से जुड़ा हुआ है कि अनदेखी कर खेल जगत में बड़ी कामयाबी के हमारे खेल कदम हमेशा संशय ही पैदा करते रहेंगे। अतः ऐसे हालात में हॉकी को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता हमें आज महसूस हो रही है। अन्य खेलों का भी अपना अलग महत्व है पर दूसरे खेल को धक्का देकर आगे बढ़े तो उसके स्थायित्व पर खतरा मंडराने की संभावनाएं मजबूत हो जाती हैं। मेजर ध्यानचंद के जन्म दिन 29 अगस्त को हमने 1984 से राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाना शुरू किया है। यह उनके प्रति सम्मान का प्रतीक है। मेजर ध्यानचंद आज भी जिंदा है उस हर भारतीय खिलाड़ी की रूह में जो 121 करोड़ की आबादी वाले देश को अपनी लगन व मेहनत की सीढ़ी से चीन को खेलों में शिकस्त देना चाहता है उनकी यह चाह तभी कामयाब हो सकेगी जब उन्हें प्रारम्भिक स्तर पर खेलों की जानकारी विद्यालय स्तर से होनी शुरू हो जाए तथा वह सारी सुविधाएं उन्हें मिलने लगे जो उन्हें कामयाबी तक पहुँचा सके। राष्ट्रीय खेल दिवस 29 अगस्त हर साल यही पैगाम ही तो लाता है आखिर!

-प्राध्यापक, अंग्रेजी
रा.आ.उ.मा.विद्यालय, नूँआ (झुंझुनूं)
मो. 9460841575

कालांश समीक्षा

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं में बोर्ड द्वारा निर्धारित शिक्षण कालांश

माध्यमिक कक्षाएं

		कुल साप्ताहिक कालांश : 48	
क्र. सं.	विषय	कक्षा-IX हेतु निर्धारित कालांश	कक्षा-X हेतु निर्धारित कालांश
1.	भाषाएं	17	17
	हिन्दी	06	06
	अंग्रेजी	06	06
	तृतीय भाषा	05	05
2.	विज्ञान	08	08
3.	सामाजिक विज्ञान	08	08
4.	गणित	08	08
5.	राजस्थान अध्ययन	02	02
6.	शारीरिक एवं स्वाथ्य शिक्षा	02	02
7.	फाउंडेशन ऑफ इन्फर्मेशन टैक्नोलॉजी	02	02
8.	1. समाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा	01	01
	2. कला शिक्षा	-	-
	योग	48	48

नोट:-

1. ऐसे विद्यालय, जहां कम्प्यूटर लैब की सुविधा नहीं है, वहां के संस्था प्रधान पाठ्यक्रम एवं शाला की स्थानीय आवश्यकता के अनुसार 'फाउंडेशन ऑफ इर्न्फेमेशन टेक्नोलॉजी' के लिए निर्धारित कालांशों का समायोजन अन्य विषयों के शिक्षण में कर सकते है।
2. खेल प्रवृत्तियां शून्य कालांश में संचालित की जा सकती है।
3. नैतिक शिक्षा प्रार्थना सभा, उत्सव आयोजनों एवं सभी विषयों के शिक्षण में समाहित है।
4. पुस्तकालय से पुस्तकों का आदान-प्रदान शून्य कालांश /मध्य अंतराल में किया जा सकता है।

उच्च माध्यमिक कक्षाएं

		कुल साप्ताहिक कालांश: 48	
क्र. सं.	विषय	कक्षा-IX हेतु निर्धारित कालांश	कक्षा-X हेतु निर्धारित कालांश
1.	हिन्दी	06	06
2.	अंग्रेजी	06	06
3.	राजस्थान अध्ययन	03	03
4.	जीवन कौशल	03	-
5.	ऐच्छिक विषय		
	1. प्रथम	10	11
	2. द्वितीय	10	11
	3. तृतीय	10	11

विशेष :

प्रयोगात्मक कार्य वाले विषयों में 06 कालांश सैद्धांतिक एवं 04 कालांश प्रायोगिक कार्य हेतु निर्धारित है।

प्रयोगात्मक कार्यवाले विषयों में 07 कालांश सैद्धांतिक एवं 04 कालांश प्रायोगिक कार्य हेतु निर्धारित है।

नोट:-

1. नैतिक शिक्षा प्रार्थना सभा, उत्सव आयोजनों एवं सभी विषयों के शिक्षण में समाहित है।
2. पुस्तकालय से पुस्तकों का आदान-प्रदान शून्य कालांश/मध्य अंतराल में किया जा सकता है।
3. शारीरिक शिक्षा एवं खेल गतिविधियां विद्यालय समय के पूर्व एवं पश्चात् अपेक्षित है।
4. कक्षा-XI उत्तीर्ण नियमित विद्यार्थियों को ग्रीष्मावकाश के दौरान विद्यालय में आयोज्य समाज सेवा योजना शिविर में भाग लेना अनिवार्य है। शिविर की ग्रेडिंग का अंकन कक्षा-XII की अंकतालिका /प्रमाण पत्र में किया जाएगा। राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) में भाग लेने वाले विद्यार्थी इस शिविर से मुक्त रहेंगे, किन्तु इन विद्यार्थियों की अंकतालिका/प्रमाण-पत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) में भाग लेने का अंकन किया जाएगा।

संकलन :
राणूसिंह, वरिष्ठ लिपिक
माध्यमिक अनुभाग
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर

- यदि तुम्हारा हृदय पवित्र है तो तुम्हारा आचरण भी सुंदर होगा, यदि आचरण सुंदर है तो तुम्हारे घर में शांति रहेगी, यदि घर में शांति हैं तो राष्ट्र में सुव्यवस्था रहेगी और यदि राष्ट्र में सुव्यवस्था है तो समस्त विश्व में शांति और सुख रहेगा।
- जो अपनी गलती को खुद देखकर सुधार लेता है और उसका प्रायश्चित कर लेता है, वह साधु है। जो गलती बताने पर मान लेता और खेद प्रकट करता है, वह सज्जन है। जो गलती मालूम होने पर भी हठ करता है, वह नर पशु है। जो सही और गलत की तमीज ही नहीं कर पाता या जो गलत को सही और सही को गलत मानता है, वह पशु है।

योग

योग-आंतरिक शक्ति का प्रकाश पुंज-दिव्यता का मार्ग

❑ बजरंग प्रसाद मजेजी

योग का स्वरूप :

योग शब्द संस्कृत की 'युज' धातु से बना है जिसका अर्थ है समाधि और मिलान। महर्षि व्यास ने योग को समाधि वाचक माना है। जिसमें मन को भलीभांति समाहित किया जावे उसे समाधि और आत्मा का परमात्मा से मेल को योग कहा है।

योगः समाधि–व्यास भाष्य (योग दर्शन 1/1)

व्याकरणशास्त्र में 'युज' धातु से भाव में घञ् प्रत्यय करने पर योग शब्द की उत्पत्ति होती है जिसका अर्थ ऋषि पाणिनी धातुपाठ के दिवादिगण में 'युज समाधौ', रुदादि–गण में 'युजिर् योगे' तथा चुरादिगण में 'युज संयमने' अर्थ में युज धातु आती है। अर्थात् संयमपूर्वक साधना करते हुए, आत्मा का परमात्मा के साथ योग कर समाधि का आनन्द लेना योग है। योग दर्शन के अनुसार–'चित्तवृत्तियों का निषेध करना ही योग है। अमरकोष में योग को ध्यान और संगति का वाचक माना है:–

'योगः सन्नहनोपायध्यान संगतियुक्तिषु'

कठोपनिषद में योग का लक्षण बताते हुए लिखा है कि– "जब पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ मन के सहित निश्चल हो जाती है, बुद्धि का व्यापार भी रुक जाता है, इस स्थिति को योग कहते हैं। वशिष्ट संहिता में मन को शांत करने के उपाय को योग कहते हैं–

मनः प्रशमनोपायो योग इत्यभिधीयते।

महर्षि चरक ने "मन का इन्द्रिय एवं विषयों से पृथक होकर आत्मा में स्थिर होना ही योग बताया है।" दत्तात्रेय योगशास्त्र तथा योगराज उपनिषद में योग के चार प्रकार वर्णित है–मन्त्रयोग, लययोग, हठयोग, राजयोग।

महर्षि पतंजलि के अनुसार योग का अर्थ :

पतंजलि ने योगसूत्र में कहा है कि– "योगिश्चित्त वृत्ति निरोधः" अर्थात् मन की इच्छाओं को संतुलित बनाना योग कहलाता है। योग सांसारिक जीवन का मार्ग नहीं है। जहाँ मन और इन्द्रियां स्थिर हो जाएं, बुद्धि निश्चेष्ट हो उस अवस्था को योग कहते हैं। महर्षि पतंजलि ने

संसार के सामने लिखकर उद्घाटित किया था कि योग का अर्थ होता है जोड़ना। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अपनी शक्ति, अपने संसाधनों को जोड़ने से ही हमें उत्कर्ष की प्राप्ति होती है। संसार में जितनी कठिनाइयां है, जितनी क्रियाएं हैं, उन सबका मूल चंचलता है। हमारा चित्त चंचल है। चित्त के भटकाव का निरोध करना है। यदि चित्तवृत्तियां निरुद्ध हो जायेंगी तो हमारे जीवन की कठिनाइयां दूर हो जाएगी और हमें पूर्ण जीवन प्राप्त होगा। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ये अष्टांग योग हैं। इनके द्वारा अपनी चित्तवृत्तियों को रोकने का प्रयास करना चाहिए। यदि किसी को जीवन का परमसुख लेना है, पूर्णता लेनी है, तो पतंजलि के योगदर्शन का अवलोकन करना चाहिए। योग ने असंख्य लोगों को परमजीवन दिया है। आज भी देने में समर्थ है। योग की सभी क्रियाओं का संपूर्ण संसार में अवलंबन होना चाहिए। पतंजलि योगसूत्र के साधनपादः के प्रथम सूत्र में तप (अनुशासन) स्वाध्याय एवं ईश्वर प्राणिधान को योग के अवयव माना गया है। साधनपादः के 28 वें सूत्र के अनुसार जब योग के विभिन्न अवयवों का अनुष्ठान किया जाता है तो अशुद्धियां दूर होती है, ज्ञान दीप्तिमय होता है।

पतंजलि कहते हैं किः– आपको ईश्वर को जानना है, सत्य को जानना है, सिद्धियां प्राप्त करना है या सिर्फ स्वस्थ रहना है तो प्रारंभ शरीर के तल से करनी होगी। शरीर को बदलो, मन बदलेगा तो बुद्धि बदलेगी। जिनके मस्तिष्क में द्वन्द्व है वह हमेशा चिंता, भय और संशय में ही जीते रहते हैं। उन्हें जीवन एक संघर्ष नजर आता है। आनन्द नहीं। योग से समस्त प्रकार की चित्तवृत्तियों का निरोध होता है।

श्रीमद्भगवत् गीता में योग का महत्व :

श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए सांख्ययोग (अध्याय 2) कर्मयोग (अध्याय 3) ज्ञानकर्म–सन्यासयोग (अध्याय 4) ध्यान योग (अध्याय 6) में योग का स्वरूप, योग का महत्व, योग के प्रकार, योग से लाभ का वर्णन किया है।

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ
तयोस्तु कर्म संन्यासात् कर्मयोगो विशिष्यते।

(गीता अ. 5/2)

तपस्विभ्योऽधिको योगी
ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी
तस्माद्योगी भवार्जुन।।

(गीता अ. 6/46)

अर्थात् तपस्वियों से श्रेष्ठ है, शास्त्रज्ञानियों से भी श्रेष्ठ माना गया है और सकाम कर्म करनेवालों से भी योगी श्रेष्ठ है, इससे हे अर्जुन तू योगी हो। अध्याय 2 के 48 श्लोक में श्री कृष्ण ने कहा है कि–

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गत्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समोभूत्वा समत्वं योग उच्यते।

हे धनंजय! तू आसक्ति को त्यागकर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धिवाला होकर योग में स्थित हुआ कर्तव्य कर्मों को कर समत्व ही योग कहलाता है। इसीलिये योग करने वाला योगी तपस्वियों से श्रेष्ठ है। योग कोई धर्म नहीं है और न कोई चिकित्सा पद्धति।योग का अर्थ जोड़ना है।

जैन–आचार्यों ने योग का अर्थ बताते हुए कहा है कि जिन–साधनों से आत्मा की सिद्धि और मोक्ष की प्राप्ति होती है, वह योग है। जैन आचार्यों ने अनेक ग्रन्थ योग की विशेषताओं पर

लिखें हैं। आचार्य कुन्दकुन्द ने अध्यात्म योग विषयक विचार दिये हैं। आचार्य गुणभद्र का आत्मानुशासन, आचार्य शुभचन्द्र का ज्ञानार्नव, आचार्य हरिभद्र का योग बिन्दु, योगदृष्टि समुच्च, आचार्य हेमचन्द्र का योग दर्शन, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य विद्यासागर ने योग पर कई ग्रन्थ लिखे हैं।

योग महाप्रवर्तक महापुरुष :

भारतीय मनीषियों ने आत्मा-परमात्मा एवं प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को जानकर षट्दर्शन का विकास किया, जिनमें महर्षि कपिल, महर्षि पतंजलि, महर्षि गौतम, महर्षि कणाद, महर्षि जैमिनी ने योगदर्शन का व्यावहारिक अर्थ एवं लाभ दर्शाये हैं। वर्तमान में योग को पुनः स्थापित करने का श्रेय रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, कृष्णामाचार्य, बी.के. एस. अयंगर, के. पट्टाभिजोइस, स्वामी विष्णु देवानन्द, योगेन्द्र मस्तमणि, जिद्दू कृष्णामूर्ति, योगिनी इन्द्रा देवी, जयदेव योगेन्द्र, श्री ला. प्रभुपाद, स्वामी शिवानन्द, ओशो, स्वामी रामदेव, श्री एकनाथ रानाडे आदि ने योग की विभिन्न विधाओं को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाया है। उनके अनुसार योग एक पूर्ण विज्ञान, एक पूर्ण जीवनशैली, एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। अर्थात् योग एक पूर्ण अध्यात्म विद्या है। गृहस्थियों के लिए एक अचूक दवा है।

वर्तमान में योग की आवश्यकता एवं उपादेयता :

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सितम्बर 2014 में संयुक्त राष्ट्र संघ की आमसभा में कहा था- ''योग मस्तिष्क तथा शरीर, विचारों, क्रिया, संयम तथा पूर्णता, मानव एवं प्रकृति के बीच सद्भाव का समागम है। यह स्वास्थ्य और कल्याण के लिये समग्र पहल प्रदान करता है। योग मन, बुद्धि एवं शरीर के लिये जीवन के लिये अति महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसी विधा है जिससे आत्म अनुसंधान किया जा सकता है। जिससे अन्तर्मन को विकसित और ऊर्जावान बनाया जा सकता है। योग महज अंग या उपांग मर्दन का कार्यक्रम नहीं है अपितु मानव कल्याण, तनावमुक्ति और शांति-सद्भाव बहाल करने का जरिया है। आधुनिक योग साधक बाबा रामदेव कहते हैं कि- सभी को अपनी दिनचर्या में योग को सम्मिलित कर प्रतिदिन नियमित एक घंटा अभ्यास करने से न केवल भविष्य में होने वाली बीमारियों से मुक्ति मिलेगी, अपितु शारीरिक, मानसिक व्याधियों से मुक्ति मिलेगी।

योग के महत्व को प्रतिपादित करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा ने 11 दिसम्बर 2014 को विश्वभर में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाने का प्रस्ताव रखा, जिसे 192 देशों का समर्थन मिला जिसमें 47 मुस्लिम देश भी थे। बान की मून ने उत्साहित होकर कहा कि योग सबके लिए प्रमुख है। योग का ताल्लुक धर्म से नहीं है, यह निष्पक्ष है। जो योग करेगा उसे लाभ मिलेगा। योग का महत्व 21 जून 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सम्पूर्ण विश्व के देशों द्वारा उत्साहपूर्वक सभी वर्ग, जाति,उम्र के 20 करोड़ लोगों द्वारा जिसमें 650 जिले देश के सम्मिलित हुए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वक्तव्य दिया- ''योग से दुनियां का कोई हिस्सा अछूता नहीं रहा। यह कार्यक्रम मानव कल्याण, दुनिया को तनाव मुक्त करने और प्रेम, शांति,एकता तथा भाईचारे का संदेश देता है।

योग से लाभः-

योग से मस्तिष्क शांत रहता है। जिससे तनाव कम होकर ब्लड-प्रेशर, मोटापा और कोलेस्ट्राल में कमी आती है। इससे रक्त संचार में सुधार होता है। शरीर का लचीलापन बढ़ता है। नियमित योगाभ्यास से त्वचा में निखार आता है। नर्वस सिस्टम में सुधार होता है। शरीर में ऊर्जा का स्तर बढ़ता है। शरीर की 10 इन्द्रियाँ कान, नाक, आँख, त्वचा, रसना, गुदा, उपस्थ, हाथ, पैर, जिह्वा से मन और आत्मा पर प्रभाव पड़ता है। नित्य योगासन से शरीर संस्थान, कोशिकांए, उत्तक सक्रिय होकर कार्य करते हैं। योग करने से चिंता, भय, तनाव, निराशा, अनिंद्रा, दुर्बलता, मोटापा, आलस्य दूर हो जाते हैं। योग क्रिया से सुप्त चेतना शक्ति का विकास होता है। आसन और प्राणायाम से शरीर की ग्रन्थियों में आकर्षण-विकर्षण, आकुंचन-प्रसारण और शिथिलीकरण की क्रियाओं द्वारा आरोग्य बढ़ता है। योग के अभ्यास से साधक असत् विद्या के तमस से हटकर दिव्य स्वरुप ज्योतिर्मय, आनन्दमय, शांति-मय परम चैतन्य, आत्मा एवं परमात्मा तक पहुँचने में समर्थ हो जाता है।

-सेवानिवृत्त प्र.अ., सांपला-अजमेर
मो. 9460894708

प्रेरक प्रसंग

सबका मालिक तो...

प्रसिद्ध सूफी संत उमर का स्वभाव था कि वे परोपकार या लोकहित के उद्देश्य से लोगों की परीक्षा लेते रहते थे। एक बार वे देशाटन पर निकले तो उन्हें मार्ग में एक चरवाहा मिला। उमर ने उससे एक बकरी देने को कहा। चरवाहे ने अपने मालिक का हवाला देकर ऐसा करने में असमर्थता जताई। तब उमर ने उससे कहा-'इतनी बकरियाँ हैं। इनमें से एक कम भी हो जाएगी तो तुम्हारे मालिक को पता थोड़े ही चलेगा। वैसे भी तुम्हारा मालिक तो यहाँ है नहीं।' चरवाहा बोला-'मेरा मालिक तो नहीं देख रहा, पर सबका मालिक खुदा तो देख ही रहा है। उसके साथ धोखा कैसे कर सकता हूँ?' उमर उसको लेकर उसके मालिक के पास पहुँचे और उसे सारा किस्सा कह सुनाया। वह चरवाहा उस व्यक्ति के यहाँ गुलाम के रूप में कार्यरत था। उमर ने मालिक से कहा-'खुदा के बंदे को कौन गुलाम बना सकता है? तुम इसे मेरे साथ आने दो।' चरवाहे के मालिक ने उसे आजाद कर दिया और वह चरवाहा सूफी संत उमर के शिष्य के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

वयोरूपगुणैर्हीनम् अपि कुर्यात् सुदर्शनम्।
व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम्।।

जो व्यक्ति नित्य व्यायाम करता है, चाहे वह आयु, सौन्दर्य तथा अन्य गुणों से रहित भी हो, सुन्दर दिखाई देने लगता है और उल्टा-सीधा खाया हुआ भी उसे पच जाता है।

(सुश्रुत संहिता/चिकित्सा-44)

अभिनव पहल

विद्यालय में वर्षा जल संरक्षण, संग्रहण एवं उपयोग

❒ सुभाष माचरा

समाचार पत्र-पत्रिकाओं तथा प्रिंट-इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में रेनवाटर हार्वेस्टिंग की बढ़ती आवश्यकता, उपादेयता और नवीन विधियों के उपयोग के प्रचार-प्रसार के बीच राजकीय विद्यालयों में नामांकन वृद्धि के लिए प्रवेशोत्सव की विभागीय कार्य योजना के पर्यवेक्षण एवं प्रबोधन हेतु सिरोही जिले के परिभ्रमण कार्यक्रम के दौरान जनजाति बहुल पिण्डवाड़ा तहसील के एक सरकारी विद्यालय में रेनवाटर हार्वेस्टिंग हेतु शाला के स्थानीय स्टाफ द्वारा पिछले तीन वर्ष से स्वयं के स्तर पर विकसित कर उपयोग में लाई जा रही तकनीक तथा उसके कारगर परिणामों का साक्षात्कार कर बड़ा अचम्भित हुआ। सुलभ तथा सरल उपायों द्वारा वर्षा जल के समुचित संरक्षण तथा संग्रहण के पश्चात् उसके व्यावहारिक उपयोग से विद्यालय परिसर की हरी-भरी तथा शीतल हरीतिमापूर्ण दृश्यावली से अभिभूत होकर लेखक विभागीय पत्रिका ''शिविरा'' के माध्यम से समस्त शिक्षक वृन्दों को इस अनूठी तथा अनुकरणीय अभिनव पहल से अवगत करवाने हेतु प्रेरित हुआ।

इस सार्थक प्रयास के प्रेरणास्रोत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, वीरवाड़ा, तहसील-पिण्डवाड़ा, जिला-सिरोही के प्रधानाचार्य श्री बागेन्द्र कुमार रावल हैं। श्री रावल ने इस पहल की पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में बताया कि वर्षा के जल को संग्रहित कर आगामी समय में आवश्यकतानुसार उपयोग में लेना हमारे देश में सैंकड़ों वर्ष पूर्व से चली आ रही एक जानी-मानी तकनीक है। ऊंचे- ऊंचे किलों पर, दुर्गम रेगिस्तानी क्षेत्रों में टांकों में और मैदानी भागों में बावड़ियों द्वारा सदियों से वर्षाजल संग्रहित तथा संरक्षित किया जाता रहा है। वर्तमान समय में भूमिगत जलस्तर के नीचे जाने तथा जल के दैनिक जीवन में बढ़ते उपयोग के कारण रोजमर्रा के जीवन में उपलब्ध जल की अपर्याप्तता की समस्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है। सिरोही जिला मुख्यालय से 15 किलोमीटर दूर पूर्व दिशा में स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, वीरवाड़ा (पिण्डवाड़ा) श्री श्री रावल के उक्त विद्यालय में प्रधानाचार्य पद पर कार्यग्रहण के समय जलसंकट की समस्या का सामना कर रहा था। यहां की भूमि की प्रकृति क्षारीय होने के कारण यहां वृक्षों को पनपाना टेढ़ी खीर है। उक्त समस्या से निजात पाने के लिए श्री रावल ने तीन वर्ष पूर्व विद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के प्रभारी श्री नरेश चन्द्र पुरोहित, व्याख्याता एवं इको क्लब प्रभारी श्री भूपेन्द्र कुमार रावल, वरिष्ठ अध्यापक के साथ विचार-विमर्श कर 'रेनवाटर हार्वेस्टिंग' की कार्य योजना तैयार की। करीब एक माह के अथक प्रयास तथा 'हम होंगे कामयाब एक दिन, मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास' प्रेरक गीत की अभिप्रेरणा से निरंतर उत्साह का संचार करते हुए एन.एस.एस. इकाई के छात्रों के सहयोग से जल संरक्षण कार्यक्रम का आधारभूत कार्य सम्पन्न हुआ। विद्यालय प्रांगण में पूर्व से ही एक 60 फीट गहरा कुआं (जल रहित) स्थित था, जो पत्थरों और कचरे से भरा हुआ था। सर्वप्रथम उक्त कुएं को छात्रों के श्रमसहयोग से खाली करवाया गया। कुएं से निकाले गए पत्थरों का सदुपयोग करते हुए विद्यालय प्रांगण में ही (16x35) वर्ग फीट का एक मंच तैयार किया गया, जो वर्तमान में विद्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं अन्य सहशैक्षिक क्रियाकलापों हेतु स्टेज के रूप में काम आ रहा है।

पूर्व निर्मित रूपरेखा के मुताबिक विद्यालय भवन की छतों के पानी को चैम्बर्स में पहुंचाया गया। छतों के पानी तथा विद्यालय परिसर (उपलब्ध कैचमेंट एरिया) के बहाव क्षेत्र में वर्षा के पानी के समुचित संग्रहण हेतु सम्पूर्ण विद्यालय परिसर में कुल आठ चैम्बर निर्मित किए गए। ये आठों चैम्बर सम्पूर्ण विद्यालय परिसर के पानी को योजनाबद्ध तरीके से संग्रहित कर मुख्य संग्रहण कुएं तक पहुंचाने का कार्य करते हैं। इन चैम्बर्स को रेत, मोटे पत्थरों और बड़े-बड़े गोलाकार पत्थरों से भरा गया है। चैम्बर में पानी छनकर जाए, इस हेतु लोहे की जालियां लगवाई गई है। फिर पाइप लाइन हेतु नालियां खुदवाई गई। सीमेंट के पाइपों द्वारा इन चैम्बर्स को भूमिगत रूप से मुख्य चैम्बर से जोड़ दिया गया। सर्वाधिक ध्यान इस बात का रखा गया कि विद्यालय परिसर का सम्पूर्ण पानी अलग-अलग स्थानों पर निर्मित आठ चैम्बर की तरफ प्रवाहित होकर निर्धारित चैम्बर्स में ही प्रवेश कर संग्रहित हो, इस हेतु सम्पूर्ण विद्यालय परिसर का श्रम तथा यत्नपूर्वक ढाल उक्तानुसार रखा गया। पूरे परिसर में 10 सेन्टीमीटर मोटी रेत की परत बिछाई गई। उक्त सम्पूर्ण प्रक्रम की परिणति में पूरे विद्यालय परिसर एवं छतों का पानी आठ चैम्बर्स में प्रवेश पश्चात् छनकर पाइप लाइन द्वारा मुख्य चैम्बर में पहुंच जाता है। मुख्य

रेनवाटर हार्वेस्टिंग विधा से अवगत करवाते हुए प्रधानाचार्य श्री बागेन्द्र कुमार रावल

चैम्बर से परिष्कृत जल कुएं में पहुंचाया जाता है। इस कुएं में संग्रहित जल के परिणामस्वरूप विद्यालय परिसर का भू-जल स्तर पिछले तीन वर्ष में आशातीत रूप से बढ़ा है। ''वर्षा जल संरक्षण-संग्रहण'' की इस योजना को अमली जामा पहनाए जाने से पूर्व जो विद्यालय लगभग वृक्ष रहित था, वह अब हरे-भरे वृक्षाच्छादित एवं फल-फूलों से लदे-फदे परिसर के रूप में परिवर्तित हो गया है। समस्त ग्रामीणजन तथा विद्यार्थी विद्यालय परिसर को पादप, बल्लरी एवं तरूओं के द्वारा पुष्पित-पल्लवित देखकर हर्षित और रोमांचित हैं। प्रधानाचार्य श्री रावल तथा उनके सहयोगी स्टाफ की दृढ़ संकल्प शक्ति, लगन तथा कर्मयोगी प्रवृत्ति ने निम्नलिखित पंक्तियों को सार्थक करके दिखा दिया :-

आकाश का पानी रोकेंगे,
पाताल का पानी बढ़ाएंगे।
वर्षा जल एकत्र करेंगे,
भू-जल को बढ़ाएंगे।
आने वाली पीढ़ी को हम,
पानी के लिए नहीं तरसाएंगे।

इस ''वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम'' के रख-रखाव तथा सार-संभाल हेतु स्थाई व्यवस्था के तहत ग्रीष्मावकाश में मई माह के दौरान विद्यालय की एन.एस.एस. इकाई के छात्रों को विशेष जिम्मा दिया गया है। उस समय एन.एस.एस. इकाई के पन्द्रह दिवसीय शिविर के दौरान सभी चैम्बर्स की सफाई करने के लिए चैम्बर्स को खाली करवाया जाता है। कचरा साफ करने के बाद चैम्बर्स को पुनः स्वच्छ रेत, पत्थर एवं बड़े गोलाकार पत्थरों की अलग-अलग तहों में जमाकर संग्रहित होने वाले जल के फिल्टरेशन की प्रारंभिक प्रक्रिया की शुरूआत की जाती है। तत्पश्चात् मानसूनी वर्षा के साथ ही जल संग्रहण-संरक्षण एवं उपयोग की नियमित एवं प्राकृतिक प्रक्रिया का चक्र पुनः प्रारम्भ हो जाता है। श्री रावल और उनकी टीम द्वारा वर्षा जल संरक्षण-संग्रहण के इस अभिनव प्रयास का सर्वाधिक उल्लेखनीय पहलू यह है कि यह एक सरल और प्रत्येक विद्यालय में सफलतापूर्वक किए जा सकने योग्य कार्य है, जो सहज ही में प्रत्येक विद्यालय में विद्यार्थियों की उपलब्ध श्रम शक्ति तथा सामान्य जनसहयोग के बूते सम्पादित किया जा सकता है। परन्तु इसके लिए

आवश्यक है, श्री वागेन्द्र कुमार रावल जैसे निष्कपट एवं संकल्पवान नेतृत्व की। प्रत्येक संस्था प्रधान के लिए वीरवाड़ा की उक्त शाला का यह उदाहरण एक अनुकरणीय मिसाल है, एक चुनौती है, तमाम कठिनाइयों तथा समस्याओं के बावजूद अपने विद्यालय परिसर को वर्षा जल संरक्षण-संग्रहण के इस संभव प्रयास के अनुकरण से हरा-भरा बनाने की, विद्यालय को जल-संकट की समस्या से निजात दिलाने की, अपने विद्यार्थियों और समाज के सामने एक नजीर पेश करने की, एक मिशन को पूरा करने की। इस सन्दर्भ में दिवंगत राष्ट्र कवि श्री रामधारी सिंह ''दिनकर'' की ये पंक्तियां बरबस स्मरण हो आती है :-

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में।
खम ठोक ठेलता है जब नर,
पर्वत के जाते पांव उखड़।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।
गुण बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भीतर।
मेहन्दी में जैसे लाली हो,
वर्तिका बीच उजियाली हो।

तो आवश्यकता है, विद्यालय स्टाफ द्वारा थोड़ा सा जोर लगाने की, विद्यार्थियों में अन्तर्निहित श्रमशक्ति को जगाने की और अंत में संस्था प्रधान द्वारा एक प्रेरणादायक नेतृत्व प्रदान करने की। वर्षा जल संरक्षण-संग्रहण को व्यावहारिक धरातल पर उपयोग में लेने और सुपरिणाम दर्शाने वाले प्रधानाचार्य श्री वागेन्द्र कुमार रावल (वर्तमान में ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी, पिण्डवाड़ा, जिला-सिरोही के पद पर पदस्थापित) का समुचित मार्गदर्शन और हरसंभव सहयोग (मोबाइल : 9414448253, 8441988759) इस कार्य हेतु सहर्ष उपलब्ध है।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में एक सामयिक संदर्भ यह है कि अमेरिकी सरकार के अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ''नेशनल एअरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन'' (NASA) द्वारा भारत में ''रेनवाटर हार्वेस्टिंग'' का अध्ययन करने के लिए 1997 से 2015 तक सेटेलाइट के माध्यम से आंकड़े एकत्रित कर किए गए एक महत्वपूर्ण अध्ययन एवं शोध के निष्कर्ष भी इसी बात पर बल देते हैं कि भारत जैसे उष्ण कटिबंधीय एवं उप उष्ण कटिबंधीय (ट्रॉपिक एवं सब ट्रॉपिक) जलवायविक क्षेत्रों के लिए वर्षा जल संग्रहण-संरक्षण के व्यावहारिक अनुप्रयोग भू-जल स्तर बढ़ाने के साथ-साथ दैनिक जीवन में जल संबंधी आवश्यकताओं की बड़े पैमाने पर पूर्ति करने में सक्षम है। विशेष तौर से तब, जबकि भारत जैसे देश में सभी निवासियों तथा समस्त क्षेत्रों में पेयजल उपलब्ध करवाना भी एक भारी समस्या का रूप लेता जा रहा है।

-शैक्षिक प्रकोष्ठ अधिकारी
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर
मो 9414080470

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

विश्व विख्यात स्वर्ण नगरी जैसलमेर

❒ विजय कुमार बलाणी

विश्व पर्यटन मानचित्र पर गोल्डन सिटी के नाम से विख्यात स्वर्णनगरी जैसलमेर का भव्य कलात्मक सौंदर्य, यहाँ के वासिन्दों की जीवनशैली व सांस्कृतिक परम्पराएं देशी विदेशी मेहमानों को आकर्षित करती है।

काशी मथुरा प्रयागवड़, गजनी अर भटनेर
विगम विरावल लुद्रवों नम्मों जैसलमेर।

भगवान श्री कृष्ण के वंशजों की नौंवी राजधानी है जैसलमेर। कृष्णवंशी शासक जैसलदेव जी ने श्रावण शुक्ल द्वादशी, विक्रम संवत 1212 (1156 ई.) को त्रिकूट गढ़ की स्थापना की थी। जैसलदेव द्वारा मेरु पर्वत पर निर्मित इस शहर का नाम पड़ा.... जैसलमेर। भाटी शासकों द्वारा निर्मित इस दुर्ग में आज भी आबादी बसती है। जैसलमेर के त्रिकूट गढ़ की सुरक्षा के लिए अभेद परकोटा बना हुआ है तथा 99वें विशाल बुर्ज दुश्मनों के दांत खट्टे करने के लिए सीना तान खड़े है। दुर्ग की प्राचीरें तथा निर्माण कार्य देखकर तत्कालीन कारीगरों के लिए हमारा सिर श्रद्धा से झुक जाता है। बिना सीमेंट, बिना चूने के प्रयोग के एक पत्थर पर दूसरा पत्थर रखकर निर्माण किया गया है। दुर्ग स्थित आराध्य देव लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर जन आस्था का बहुत बड़ा केंद्र है। दुर्ग में सूर्य भगवान, रतनेश्वर महादेव, बजरंग बली, शीतला माता, अन्नपूर्णा माता, स्वांगिया माँ, चामुण्डा माँ तथा घंटियाली राय माता के मंदिर में भक्तों की रेलमपेल रहती है। दुर्ग स्थित जिनालयों व जैन मंदिरों में भी भक्तों व पर्यटकों की भारी भीड़ रहती है। दुर्ग स्थित राजमहल में तत्कालीन शिल्प कला एवं चित्रकला की बेजोड़ कृतियों से साक्षात् किया जा सकता है। दुर्ग स्थित हरराज महल में कराए गए संरक्षण कार्य हेतु 'यूनेस्को अवार्ड' से सम्मानित किया गया है।

अन्य दर्शनीय स्थल

दुर्ग से निकलकर मुख्य बाजार से होते हुए विश्व विख्यात हवेलियों का दर्शन किया जा सकता है। दीवान सालमसिंह की हवेली में दीवान नथमल की हवेली तथा पटवों की हवेली

में तत्कालीन प्रस्तर कला के नायाब नमूने देखकर यह पंक्ति चरितार्थ होती है।

यूं तो हर पत्थर की तकदीर बदल सकती है
पर शर्त है उसे सलीके से तराशा जावे।

सुरम्य गड़सीसर तालाब:– 14वीं शताब्दी में महारावल गड़सी द्वारा निर्मित गड़सीसर तालाब जल संरक्षण व जल भण्डारण का अद्वितीय नमूना है। गड़सीसर में बनी मोड़ बंगली, बीच बंगली व जाली बंगला नामक छतरियां तैरती प्रतीत होती है। गड़सीसर तालाब पणिहारियों के रूणझुण, सांस्कृतिक उत्सव आयोजनों का साक्षी रहा है। आज भी लोगों के लिए पवित्र पेयजल का स्रोत गड़सीसर तालाब मेले, उत्सव आदि के लिए प्रसिद्ध स्थल है।

अमरसागर, बड़ाबाग, मूलसागर:– शहर 7–8 कि.मी. पर अवस्थित इन स्थलों पर तत्कालीन शासकों ने बाग–बगीचों का निर्माण करवाया। इन स्थलों पर आज भी हरियाली देखकर मन को सुकून मिलता है।

कुलधरा व खाभा:– पालीवालों के परित्यक्त गाँव कुलधरा व खाभा में तत्कालीन नगर–नियोजन की झलक मिलती है। कृषि हेतु अपनाई जाने वाली 'खडीन व्यवस्था' आज भी रेगिस्तानी इलाके में कृषि उत्पादन हेतु वरदान साबित हो रही है। पालीवालों द्वारा निर्मित विभिन्न जलाशयों, बावड़ियां व नाड़ियां जल संरक्षण व जल भंडारण के सजीव नमूने है। इनसे आज भी जैसलमेर के वाशिंदों व पशुओं की प्यास बुझती है।

सम व खुहड़ी के विख्यात रेत के धोरे:– जैसलमेर शहर से पश्चिम की ओर 45 किमी. दूरी पर सम गांव स्थित है वहीं दक्षिण में

जैसलमेर जिला : एक नज़र

स्थिति	: 26°.05 से 28°.0 उत्तरी अक्षांश 69°.30 से 70°.0 पूर्वी देशांतर
भौगोलिक क्षेत्र	: 38,392 वर्ग कि.मी.
जनसंख्या	: 6,69,919
पुरुष	: 3,61,708
महिला	: 3,08,211
ग्रामीण	: 5,80,894
शहरी	: 0089,025
लिंगानुपात	: 852 महिला प्रति हजार पुरुष
जनसंख्या घनत्व	: 17
साक्षरता दर	: 57.21
उपखण्ड	: 4
तहसील	: 4

(जैसलमेर, पोकरण, भणियाणा, फतेहगढ़)
पंचायत समिति : 3 (सांकड़ा, जैसलमेर, सम)

स्रोत : पुस्तक जैसलमेर जिला दर्शन
प्रकाशक : जिला प्रशासन–जिला सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय, जैसलमेर

लगभग 50 किमी दूर खुहडी गांव स्थित है। सम व खुहडी के रेतीले धोरों पर रेगिस्तान के जहाज ऊंट की सवारी तथा सूर्योदय व सूर्यास्त दर्शन से असीम आनंद मिलता है।

विश्व विख्यात जैसलमेर की आर्थिक स्थिति का मुख्य घटक पर्यटन व्यवसाय है। यहां इंदिरा गांधी नहर परियोजना से कृषि क्षेत्र को पंख लगे हैं वहीं सोलर एनर्जी के क्षेत्र में भी संभावनाएं बढ़ी है। यहां के पत्थर व्यवसाय ने भी रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए है। हॉलीवुड, बॉलीवुड, व टॉलीवुड के निर्माता निर्देशकों ने भी इस धरती को कैमरे में कैद किया है। यहाँ फिल्म के साथ-साथ विज्ञापन तथा टेलीविजन धारावाहिकों की भी शूटिंग होती रहती है। जैसलमेर भ्रमण हेतु अक्टूबर से मार्च के मध्य का समय अनुकूल रहता है।

विश्व विख्यात मरू महोत्सव:- देशी विदेशी सैलानियों को स्वर्ण नगरी जैसलमेर बुलाने के लिए 1979 में जिला प्रशासन व पर्यटन विभाग द्वारा मरु मेले का आयोजन शुरु किया गया। लोक कलाकारों की गायकी, रेगिस्तान के जहाज 'ऊँट' के विभिन्न प्रदर्शन व यहां के दर्शनीय स्थल और लोगों की आत्मीयता ने कुछ ही समय में इस मरु मेले का मरु महोत्सव का रूप दे दिया गया है। माघ मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी से प्रारम्भ होने वाला यह मेला पूर्णिमा को आसमान में चहकते चांद की धवल चांदनी में सम के विख्यात धोरों पर सांस्कृतिक आयोजनों के साथ आगामी वर्ष के लिये मेहमानों को आमंत्रित करता है। राजस्थान के परिधान व वेशभूषा को प्रतिबिंबित करती मरु श्री प्रतियोगिता एवं मिस मूमल प्रतियोगिता इस महोत्सव का खास आकर्षण होता है।

जिला प्रशासन एवम् पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित मरु महोत्सव जग विख्यात है। तीन दिवसीय मरु महोत्सव में सतरंगी छटा के दर्शन होते हैं। आगामी वर्ष मरु महोत्सव 21 फरवरी से 23 फरवरी तक आयोज्य है। स्वर्णनगरी जैसलमेर में आपका सदैव स्वागत है।

-वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)
किले ऊपर कुण्डपाड़ा, जैसलमेर
मो. 9414391098

संस्कृत दिवस पर विशेष

देववाणी से मानववाणी

❒ जगदीश प्रसाद त्रिवेदी

परमपिता ब्रह्मा की वाणी।
वैदिक संस्कृत भव-कल्याणी।।

संस्कृत जो वेदों की भाषा।
सकल देवों की मूल भाषा।।
श्लोकों-मंत्रों के उच्चारण,
ऋषि-मुनियों की गिरा सुहानी।
परम पिता ब्रह्मा की वाणी।।1।।

संस्कृत भावों की अभिव्यक्ति।
षट्दर्शन, श्रुति-पुराण, संस्कृति।।
गुरुकुल में शिक्षण का माध्यम,
आचार्यों की मधुरम् वाणी।
परमपिता ब्रह्मा की वाणी।।2।।

आर्यावर्त्त की आर्य-संस्कृत।
प्रकृति से जो हो गई प्राकृत।।
पालि, अपभ्रंश और हिन्दी,
सबकी संस्कृत मातु सयानी।
परम पिता ब्रह्मा की वाणी।।3।।

संस्कृत थी सुरगण की भाषा।
हिन्दी है मानव की आशा।।
लेखन की लिपि देवनागरी,
परम पुरातन जय ब्रह्माणी।
परमपिता ब्रह्मा की वाणी।।4।।

शृंगार कलाएँ षोडश स्वर।
व्यंजन तैंतीस-प्रतीक अमर।।
क्ष,त्र,ज्ञ त्रिअक्षर त्रिदेव महान,
बावन अक्षर ध्वनि विज्ञानी।
परम पिता ब्रह्मा की वाणी।।5।।

गंगा, सरस्वती, कालिन्दी।
संगम त्यों ब्रज, अवधी, हिन्दी।।
राष्ट्रीय एकता की वाचा,
हिन्दी सुगम, सुबोध, सुबानी।
परम पिता ब्रह्मा की वाणी।।6।।

हिन्दी भाषा पावन- उज्ज्वल।
मानो मां सुरसरिता का जल।।
बोलें जैसा, लिखदें का वैसा,
पठन करे, झट समझे प्राणी।
परम पिता ब्रह्मा की वाणी।।7।।

-2 ख-17 दादाबाड़ी कोटा (राज.)
फोन : 2503486

क्या श्रेष्ठ है?

गुरुकुल के विद्यार्थियों में एक विषय पर बहस छिड़ गई कि क्या श्रेष्ठ है? ज्ञान, सत्य, विवेक अथवा संयम? सब अपनी-अपनी जिज्ञासा लेकर गुरु के पास पहुँचे। गुरु शिष्यों को संबोधित करते हुए बोले-''वत्स! इनमें से किसी का एकांगी महत्त्व नहीं है। ज्ञान के सहारे मनुष्य दूसरों को सत्पथ दिखा पाता है, सत्य के सहारे स्वयं तथा दूसरों को शांति दे पाता है, विवेक के सहारे सुखी बनता है, सुख प्रदान करता है और संयम बरतने पर दीर्घजीवी होता है तथा समस्त संपदाओं का सम्यक उपयोग कर पाता है।''

लेखा स्तम्भ

उपार्जित अवकाश

❒ कृपाशंकर व्यास

राजस्थान राज्य सेवा में कार्यरत राज्य कर्मचारी को सेवा में रहते अर्जित विभिन्न प्रकार के अवकाश नियमानुसार देय होते है। उपार्जित अवकाश उन्हीं में से एक हैं। आकस्मिक अवकाश को छोड़ कर सभी अवकाश सेवा नियमों के अनुसार अवकाश की श्रेणी में समाहित किए गए है, यथा उपार्जित, अर्द्ध वेतन, अदेय, अध्ययन, असाधारण प्रसूति आदि अवकाश।

यहाँ उपार्जित अवकाश जिसका राज. सेवा नियमों के नियम 91 व 92 में तथा इसके नकदीकरण का नियम 97 में उल्लेख पर संक्षेप में निम्न प्रकार से प्रकाश डाला जा सकता है।

अर्जनः– एक राज्य कर्मचारी सेवा में अपने कर्तव्य सम्पादन (By Duty) द्वारा उपार्जित अवकाश अर्जित करता है। वैदेशिक सेवा अवधि में यदि उसने अवकाश अवधि का अंशदान जमा कराया/दिया है, तो वह अवधि भी अवकाश अर्जन हेतु गिनी जावेगी।

यद्यपि कर्तव्य सम्पादन द्वारा अवकाश अर्जन का प्रावधान है लेकिन राज्य ने अपने आदेश सं. वित्त1(2)/नियम/2006 दि. 13.3.2006 द्वारा 20.1.2006 के बाद नियुक्त कर्मचारियों को उसके 2 वर्ष की प्रोबेशनरी अवधि में अर्जन से वंचित रखा है और नहीं उन कर्मचारियों पर जो ऐसा पद व सेवा कार्य से आये हो जहाँ राज्य सेवा नियम लागू नहीं है उनकी पूर्व सेवा अवकाश हेतु मान्य नहीं होगी।

जो कर्मचारी क्षतिपूरक या अयोग्यता पेंशन/ग्रेच्युटी पर सेवा से निवृत्ति पश्चात सक्षम अधिकारी की स्वीकृति पश्चात पुनः सेवा में ले लिए जाते है और पूर्व के लाभ को राजकोष में जमा करा देते है तथा पूर्व की सेवा पेंशन योग्य है की सक्षम अधिकरी की स्वीकृति प्राप्त हो जाती है तो उनकी पूर्व की सेवा अवकाश गणना योग्य मानी जावेगी।

अवकाश अधिकार नहीं–यद्यपि कर्मचारी कर्तव्य सम्पादन द्वारा अवकाश अर्जित करना है लेकिन वह इसका उपभोग अधिकार के रूप में नहीं कर सकेगा। हाँ, वह चाहे तो पूर्व में उपभोग किए गए अवकाश उपभोग की समाप्ति के 3 माह में आवेदन कर उसकी प्रकृति परिवर्तित करा सकता है। सक्षम अधिकारी स्वयं अपनी इच्छा से अवकाश की प्रकृति परिवर्तित नहीं कर सकता है। (नि. 59 व निर्णय–3)

अवकाश की देयता– एक कर्मचारी सेवा में रहते अपने पूर्ण सेवा काल निम्न सीमा अवधि तक उपार्जित अवकाश का संचय कर/रख सकता हैः–

(1) 31.12.1991 तक यह अवधि 180 दिन तक की थी। (2) 31.12.1997 तक यह बढ़ाकर 240 दिन तक की गई व तत्पश्चात् राज्य सरकार के आदेश एफ(5) विवि/नियम/ 96 दिनांक 2.4.98 जो 1.1.1998 से प्रभावी की गई यह सीमा 240 दिन से बढ़ाकर 300 दिन कर दी गई है।

विभिन्न वर्गों को देयता– (अ) सिविल राज्य कर्मचारी–स्थायी/अस्थायी राज्य कर्मचारी को एक कलेण्डर वर्ष में 30 दिन का/ जिसकी अधिकतम संचय सीमा 300 दिन से अधिक नहीं होगी।

(ब) भारतीय पुलिस अधिकारियों को छोड़कर शेष सशस्त्र पुलिस कर्मियों को एक कलैण्डर वर्ष में 42 दिन का उपार्जित अवकाश देय होगा जिसके अनुसार पूर्ण सेवाकाल में संचित अवकाश की सीमा 300 दिन से अधिक नहीं होगी।

उपार्जित अवकाश के लेखे– सिविल कर्मचारी के अवकाश लेखों में एक कलैण्डर वर्ष में दो बार 1 जनवरी व 1 जुलाई को 15–15 दिन के अवकाश की अग्रिम प्रविष्टि की/जमा किये जावेंगे। (ब) जब कि राजस्थान सशस्त्र पुलिस कर्मी के खाते में यह 21–21 दिन की प्रविष्टी की जावेगी।

उक्त दोनों ही मामलों में कुल संचय सीमा 300 दिन से अधिक नहीं होती थी। 300 दिन या 290 दिन 30 जून व 31 दिसम्बर को यदि शेष होता था तो कर्मचारी के खाते में प्रथम स्थिति में कोई प्रविष्टि नहीं की जाती थी। जबकि दूसरी स्थिति में 10 दिन ही जोड़े जाते थे लेकिन राज्य सरकार के आदेश सं. एफ1(4)एफडी/रूल्स /98 दिनांक 21.12.2012 द्वारा अब उक्त कर्मचारियों के खाते में 300 दिन का शेष होने के बावजूद भी 15 दिन की प्रविष्टि की जावेगी। लेकिन उसको अलग से दिखाया जावेगा। प्रथम छमाही के अंत में इन 15 दिन में से यदि कर्मचारी अवकाश का उपभोग करेगा तो इस प्रविष्टि से समायोजित होगा। शेष को आगे ले जाया जावेगा लेकिन कुल योग 300 दिन से यानि इस छमाही की शेष व पूर्व के शेष का योग 300 दिन से अधिक नहीं होगा। इस आदेश से कर्मचारी 300 दिन के शेष के बावजूद भी नई प्रविष्टि पर लाभ प्राप्त कर सकेगा। (नि. 91)

एक कलैण्डर वर्ष में इन कर्मचारियों को जहाँ 30 दिन व 42 दिन का अवकाश देय होगा। उसके अनुसार इनके खाते में (अ) ढाई दिन का अवकाश प्रतिमाह तथा (ब) को साढ़े तीन दिन का अवकाश प्रतिमाह देय होगा। हर छमाही में नियुक्ति पर मृत्यु, सेवा निवृत्ति पद त्याग आदि के मामलों में इसी दर के अनुसार गणना कर वास्तविक दिनों की संख्या ज्ञात की जावेगी व उसी आधार पर इन स्थिति में शेष ज्ञात कर भुगतान आदि होगा।

असाधारण अवकाश पर– कर्मचारी किसी भी छः माही में यदि 5–10 असाधारण अवकाश लेता है तो इसके उपार्जित अवकाश में से 1 दिन कम दिया जायेगा जो प्रत्येक छमाही में (अ) 15 व (ब) की स्थिति में 21 दिन क्रमशः से अधिक नहीं होगा।

स्थानान्तरण पर अर्जन– एक राज्य कर्मचारी का यदि राज्यहित/सार्वजनिक हित में स्थानान्तरण होता है तो उसे यात्रा भत्ता व पदभार ग्रहण नियमों के अनुसार अधिकतम 15 दिन का पद ग्रहण काल देय होता है यदि कर्मचारी अधिकतम देय अवधि से पूर्व ही नए पद/स्थान

पर कार्यग्रहण कर लेता है तो शेष बची अवधि उसके उपार्जित अवकाश में जोड़ दी जावेगी लेकिन यह कुल अवधि में 300 दिन से अधिक नहीं होगी।

अवकाश का प्रारंभ एवं अंत– कर्मचारी के स्वीकृत अवकाश से पूर्व व अंत में यदि राजकीय अवकाश आता है तो कर्मचारी का स्वीकृत अवकाश अवधि में वे सम्मिलित नहीं माने जावेगी वह उन दोनों दिनों का लाभ प्राप्त कर सकेगा। तथा पूर्व राजकीय अवकाश से पूर्व वह कार्य मुक्त होकर अवकाश पर प्रस्थान कर सकेगा तथा अंत के राजकीय अवकाश के पश्चात कार्यग्रहण कर सकेगा।

(स) विश्राम कालीन विभाग के कर्मचारी– विश्राम कालीन विभाग में शैक्षिक कार्य करने वाले कर्मचारी को 15 दिन का उपार्जित अवकाश देय है। 1.1.94 से पूर्व यह अवधि 8:7 के अनुपात में देय होती है। उपभोग न करने पर 7 दिन का अवकाश समाप्त (Lapse) हो जाता था। जबकि 8 दिन का या शेष रहा अवकाश आगे ले जाया जाता था। अब यह व्यवस्था समाप्त कर उनके खाते में कलैण्डर वर्ष के केवल अंत में ही 15 दिन की प्रविष्टि की जाती है। उसके पूर्ण सेवा काल में संचित अवकाश अवधि 300 दिन से अधिक नहीं होती है। (नि.92 ख)

इन कर्मचारियों को यदि ग्रीष्मावकाश/शीतकालीन अवकाश में रोका जाता है तो इन्हें 3:1 के अनुपात में अवकाश देय होगा। ग्रीष्मावकाश की कुल अवधि का (45 दिन) 15 दिन का अवकाश देय होगा। उसी अनुपात में रोके गए दिनों का लेकिन कुल संचित अवकाश अवधि 300 दिनों से अधिक नहीं होगी। ये अवकाश कम करने पर राज्यादेशानुसार उतने दिनों का अवकाश देय होगा। 3 दिन के एवज में 1 दिन का देय होगा। इन कर्मचारियों को जहाँ वर्ष में 15 दिन का अवकाश देय होता है वहीं 1¼ दिन का उपार्जित अवकाश प्रतिमाह अर्जित होता है। (नि. 92(क))

(द) दीवानी न्यायालय के कर्मी– दीवानी कार्यालय के अधिकारियों को एक कलैण्डर वर्ष में 12 दिन का उपार्जित अवकाश देय होगा। जिसका प्रत्येक कलैण्डर की एक जनवरी व एक जुलाई को 6–6 दिन का अवकाश दर्ज होगा तथा स्टाफ के सदस्यों को प्रत्येक के खाते में प्रतिमाह 1 दिन के हिसाब से अवकाश देय होगा। यह गणना प्रत्येक छःमाही में नियुक्ति पर, सेवानिवृत्ति, पद त्याग पर लागू होगी। यदि अधिकारी किसी छमाही में असाधारण अवकाश लेता है तो प्रत्येक 5–10 असाधारण अवकाश पर 1 उपार्जित अवकाश कम दिया जावेगा। जो उस छःमाही में छः से अधिक नहीं होगी। यदि कर्मचारियों को उसके पूर्ण विश्राम काल में उसके उपभोग करने से रोका जाता है तो उसकी एवज में उसे 18 दिन का अवकाश देय होगा। लेकिन कुल संचय अवधि 300 दिनों से अधिक नहीं होगी। जहाँ तक विश्राम काल का अन्य अवकाशों के साथ निरंतरता में उपभोग का प्रश्न है दोनों की अवधि नियम 91 में एक कलैण्डर वर्ष में स्वीकृत योग्य उपार्जित अवकाश से अधिक नहीं होनी चाहिए। (नियम 92, घ)

उपभोग व नकद भुगतान–उक्त सभी कर्मचारी नियमों के अनुसार देय अवकाश का समय–समय पर उपभोग कर सकते है। नि. 59 के अनुसार एक कर्मचारी को सामान्य रूप से 120 दिन का उपार्जित अवकाश स्वीकृति किया जा सकता है लेकिन विशेष परिस्थितियों में 300 दिन का भी। कर्मचारी लगातार में 5 वर्ष तक अवकाश उपभोग कर सकता है लेकिन उसकी स्वीकृति हेतु सक्षम अधिकारी कम ही दे सकती है।

समर्पित– कर्मचारी अवकाश उपभोग के अतिरिक्त शेष रहे अवकाश में से एक माह का अवकाश समर्पित कर नकद भुगतान प्राप्त कर सकता है। कर्मचारी के सेवानिवृत्त, मृत्यु, त्याग पत्र आदि की स्थिति में उस दिन शेष रहे उपार्जित अवकाश का नियम 97 के अनुसार निम्न सूत्र से भुगतान नकद भी प्राप्त कर सकता हैं यह 300 दिनों से अधिक दिनों का नहीं होगा।

सेवानिवृत्ति के दिन मूल वेतन (चालू वेतन बैण्ड में वेतन+ग्रेड पे) + उस पर देय महंगाई भत्ता × सेवानिवृत्ति के समय अनुपयोगित उपार्जित अवकाश की संख्या जो 300 दिनों से अधिक नहीं होगी

सूत्र = ——— 30

इस राशि के आहरण हेतु बिल बनाया जावेगा जिस पर व्यय मद की शीर्ष–2071 पेंशन तथा सेवानिवृत्ति लाभ 01–सिविल,115–छुट्टी नकदीकरण हित लाभ, लगाई जावेगी।

–जे.नि. सहा.लेखाधिकारी
धोबी धोरा, सूरसागर, बीकानेर
मो. 9214026463

बेटी री किलकारी

बेटी आंगन री होऽऽऽ बेटी आंगन री
करे बेटी या पुकार
माने जीवा रो अधिकार
मैं भी देखूं यो संसार। बेटी आंगन....

आस बेटा री राखे
बेटी कोई नहीं चावे
दुःख में बेटो कन्नी काटे। बेटी आंगन....

बोझ बेटी जाण ठुकरावे
इंगलिश बेटा स्कूल चावे
फिर भी बेटी नाम कमावे। बेटी आंगन....

क्यूं मां कलंक लगासी
जनम बेटी रो मिटासी
बेटा कुंवारा रह जासी। बेटी आंगन....

दो–दो कुल ने बेटी तारण
छोड़ पत्थर दिल मां भगाण
ममता बेटी री नी जागण। बेटी आंगन....

वृद्धाश्रम बेटा निकाले
नहीं बेटा कोई पाले
सेवा बेटी दौड़ी चाले। बेटी आंगन....

भ्रम मोह बेटा छोड़ो
बेटी समाज बंधन तोड़ो
प्यार बेटी नाता जोड़ो। बेटी आंगन....

भ्रूण हत्या पाप भारी
अब तो जागो नर–नारी
बचाओ बेटी री किलकारी। बेटी आंगन....

–सत्य नारायण नागौरी
व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., केसवाड़ा
मो. 9610334431

शाला प्रांगण से

राजकीय विद्यालयों मे प्रवेशोत्सव का द्वितीय चरण 26 जून 2015 से आरंभ हुआ। सभी संस्था प्रधान एवं शिक्षकों ने विद्यालयों को आवंटित लक्ष्यों के अनुरूप नामांकन बढ़ाने का प्रयास किया। लगभग सभी विद्यालयों में नामांकन लक्ष्यों की प्राप्ति हुई। अनेक विद्यालयों मे लक्ष्य से अधिक नामांकन भी हुआ। विभिन्न संस्थाओं में विश्व जनसंख्या दिवस एवं लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जयंती मनाई गई। कुछ विद्यालयों से प्राप्त एवं संकलित सूचनाएं इस प्रकार हैं–

बीकानेर। राजकीय गंगा बाल उच्च प्राथमिक विद्यालय, बीकानेर में प्रवेशोत्सव के द्वितीय चरण में शिक्षकों ने समूह बनाकर आसपास के क्षेत्र में, विद्यालय में प्रवेश लेने से वंचित रह गये, बच्चों के अभिभावकों से संपर्क कर उन्हें शाला में पढ़ाने का आग्रह किया। प्रवेशोत्सव के तहत विभिन्न कक्षाओं में 166 बच्चों ने प्रवेश लिया। नव प्रवेशित बच्चों का अभिनन्दन कर निशुल्क पाठ्यपुस्तकें वितरित की गई। विद्यालय स्टाफ के कुछ सदस्यों ने बच्चों को स्टेशनरी कॉपी, पैन्सिल, पैन रबर आदि वितरित किये।

विद्यालय में दिनांक 23 जुलाई 2015 को तिलक जयंती मनायी गई। कक्षा 8 की छात्राओं ने स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के जीवन के अविस्मरणीय प्रेरक प्रसंगों की जानकारी दी। छात्राओं ने बताया कि मांडले जेल प्रवास के दौरान उन्होने गीता रहस्य नामक ग्रन्थ लिखा। यह ग्रन्थ ज्ञान, कर्म एंव भक्ति का समन्वय है। श्रीमती विद्युत लता शर्मा प्रधानाध्यापिका ने बताया कि तिलक जी ने पराग और केसरी साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन किया। इन पत्रों में उन्होंने सामन्तवादी अत्याचारों के प्रति रोष जताया।

चूरू। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बीरमसर, चूरू में प्रवेशोत्सव के द्वितीय चरण में 70 विद्यार्थियों ने विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश लिया। प्रार्थनासभा में नव प्रवेशित विद्यार्थियों का तिलक लगाकर स्वागत किया एवं निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें वितरित की गईं। इस अवसर पर श्री भागीरथ सिंह महला कार्यवाहक प्रधानाचार्य ने अभिभावकों से गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने का वायदा किया। अभिभावकों को शिक्षा के क्षेत्र में राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं से अवगत करवाया।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जयन्ती दिनांक 23 जुलाई 2015 को प्रार्थना सभा में मनाई गई। विद्यार्थियों ने उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाए। श्री महला ने बताया कि बाल गंगाधर तिलक धर्मपरायण एवं सदाचारी व्यक्ति थे। स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान उन्हें 6 वर्ष का कारावास हुआ। इस अवधि में समय का सदुपयोग करते हुए उन्होंने श्री मद्भागवत गीता पर मराठी भाषा में कर्मयोग शास्त्र लिखा। उन्होंने बताया कि तिलक जी का मानना था कि स्वदेशी के शत्रु और स्वदेश के शत्रु में कोई भेद नहीं है। जो स्वदेशी व्यवहार नहीं करते उनका पूर्ण बहिष्कार कर देना चाहिए। प्रधानाचार्य ने सभी विद्यार्थियों से तिलक जी के जीवन के आदर्शों को अपने जीवन मे आत्मसात करने के लिए उत्साहित किया।

हनुमानगढ़। राजकीय आदर्श बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, गोलूवाली, हनुमानगढ़ में श्रीमती रेनु लमोरिया के मार्गदर्शन में शाला स्टाफ ने टोलिया बनाकर अभिभावकों, गणमान्य व्यक्तियों एवं ग्राम वासियों से सम्पर्क कर प्रवेश योग्य बालक बालिकाओं के शाला में प्रवेश हेतु, आने वाली समस्याओं का पता लगाकर वंचित रहे बच्चों को प्रवेश दिलवाने के लिये घर–घर सम्पर्क कर प्रवेश हेतु प्रेरित किया।

अभिभावकों को बालिका शिक्षा प्रोत्साहन हेतु निःशुल्क साइकल वितरण, ट्रांसपोर्ट वाउचर योजना, गार्गी पुरस्कार एवं विभिन्न प्रकार की छात्रवृतियों के बारे में बताया। शाला स्टाफ एंव छात्राओं ने शिक्षा की अलख जगाने के लिए नारे लगाते हुए प्रभात फेरी भी निकाली। प्रवेशोत्सव के तहत विद्यार्थियों को निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें वितरित की गई। विद्यालय परिसर की साफ सफाई कर पौधारोपण किया गया। संस्था प्रधान ने बैठक आयोजित कर बालसभा, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं सहशैक्षिक गतिविधियों के नियमित आयोजन एवं अध्यापन में पुस्तकालय के अधिकतम उपयोग का निर्णय लिया। विद्यालय ने 10 जुलाई 2015 तक नामांकन लक्ष्य प्राप्त कर लिया।

झालावाड़। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मिश्रोली, झालावाड़ में प्रवेशोत्सव के तहत कैचमेंट एरिया में शाला शिक्षकों ने आंगनबाड़ी केन्द्रों से लक्ष्य समूह के बच्चों एवं प्राथमिक विद्यालयों से कक्षा छः में प्रवेश हेतु बच्चों की सूचियां प्राप्त कर उनके अभिभावकों से सम्पर्क कर विद्यालय में प्रवेश दिलवाने के लिये प्रोत्साहित किया। शैक्षिक सत्र 2015–2016 में विद्यालय में 212 विद्यार्थियों ने विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश लिया। विद्यालय में नामांकन लक्ष्य पूरा हो गया। नव प्रवेशी बालक बालिकाओं का प्रार्थना सभा में अभिनन्दन करते हुए निशुल्क पाठ्य पुस्तकें वितरित की गई। विद्यालय मे साफ सफाई एवं पौधारोपण किया।

विद्यालय में दिनांक 11 जुलाई 2015 को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया गया। शाला के शिक्षकों द्वारा बताया गया कि भारत की जनसंख्या लगभग 1.26 अरब है। भारत में महिला एवं पुरुष का लिंग अनुपात 943:1000 है। कुल जनसंख्या के 50 प्रतिशत व्यक्ति, 25 वर्ष तक की आयु वर्ग के हैं। श्री बालाराम बालोदिया, प्रधानाचार्य ने बताया कि विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई को मनाने के पीछे इसका उद्देश्य लोगों को विश्व की जनसंख्या के प्रति जागरूकता पैदा करना है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की शाषी परिषद् द्वारा सर्व प्रथम 11 जुलाई 1989 को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया गया। इस दिन विश्व की जन संख्या 5 अरब थी।

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, असनावर झालावाड़ में दिनांक 23 जुलाई 2015 को राष्ट्रीय सेवा योजना एवं समाजोपयोगी उत्पादक कार्यों के तहत विद्यालय में साफ सफाई एवं पौधारोपण किया गया। इस अवसर पर सरपंच श्रीमती गुड्डी बाई भी उपस्थित थीं। इस अवसर पर श्रीमती रीता गुप्ता प्रधानाचार्य ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को एक पौधा लगाकर उसकी परवरिश अपने बच्चे के समान करनी चाहिए तभी हरित, प्रदूषण रहित एवं खुशहाल भारत का सपना साकार होगा।

झुन्झुनू। राजकीय उच्च माध्यमिक

विद्यालय, सेफारगुवार झुन्झुनूं में संस्था प्रधान ने बालकों को विद्यालय मे प्रवेश दिलवाने हेतु, निमंत्रण पत्र मुद्रित करवाकर जन संपर्क के दौरान वितरित करते हुए विद्यालय में बच्चों को प्रवेश दिलवाने के लिए अभिभावको को प्रेरित किया। आस-पास के क्षेत्र में प्राथमिक उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 6,8 एवं 10 में प्रवेश योग्य बच्चों की सूची प्राप्त कर उनके अभिभावकों से भी सम्पर्क किया गया। श्री धर्मपाल चौधरी,ब.अ के निर्देशन में प्रवेशोत्सव के दौरान तुलसी, नीम, पीपल आदि के पौधे लगाए गए एवं विद्यालय परिसर की साफ-सफाई व साज-सज्जा की गई। विद्यालय में 149 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। इसके साथ ही विद्यालय का नामांकन लक्ष्य पूर्ण हो गया। विश्व जनसंख्या दिवस, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जंयती का आयोजन किया गया। शैक्षिक सत्र 2014-2015 में कक्षा 12 कला संकाय एवं कक्षा 10 का परीक्षा परिणाम क्रमशः 92 एवं 97 प्रतिशत रहा।

सीकर। राजकीय तांबी उच्च माध्यमिक विद्यालय पलसाना, सीकर में स्वच्छता अभियान के तहत् विद्यार्थियों ने दस समूहों में विद्यालय परिसर एवं आस-पास के सार्वजनिक परिसर की सफाई की। श्री बनवारी लाल कुमावत, प्रधानाचार्य ने भी इस कार्य में सहयोग देते हुए विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर श्री रूपसिंह शेखावत, उप सरपंच ने 21 कचरा पात्र विद्यालय को दिये। उल्लेखनीय है कि इस विद्यालय में विद्यार्थी अपने कक्षा कक्ष एवं परिसर की सफाई स्वयं करते हैं। शैक्षिक सत्र 2014-2015 में कक्षा 12 कला संकाय, विज्ञान संकाय एवं कक्षा 10 का परीक्षा परिणाम क्रमशः 94.44, 91.49 एवं 79.39 प्रतिशत रहा।

टोंक। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नादेड़ा (मुंडिया कला), टोडाराव सिंह, टोंक में दिनांक 15 जुलाई 2015 को विद्यार्थियों ने शिक्षकों के निर्देशन में नीम, शीशम, गुलमोहर, स्टोनिया आदि के 60 पौधे लगाए गये। विद्यालय परिसर के पास का तालाब विलायती बबूलों से अटा था। इसे जे.सी.बी. मशीन से साफ करवाया एवं गड्ढे भरवाकर पौधारोपण करवाया। ग्रामीणों ने भी विद्यार्थियों का सहयोग किया। इस विद्यालय में लगभग दो वर्ष पूर्व पच्चीस पौधे लगाये थे, जो विकसित होकर वृक्ष बन रहे है। पौधारोपण कार्य श्री सतीन्द्र सिंह खंगरोत के निर्देशन में किया गया।

–सुनीता चावला
सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर
मो. 9414426063

सारे ऊँट एक साथ कभी नहीं बैठते

अचय राजस्थान के किसी शहर में रहता था। वह पढ़ा-लिखा था और एक प्राइवेट कम्पनी में अच्छे वेतन पर सुविधाओं के साथ नौकरी करता था, परन्तु वह अपनी जिन्दगी से खुश नहीं था। हर समय वह किसी न किसी समस्या से परेशान रहता था और उसी के बारे में सोचता रहता था।

एक बार अचय के शहर से कुछ दूरी पर एक बाबाजी का काफिला रुका हुआ था। शहर में चारों ओर उन्हीं की चर्चा थी। बहुत से लोग अपनी समस्याएं लेकर उनके पास पहुँचने लगे। अचय को भी इस बारे में पता लगा तो उसने भी बाबाजी के पास जाने का निश्चय किया। छुट्टी के दिन सुबह-सुबह ही अचय उनके पड़ाव पर पहुंच गया। वहां सैकड़ों लोगों की भीड़ जुटी हुई थी। बहुत इंतजार के बाद अचय की बारी आई। वह बोला-"बाबा! मैं अपने जीवन से बहुत दुखी हूँ, कभी ऑफिस की टेन्शन रहती है, तो कभी घर पर अनबन हो जाती है और कभी अपनी सेहत को लेकर परेशान रहता हूं। बाबा! कोई ऐसा उपाय बताइए कि मेरे जीवन से सभी समस्याएं समाप्त हो जाए और मैं चैन से जी सकूं।"

बाबा मुस्कराए और बोले-"पुत्र! आज बहुत देर हो गई है, मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर कल सुबह दूंगा, लेकिन क्या तुम मेरा एक काम करोगे?"

"जरूर करूंगा..." अचय उत्साह के साथ बोला।

"देख बेटा। हमारे काफिले में सौ ऊंट है और इनकी देखभाल करने वाला आज बीमार पड़ गया है। मैं चाहता हूँ कि आज रात तुम इनका ध्यान रखो और जब सौ के सौ ऊंट बैठ जाएं तो तुम भी सो जाना।" ऐसा कहकर बाबा अपने तम्बू में चले गए।

अगली सुबह बाबा अचय से मिले और पूछा, "बेटा! रात को नींद तो अच्छी आई होगी।"

"कहां बाबा! मैं तो एक पल भी नहीं सो पाया। मैंने बहुत कोशिश की, परन्तु मैं सभी ऊंटों को नहीं बैठा पाया। कोई न कोई ऊंट खड़ा हो जाता।" अचय दुखी होते हुए बोला।

"मैं जानता था कि यही होगा। आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि सारे ऊंट एक साथ बैठ जाएं।" बाबा बोले।

बाबा बोले-"बेटा! कल रात तुमने क्या अनुभव किया, यही न कि चाहे कितनी भी कोशिश कर लो सारे ऊँट एक साथ नहीं बैठ सकते। तुम एक को बैठाओगे तो कहीं और कोई दूसरा खड़ा हो जाएगा। इसी तरह तुम एक समस्या का समाधान करोगे तो किसी कारणवश दूसरी खड़ी हो जाएगी। पुत्र! जब तक जीवन है ये समस्याएं तो बनी ही रहती हैं, कभी कम, तो कभी ज्यादा।"

"तो क्या करना चाहिए?" अचय ने जिज्ञासावश पूछा।

"कल क्या हुआ, कई ऊंट रात होते-होते खुद ही बैठ गए, तुमने अपने प्रयास से बैठा दिए, परन्तु बहुत सारे तुम्हारे प्रयासों के बाद भी नहीं बैठे और जब बाद में तुमने देखा तो पाया कि उनमें से कुछ खुद ही बैठ गए। कुछ समझे?

समस्याएं भी ऐसी ही होती हैं। कुछ तो अपने आप ही खत्म हो जाती हैं कुछ को तुम अपने प्रयास से हल कर लेते हो और कुछ तुम्हारे कोशिश करने पर भी हल नहीं होती हैं, ऐसी समस्याओं को समय पर छोड़ दो। उचित समय पर वे खुद ही खत्म हो जाती है और जैसा कि मैंने पहले कहा, जीवन है तो कुछ समस्याएं रहेंगी ही, परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि तुम दिन-रात उन्हीं के बारे में सोचते रहो। ऐसा होता तो ऊंटों की देखभाल करने वाला कभी सो ही नहीं पाता। समस्याओं को एक तरफ रखो और जीवन का आनन्द लो। जब समय आएगा वे अपने आप ही हल हो जाएंगी।" (साभार-संस्कार बिन्दु)

पुस्तक समीक्षा

सुलगते पिण्ड

लेखक : हरीश भादानी प्रकाशक : भारत ग्रन्थ निकेतन, बीकानेर संस्करण : 2011 पृष्ठ संख्या : 112 मूल्य : ₹ 150.00

अपनी चौखट से बोलती कविताएं–
हमको समझौतों पर
जीवन जी लेने का कहने वालो!
सुन लो,
हम अपनी चौखट से बोल रहे हैं। (पृ.71)

जीवन और जगत की बुनियाद पर टिकी अपनी चौखट पर खड़े होकर बेबाकी से अपनी कविता सुनाने वाले जनकवि हरीश भादानी को यह 'सुलगते पिण्ड' काव्य संग्रह समझौताहीन संघर्ष की अगुवाई करते आम इंसान की ऋचाएं है। जिनके कई-कई अर्थ और दृश्य हैं। जहां विचार कला के माध्यम से आम आदमी को एक कुशल एवं कारगर हथियार सौंपता है। मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करता है जिसके लिये लम्बी उम्र लगानी होती है–

जिसको पढ़ने
तुमको अपनी आंख भिगोनी होगी
और समझने लम्बी उम्र लगानी होगी।
(पृष्ठ 71)

कवि-कथाकार श्रीलाल जोशी पुस्तक के मुखबन्ध में लिखते हैं कि कवि हरीश भादानी का विचार-प्रवाह आदि से अंत तक जीवनपर्यन्त साक्षी है, शब्द सृजन यात्रा के पड़ाव दर पड़ाव विस्फोटक क्षण, टीसती रातें, आग्नेय तेवर-। इस कविमन को प्रतीक्षा में जीवन गलना गवारा नहीं, वनिस्पत इसके धैर्य का पर्वत दर्शाना चाहते हैं''

हरीश जी की कविताएं इसीलिये अकेले नहीं बोलती बल्कि एकाकार होने का अर्थ बतलाती है।

अपनी और पराई/सब पीड़ाएं
हमसे एकाकार हो गई। जैसे सागर में
नदियों के चेहरे बताना मुश्किल।
(पृष्ठ 64)

कविता हर युग में मनुष्य के साथ रही। यही मैत्रीभाव उसका जैवी धर्म जिसके बारे में कवि हरीश भादानी कहते हैं– आज की कविता तो नए व्यक्ति और नए व्यक्ति संबंधों की खोज की और निकटतम परिवेश की रागात्मकता के साथ जीने की अनुभूतियों की कविता है। उन प्रतिकूलताओं व्यामोहों जो उसे यथार्थ से दूर ले जाते है, और अपनी अनुकूलताओं को बढ़ने की स्वाभाविक प्रक्रिया से रोकते हैं-के विरुद्ध लड़ना आज की कविता का जैवी-धर्म (अपनी बात सुलगते पिण्ड-पृष्ठ 5) है।

इसी धर्म का निर्वाह करते हुए वे अपने जीवन की चादर को एक कोने से उघाड़ कर पूरी तरह से देख-परख कर कहना चाहते हैं– मैली है तो उतार फेंकेंगे–सुन्दर है तो ओढ़े चले जाएंगे।

एक जो चादर हमें दे दी गई है
मिली एक कोने से
इसकी सीवन उधेड़ें
देखें कि कितने जोड़/कैसे सूत के धागे
कि हमारी नग्नताओं को
सम्पूर्णता के साथ
ढांपती है या नहीं। (पृष्ठ 28)
अगर नहीं ढांपती है तो इसे भी नकार है
आओ, अस्वीकारें, हम उन्हें सम्पूर्णता
के साथ
जीने के लिये तो
सिर्फ धरती ही बहुत है। (पृष्ठ 20)

यह नकार ही सुलगते पिण्ड की पहचान है मर्यादा है।

सुलगते पिण्ड की कविताएं मनुष्य के निरंतरता उसके ऊहापोह और फिर अपने रास्ते चल पड़ने की ऋचाएं हैं जिन्हें जीवनानुभवों से ही समझा जा सकता है। यह किसी एक इकाई नहीं बल्कि समूह चेतना की समिधाएं हैं जो हर आहुति में काम आती है फिर चाहे यज्ञ हो या अनुष्ठान।

हमारे पास क्या नहीं हैं
सपने हैं
धरती-सा कलेजा है
आसमान से कहीं अच्छा मन
और दम खम है
ऊंचाइयों को बौना बनाने का। (पृष्ठ 32)

हरीश भादानी का कवि कभी हारता नहीं। अपने-परायों के घावों से छेदित उनका कवि-मन सभी से गुजारिश करता है– आम आदमी की तरह कि एक बार बस एक बार हमारी तरह जीके तो देख लेते–

खूबसूरत बहानों की
शफीलों के बंदी हमारे दोस्त!
न रहते तुम हमारे गांव
पर एक यह भी जिन्दगी तो देख जाते।
और कुछ नहीं तो–
हमारी भूख की
हमारी प्यास की
जिन्दादिली तो देख जाते।
(पृष्ठ 75-76)

'सुलगते पिण्ड' की कविताएं एक ऐसे आम आदमी की भोगे हुए जीवन की जीवेषणाएं है जो सामंती अवशेषों को ढोते हुए लोकतंत्र की चौखट पर खड़ा है। आज भी जिसके शरीर पर थेगेड़े लगे कपड़े हैं, आज भी वह जाति, धर्म, रूढ़ियों से भयग्रस्त है। उसमें गजब का नकार भाव है, फिर भी वह जीना चाहता है। इस स्वीकार के साथ–

हमारे भ्रूण पर
जहर की झिल्लियां चढ़ी थीं
हम जन्मे
सुलगते पिण्ड जैसे
हम अनागत फसलों के पहलुए
जो खुरदरी कूबड़ ढहाने का
दम-खम लिए पैदा हुए।
लो हमारे छटपटाहट की गवाही
(पृष्ठ 103-104)

संग्रह की हर कविता ऐसी गवाही के साथ जनता की अदालत में हाजिर होती है इस गर्वोक्ति के साथ–

हमारे जन्म से अधिक अच्छा
और क्या घटित होता
इस सदी में (पृष्ठ-108)

हरीश भादानी को गीतकार मानकर पढ़ने वालो से मेरा निवेदन है कि एक यह भी जिन्दगी तो देख लेते जिसके लिए कवि कहता है–

यह अष्टवक्राई हुई सीमा
खुरदरी धरती।

ढलानों, चट्टानों पर बसे ये घर
जिनकी बनावट विश्वकर्मा की
कारीगरी से कम नहीं है।
अभावों के झरोखे इस तरह काटे हुए हैं
कि
हर बदचलन हवा यहां आकर ठहरती।
(पृष्ठ–78)

ऐसी आम आदमी की खुरदरी जिन्दगी का सौंदर्य है। सुलगते पिण्ड की कविताएं जहां जीवन की लय और जीवन–संगीत का सरगम भी। दोनों को साधती ये अग्नि–पथ की श्लाकाएं लोक को सदैव आलोकित करती रहेगी और हर अंधेरे को उघाड़ कर देखने की क्षमता भी प्रदान करेगी। ये कविताएं अंधेरा फैलाने वाली रोशनी की भी पड़ताल ही नहीं करती। उसे चौड़े–चौगान लाकर खड़ा भी करती है। हिन्दी कविता की सशक्त परम्परा की गवाही देती ये कविताएं पाठकों को आकर्षित ही नहीं अनुप्रेरित भी करती हैं। इस कवि और कविताओं को क्रांतिकारी सलाम।

–सरल विशारद

हमालों की बाड़ी, लक्ष्मीनाथ मंदिर घाटी, बीकानेर
मो. 9461872526

काळजयी

लेखक : कैलास दांन लाळस **प्रकाशक :** महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, जोधपुर **संस्करण :** 2014 **पृष्ठ संख्या :** 232 **मूल्य :** ₹350.00

राजस्थानी की गद्य–गरिमा की चावी ठावी पुस्तक काळजयी है। पुस्तक का लेखक कैलाश दान लाळस राजस्थानी भाषा के सर्वश्रेष्ठ शब्दकोशकार पद्मश्री सीताराम लाळस के सुपुत्र हैं। पुस्तक की विषय सामग्री में उनकी तकनीकी डिग्री का अनुभव साफ झलकता है। जलते दीप, माणक, जागती जोत, के अनवरत लेखक के रूप में पहचान आप बना चुके है। उससे भी ज्यादा आकाशवाणी जोधपुर में फीचर, नाटक, गीत, गीति नाटिका, वार्ता तथा धारावाहिक नाटक के प्रसारण से आप चर्चित हो चुके हैं। दुबली पतली काया के धनी ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी बाहर से नहीं लगते। परन्तु श्री लाळस धुन के धनी है। मास्टर साहब के शब्दकोश निर्माण यात्रा आपकी पाठशाला के रूप में काम आई। कैलाश जी की यह पुस्तक पूर्व प्रकाशित पुस्तकों में सर्वश्रेष्ठ है।

इस पुस्तक में बहुआयामी चिन्तन है। पुस्तक का श्रीगणेश राजस्थान में निरन्तर पड़ रहे अकाल की अनुगूंज से किया। 'पग पूगाल, धड़ कोटड़ै, माथौ बाड़मेर..... ठावौ जैसलमेर' की कहावत को सांगोपांग ढंग से चित्रित किया है। अकाल के समय न केवल राजा महाराजा अपितु दानदाता भी प्रजा की पीड़ से द्रवित होकर अपने कोठार खोल देते थे। अेक दानदाता नाथा जी की दान की कथा जगजाहिर है:–

'जात जात जनमतो नाथौ।
तौ क्यूं मुलक मांळवे जातो'

'नारी री समाज में ठावी ठौड़' में नारी की दशा और दिशा का विशद वर्णन है। पितृसत्तात्मक और मातृसत्तात्मक परिवार का गुण दोष तथा विशेषता दर्शाती है। जनकवि रेंवतदान जी की समाजसेवी जीवनी बहुत कम देखने को मिलती है। पुस्तक से मालूम पड़ता है कि इंकलाब की आंधी कविता तक ही नहीं ठेठ घर तक पहुंच चुकी थी। हरीश भादानी और विजयदान देथा, ओंकार पारीक की तरह केवल काव्य–सृजन और वकालत ही भरण पोषण की साधन बनी। गौरव ग्रंथ 'वीर सतसई', 'आजादी री अलख', 'हीरां तोली म्हारी बोली', और कोश निर्माण की आंखों देखी यात्रा पुस्तक को काळजयी बनाती है। राजस्थानी संस्कृति से लबोलब यह निबन्ध संग्रह योग्य है। विज्ञान की शब्दावली और नये खोज की निबन्धों में पुट, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाती हैं।

'काळजयी' पुस्तक में राजस्थानी भाषा के सामर्थ्य की विशेष मठोठ, विविध विषयों पर वैचारिक मौलिकता विशेष अनूठा संगम है। समाज, राजनीति, साहित्य, अध्यात्म और विज्ञान जैसे विषयों को विशेष अंदाज से उठाया गया है।

संस्कृति का गूढ़ार्थ, बापू का चिन्तन, भाषा की आंचलिक महक, आजादी के अभिप्राय, साम्प्रदायिक सौहार्द्र, तकनीकी व आर्थिक क्षेत्रों का विलक्षण वर्णन, मनमोहक प्रतिमा लगती है। श्री लाळस ने किसानों को महिमा का वर्णन एक दोहे में इस प्रकार किया है:–

जय कनफटा जोगड़ा, खाकी परघन खावणा।
मारवाड़ मांय क्रोड़, मिनख, करसा एक कमावणा।।

इस प्रकार इस पुस्तक के कुल 232 पृष्ठ हैं। महाराज मानसिंह पुस्तक प्रकाश योजना की यह महत्वपूर्ण कड़ी है। श्री लाळस ने यह पुस्तक अपने पूर्वज महाकवि नवल जी लाळस को समर्पित की है। राजस्थानी के नये लेखकों में श्री कैलाशदान लाळस का स्थान उल्लेखनीय है। हालांकि व्यंग्यकार के रूप में आपकी लेखनी ने ज्यादा काम किया है। परन्तु इस पुस्तक ने पत्रकारिता और निबन्ध विधा को शृंगारित करने का सफल जतन किया है। पुस्तक में राजनीति की नकटाई और धर्म के नाम पर हो रहे ढकोसलों की पोल खोल दी है।

इस महत्वपूर्ण पुस्तक प्रकाशन बाबत लेखक ने घणा घणा रंग। लख लख बधाई।

आस्था री मन्दाकिनी

मूल लेखक : नथमल केड़िया **अनुवाद :** डॉ. गजादान चारण **प्रकाशक :** राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास, सादुलगंज, बीकानेर **संस्करण :** 2015 **पृष्ठ संख्या :** 96 **मूल्य :** ₹100.00

यह पुस्तक श्री नथमल केड़िया का हिन्दी निबन्ध संग्रह है। इन निबंधों के पढ़ने से केड़िया जी की अध्ययनशीलता और बहुश्रुतता का ज्ञान हो जाता है। देशाटन और लोकजीवन का गहराई से अध्ययन एवं अनुभव का समावेश होने के कारण पुस्तक कालजयी बन गई है। इस प्रकार के अनुभवी व ज्ञानी पुरुष की पुस्तक का भावानुवाद डॉ. गजादान चारण ने किया। निबंध संग्रह में कुल 11 निबंध है। सब निबंधों का विषय मोटा मोटी भारतीय समाज के उदात्त सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं का चुड़ाव है। वर्तमान समय में आस्था की मंदाकिनी जैसे दुर्गम पहाड़, प्रतिकूल मौसम, और अब रेत मार्गों के बीच अब स्थित है वैसे ही यह आस्था

बहुत दूर और दुर्गम है।

पुस्तक में 'मराल रो मारग', 'सत्यवती' और 'सियावर रामचद्रं' शीर्षक वाले निबन्ध महाभारत और रामायण की यात्रा करते हुए एक महती जीवनमूल्यों को उकेरती है। 'म्हांरी चांदगवरजा' और 'मोहनजोदड़ो री गांठ' निबंधों में भारतीय समाज में हजारों सालों से चली आ रही स्वस्थ परम्पराओं का बहुगुण है। जिसकी अमृत धाराओं से यह समाज सचो साच है। पुस्तक में दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी के बीच प्रेम और विश्वास की एक रस भरी गाथा है।

सच पूछा जाय तो भारतीय दाम्पत्य जीवन तो द्वैत से अद्वैत की ओर साधना है। डा. चारण हिन्दी और राजस्थानी का अधिकारी विद्वान है। भारत के चूने गौरव को उजागर करने वाले एक पाठक के पारखी है। डॉ. चारण हमारे पुराने साहित्यिक विज्ञासु है। लोक जीवन और लोकभाषा तक के पारखी हैं। 'जलम दिन री जोत' पर कृष्ण जन्माष्टमी का महत्व लिखते हुए लेखक कहता है कि "जद तांई इण देस में लोग इण तांई जलम मनावता रहसी, तो कोई आपणो की कोनी बिगाड़ सके। साचाणी अखूट है आपणी संस्कृति"। वैसे ही 'अजो सांग', 'जै केदारनाथ', 'कास किसन की कोट'।

इस प्रकार 'आस्था री मंदाकिनी' पुस्तक अपने घरों में संजोकर रखने लायक विरासत है। भावी पीढ़ी को संस्कारवान बनाने में सहायक है। हमारे तीर्थ, तालाब और मंदिर आस्था के केन्द्र

है। हरेक केन्द्र का अद्भुत इतिहास है। वो अतीत ही आश्चर्य और श्रद्धा प्रकट करता है। डॉ. चारण के गीतों में व्याप्त शब्दावली और मुहावरों का सुन्दर प्रयोग है। भाषा सरल और भावमय है। मन-मस्तिष्क को हल्का कर देती है। राजस्थानी साहित्य अनुवाद की अच्छी मिसाल है। जनहित प्रन्यास ऐसी पुस्तक प्रकाशन करके हमारी संस्कृति को बढ़ाने का काम कर रहे हैं।

—पृथ्वी राज रत्नू

इन्द्रा कॉलोनी, एफसीआई गोदाम रोड, बीकानेर
मो. 9414969280

रूबाइयात-ए-सूफी

सम्पादक : काजी अनीसुद्दीन सिद्दीकी एवं पीर अब्दुर्रआब चिश्ती अब्बासी प्रकाशक : सूफीया मिशन गुलशन-ए-चिश्त, जोधपुर संस्करण : 2015 पृष्ठ संख्या : 80

रूबाइयात-ए-सूफी फारसी की रूबाइयात हैं जिन में इल्मे तसव्वुफ (आध्यात्मिक ज्ञान) का समावेश किया गया है। किताब में शामिल रूबाइयातें फारसी मशहूर सूफी सन्त सूफी हमीदुद्दीन नागोरी की है जो बारहवीं शताब्दी के महान सूफी थे। आप गरीब नवाज ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी के प्रिय शिष्य थे। इन सूफी संतों ने धार्मिक सौहार्द्र को कायम रखते हुए आध्यात्मिक ज्ञान दिया, सबको मानवता का पैगाम दिया। रूबाइयात-ए-सूफी इस की बेहतरीन मिसाल है। किताब में प्रत्येक पृष्ठ पर सर्वप्रथम फारसी में एक रूबाई है जिसे देवनागरी में भी लिखा गया है। इस तरह 32 रूबाइयात हैं जिन का अनुवाद पहले उर्दू में, फिर हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, राजस्थानी,गुजराती और पंजाबी में भी किया गया है।

यह रूबाइयात, एकेश्वरवाद, तल्लीनता, तपस्या, पुण्य व सौभाग्य अध्यात्म, विश्वास, प्रेम, सन्तोष, अभ्यास, ईश्वर से मिलन का शौक और सेवाभाव का जज्बा पैदा करती हैं। ये रूबाइयां सार्थक सोच और सीधे रास्ते पर चलने की हिदायत करती है। आत्मा की शुद्धता, ईश्वर की तलाश, सृष्टि की रचना, जीवन मृत्यु, स्वर्ग और नरक, ईश्वर भक्ति और सर्वधर्म समभाव का पैगाम देती है।

धन्यवाद के पात्र हैं वह अनुवादक जो अपनी-अपनी भाषा एवं धर्म के सच्चे सेवक हैं। उनमें हजरत पीर मोहम्मद अब्बूब तारिक चिश्ती (उर्दू), पीर अब्दुल रुआब चिश्ती (हिन्दी), काजी अनी सुद्दीन सिद्दीकी (देवनागरी), शीन मीम हनीफ (अंग्रेजी), डॉ. शम्भूदयाल पाण्डेय (संस्कृत), प्रोफेसर जहूर खाँ महर (राजस्थानी), सन्त श्री पूज्य अजीतराम बापू गादीपति गेबीनाथ आश्रम हाथी जण अहमदाबाद (गुजराती), डॉ. कमल प्रीत कौर सहायक प्रोफेसर पंजाब (पंजाबी) शामिल हैं।

किताब बहुत पवित्र और सुन्दर है। चार कलर में उत्कृष्ट कागज पर छापी गई है। किताब के कवर पेज पर एक तरफ सूफी हमीदुद्दीन नागोरी की दरगाह का बुलन्द दरवाजा आंखों को भाता है। प्रथम कवर पेज पर भक्ति का प्रतीक झूमते हाथ और परिन्दों की भक्तिमय उड़ान, दुआ मांगते हुए हाथ और सब से ऊपर ईश्वरीय शक्ति का प्रतीक अल्लाह का वुजूद मानव जाति को प्रेम और शान्ति का पैगाम देता है।

किताब की धार्मिक सौहार्द्र की एक विशेषता यह भी है कि इसमें महान सूफी सन्तों और साहित्यकारों के संदेश और पेशलफ्ज शामिल हैं, उनमें गरीब नवाज अजमेरी दरगाह के सज्जादा नशीन दीवान सैय्यद जेनुल आबेदीन, अली खान, पीर सूफी अब्दुल बाकी (नागोर) सन्त हरिराम शास्त्री राम स्नेही (बड़ा रामद्वारा) जोधपुर, डॉ. सुखदेव सिंह (प्रोफेसर) पंजाबी विभाग यूनिवर्सिटी, सन्त श्री अजीत राम बापू, आचार्य श्री विनय सागर, पीर मोहम्मद नजमुल हसन, काजी सैय्यद वाहिद अली, सूफी शाह अब्दुस्सलीम 'नाज', इकबाल अली, मो. शाहिद, गुलाब हुसैन और डॉ. अजीलुल्लाह शीरानी काबिले जिक्र है। सूफी साहब की एक रुबाई का हिन्दी अनुवाद बतौर-ए-नमूना दिया जा रहा है।

रुबाई फारसी का हिन्दी अनुवाद-

'ऐ मनुष्य तू पहले ईश्वर के गुण प्राप्त कर तत्पश्चात कुछ कह, फिर जब ऐसा करेगा तो इस के बाद ईश्वरीय रास्ता ढूंढ। इस समय (इस अवसर पर) अपने हृदय को छल,कपट, ईर्ष्या से दूर कर ले और आत्मा को पवित्र

ईश्वरीय जल के साथ धो डाल।

सूफी सन्त हमीदुद्दीन नागोरी की यह रुबाइयां बड़ी सार्थक और कोमी यक जहती की प्रतीक हैं।

–डॉ. अजीजुल्लाह शेरानी,
फरहत मंजिल, दीवान जी के कुएं के पास, टोंक

च्यानण पख

लेखक : मदन गोपाल लढ़ा प्रकाशक : कलासन प्रकाशन, बीकानेर संस्करण : 2014 पृष्ठ संख्या : 80 मूल्य : ₹ 60.00

कहानी की असली ताकत उसकी पठनीयता है। अगर राजस्थानी कहानी में इस पठनीयता का आस्वादन करना हो तो मदन गोपाल लढ़ा का सद्य प्रकाशित कहानी संग्रह 'च्यानण पख' अच्छा विकल्प हो सकता है। इस संग्रह में करीब डेढ़ दर्जन कहानियां हैं, जो शिल्प और वर्ण्य विषय की बहुरंगता लिए हुए भी कथा रस में समभाव है।

संग्रह की कहानी 'आरती प्रियदर्शिनी री गली' में तो मंटो की याद दिला देती है। पूरी कहानी में कौतुहल बना रहता है। आगे क्या होगा? इसी तरह की करुण कथा कहानी 'उदासी रो कोई रंग कोनी हुवै' व 'दोलड़ी चूण' में वर्णित है। 'उदासी रो कोई रंग कोनी हुवै' में करुण रस शुरू से लेकर आखिरी तक सावित है। कहानी पठन के दौरान पाठक इस कदर द्रवित हो जाता है कि वह आस-पास की दुनिया से जुदा केवल कथानायिका 'इमरती' के दर्द में डूब जाता है। कहानी में 'धरती का भरोसा तोड़ने' की अद्भुत व्यंजना है। लेखक अपनी पत्नी भूमि का भरोसा तोड़ने के कारण दर-दर भटक रहा है और वहीं इमरती मरुभूमि छोड़कर मुंबई की चकाचौंध भरी स्वच्छिल जिंदगी की चाह में भटक रही है। 'दोलड़ी चूण' पति-पत्नी के झगड़े के बीच झूल रहे बच्चे की दुर्दशा का अंकन करती है। कहानी कई ब्यौरों को दर्ज करती हुई आगे बढ़ती है और अंत में पाठक को अन्य कहानियों की तरह संवेदना के समंदर में डुबो देती है।

संग्रह में 'धोळै दिन रो अंधारो, 'टूणो' 'फांस' और 'च्यानण पख' जैसी कहानियां स्त्री नियति को लेकर मुखर है। इन कहानियों की औरतें शोषित-पीड़ित होते हुए भी विरोध करने में मुखर है। 'च्यानण पख' की नायिका मंगेतर की हदबंदियों से पीड़ित सांकेतिक अंधेरे में जीने लगती है, पर आखिर में लम्बी कशमकश के बाद वह इस रिश्ते को तोड़ने का निर्णय लेती है- 'तिथ बदळगी अर च्यानण पख लागग्यो।' इसी तरह 'फांस' घर की किच-किच और शराबखोरी से पति-पत्नी के रिश्ते में आई खटास को व्यंजित करती है। 'टूणो' कहानी लघुकथा सी लगती है, जिसमें पाठक संभाव्य कहानी-समाप्ति का पूर्वानुमान भी लगा लेता है। यह कहानी अंधविश्वास व जादू-टोने की पोल खोलती है, पर स्त्री के पाखण्डी रूप की अतिशयता पाठक को कहीं न कहीं अखरती है। 'धोळै दिन रो अंधारो' की अमनड़ी कई जगह ब्याही गई, पर सुख उसे नसीब नहीं हुआ।

कहानी 'छिब' और 'अेक सपनै री मौत' क्रमशः दलाली और निर्धनता की दास्तां बयां करती है। दलाली का पेशा दूसरों को कैसे तकलीफ देता है? इसका अहसास जमीन दलाल गुलाब जी को तब होता है, जब उसका बेटा मानव अंगों के दलाल के चक्कर में अपनी किडनी गंवा देता है। भंवर एक हॉकर है सालगिरह पर पत्नी को मोबाइल गिफ्ट करने का सपना देखता है पर इसी बीच जुलूस में उसकी रेहड़ी जला दी जाती है और एक मासूम सपने की असमय मौत हो जाती है।

जड़ों से कटने के दर्द की जीवन्त दास्तां है। कहानी-'आफळ'। इस कहानी में महाभारत के संजय का मौलिक मिथकीय प्रयोग है। संजय ने तो घटित को विलेका था, यहां तो कथाकार की संजय दृष्टि अनघटित को भी साफ-साफ देख रही है। यहां एक बूढ़ा अपने बुजुर्गों की विरासत को बेचने की मजबूरी से व्यथित है। अपनी जमीन से बिछुड़ने का यही दर्द 'काठी बांध' में बीरमल को सता रहा है। एक अरसे पहले उसके पैतृक गांव की जमीन सरकार ने 'फायरिंग रेंज' के लिए अवाप्त कर ली थी। जिसकी स्मृति उसे आज भी बैचेन कर देती है। चौबीस साल बाद वह इसी जमीन पर चिर निद्रा में सो जाता है। कहानी का अंत पाठक को रुला देता है। कहानी करुण काव्य के मानिंद भाव-विह्वल कर देती है।

'झांक' मरुधरा का आंचलिक शब्द है, जिसमें उम्मीद की लौ जगी रहने का आशय निहित है। यह झांक सजातीय वधू मिलने की है। बेटे की उम्र अधिक होने पर भी बलराम को सजातीय वधू मिलने की आस है। कहानी जाति बंधन और स्त्री भ्रूण हत्या जन्य भयावह स्थिति की ओर संकेत करती है। पाठक कहानी के परोक्ष में इन दोनों ज्वलंत मुद्दों की पड़ताल कर सकता है।

कहानीकार की कलम परम्परागत मुद्दों के साथ-साथ आधुनिक संदर्भों से भी जीवन्त सरोकार रखती है। वाट्सएप, चैटिंग, ट्विटर, फेसबुक आदि कैसे व्यक्ति को झूठा, निकम्मा, अकेला और बेवफा बना रहे हैं? इसका सुन्दर निरूपण कहानी 'तिरस' में हुआ है।

कहानियां 'कोड' 'खड़को' और 'हेज' बच्चों को केन्द्र में रखकर रची गई है। 'खड़को' में एक गरीब बच्चे की स्वाभाविक प्रक्रिया विद्रोह के रूप में मुखर हुई है। 'हेज' उस अपहृत बच्चे की कहानी है, जिसे अपहृता के घर की बहू उसे वहां से भगाने में मदद करती है। वह बच्चा उस अपहृता का नाम पुलिस को इसलिए नहीं बताता क्योंकि उसने उस महिला से ऐसा वादा कर रखा था। 'कोड' लेखक के घर-गृहस्थी की कहानी है पर वैसे यह आम घर की कहानी है।

बात और कहानी का अंतर शिल्प ही तय करता है। कहानीकार की सफलता इसी में होती है कि वह कथ्य को मुकम्मल शिल्प में ढालकर पाठक को परोस सके। कहना न होगा कि लढ़ा जी इस परोसगारी में पूरी तरह सफल हुए है। इनकी कहानियां कुतूहल और चरमोत्कर्ष पैदा करने में तो कमाल कर देती है। कहानियों का अंत कहीं भी पूर्व नियोजित नहीं लगता। अंत पढ़कर पाठक चौंक उठता है। वह मंत्र मुग्ध हो जाता है और उसे चिंतन की महायात्रा में चलने को मजबूर होना पड़ता है। जहां कहीं ऐसे अंत की गुंजाइश न हो, वहां लेखक शब्दों की कारीगरी से ऐसा शब्दजाल बुनता है कि पाठक उसमें बंधकर रह जाता है। यह खासियत इन कहानियों को शिल्प के लिहाज से विशिष्ट बना देती है। निश्चय ही इस संग्रह को राजस्थानी कहानी के उज्ज्वल पक्ष के रूप में माना जा सकता है।

–डॉ. मूलचन्द बोहरा
रामेश्वम् द्वितीय-ए-34
मुरलीधर व्यास नगर विस्तार, बीकानेर

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

विटामिन-सी कैंसर के इलाज में मददगार

वाशिंगटन– विटामिन सी युक्त खाद्य सामग्री के सेवन से मस्तिष्क में होने वाले कैंसर के टयूमर को न सिर्फ बढ़ने से रोका जा सकता है, बल्कि जड़ से खत्म भी किया जा सकता है। ओटागो यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों के नेतृत्व में शोध के मुताबिक विटामिन-सी का अधिक मात्रा में सेवन करने से कैंसर के मरीजों में रेडियेशन थेरेपी करना आसान हो जाता है। प्रमुख शोधकर्ता डॉक्टर पेट्रीज हर्सट ने बताया कि मस्तिष्क के कैंसर से जूझ रहे मरीजों में रेडियोथेरेपी करना बहुत मुश्किल होता है,क्योंकि इसके टयूमर थेरेपी के प्रति जल्द क्रिया नहीं करते हैं।

अगर रोजाना के आहार में विटामिन-सी शामिल किया जाए तो ब्रेन कैंसर के टयूमर कमजोर हो जाते हैं और इन्हें आसानी से मिटाया जा सकता है। हालांकि हर्सट ने कहा कि अभी इस दिशा में और ज्यादा शोध करने के बाद ही कोई ठोस परिणाम दे पाना मुमकिन होगा। शोध 'फ्री रेडिकल बायोलॉजी एंड मेडिसीन' के ताजा अंक में प्रकाशित किया गया है।

चोट लगी है तो क्यों न मीठा हो जाए

लंदन– मीठा खाने से मोटापा बढ़ सकता है। लेकिन चोट लगी हो या हाथ-पैर पर छाले पड़ गए हों तो इसके इस्तेमाल में देरी नहीं करनी चाहिए। वॉलवर हैंप्टन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने अपने हालिया अध्ययन में दावा किया है कि जख्म पर शक्कर छिड़कना एंटीबायोटिक व अन्य दवाओं के सेवन से कहीं ज्यादा कारगर साबित हो सकता है।

खासतौर पर बेड सोर, पैर के छाले और सर्जरी के जख्म पर। उन्होंने बताया कि शक्कर जख्म में भरे पानी को सोखती है। इससे घाव जल्दी ठीक हो पाता है। प्रमुख शोधकर्ता मॉसेज मुरांडु के मुताबिक जिन लोगों पर एंटीबायोटिक असर नहीं करती, उनके लिए शक्कर का इस्तेमाल खासा फायदेमंद है। बशर्ते व्यक्ति डायबिटीज से पीड़ित न हो।

हकीकत बनेगी उड़ने वाली 'बाइक'!

हंगरी– सरकार की एक शोध एजेंसी ने उड़ने वाली बाइक 'फ्लाइक' का पहला प्रोटोटाइप विकसित किया है। इस प्रोटोटाइप में छह 'रोटर' लगे हैं। इनकी बदौलत बाइक 30 सेकेंड तक हवा में उड़ती है। इस गैर लाभकारी शोध संस्थान की टीम और बेहतर प्रोटोटाइप को विकसित करने में जुट गई है। उम्मीद यह व्यक्त की जा रही है कि बेहतर प्रोटोटाइप का वाणिज्यिक उपयोग हो सकेगा। कार्यक्रम 'स्टॉर वॉर' में उड़ने वाली बाइक्स दिखाई गई थी। लेकिन हंगरी सरकार समर्थित गैरलाभकारी शोध संस्थान ने उड़ने वाली बाइक्स की तरफ कदम बढ़ाया है। इसमें कंप्यूटर से संचालित छह 'रोटर' लगे हैं। यह रोटर बेहतरीन तालमेल कर 'फ्लाइक' को हवा में उठाते हैं। इसकी बदौलत यह 30 सेकेंड तक हवा में उड़ जाती है।

कपड़े भी होंगे टच स्क्रीन!

वाशिंगटन– गूगल कंपनी एक ऐसे स्मार्ट फैब्रिक का विकास कर रही है जिससे बनने वाले कपड़े टचस्क्रीन की तरह काम करेंगे। गूगल के एडवांस्ड टेक्नोलॉजी एंड प्रोजेक्टस (एटीएपी) प्रयोगशाला के 'प्रोजेक्ट जैकार्ड' के तहत जिन सूतों का विकास किया जा रहा है, वह टच सेंसेटिव और मजबूत दोनों होंगे। ताकि उनसे कोई भी कपड़ा बनाया जा सके। टच सेंसेटिव सूतों में पतले, मिश्र धातुओं को कपास या रेशम के मानक सूतों के साथ मिलाया जाएगा। गूगल ने परियोजना की वेबसाइट पर बताया 'सुचालक सूत, टच और जेस्चर सेंसेटिव क्षेत्रों को कपड़े के निश्चित जगहों पर बुना जा सकता है। गूगल ने कहा 'जैकार्ड फैशन उद्योग के लिए खाली कैनवास की तरह है। डिजाइनर इसका इस्तेमाल किसी दूसरे फैब्रिक की तरह कर सकते हैं।'

शरीर में जरूरत के हिसाब से दवा पहुँचाएगी 'पनडुब्बी'

लंदन– वैज्ञानिकों ने अति सूक्ष्म पनडुब्बी बनाई है जो शरीर के किसी भी अंदरूनी हिस्सों में दवा पहुँचाने में सक्षम है। यानी दवा ठीक उस जगह पर पहुँचाई जा सकेगी, जहाँ उसकी जरूरत होगी।

जर्मनी के मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट फॉर इंटेलीजेंट सिस्टम, स्टर्टगार्ट यूनिवर्सिटी व इजराइल के द टेक्नी ऑन इंस्टीट्यूट ने यह अध्ययन किया हैं। शोधकर्ता डॉ. गेविन के मुताबिक नैनो तकनीक के तहत ऐसे उपकरणों का निर्माण अलग-अलग कामों के लिए किया जाता है।

इसमें दवा से लेकर कोशिका तक रेडिएशन पहुँचाने का लक्ष्य शामिल है। इस तकनीक से जानलेवा बीमारियों का उपचार आसान होगा। पनडुब्बी आंखों की रेटीना के पिछले हिस्से तक भी दवा पहुँचा सकेगी।

बेहोशी के लिए नहीं होगी इंजेक्शन की जरूरत

नई दिल्ली– इलाज से पहले मरीजों को बेहोश करने के लिए अब इंजेक्शन की जरूरत नहीं होगी। इसके लिए अब एक नई तकनीक पर सफल प्रयोग किया गया है, जिसमें मरीजों को बिना इंजेक्शन के बेहोश किया जा सकता है। चंडीगढ़ पीजीआई व सरगंगाराम अस्पताल सहित देश के चार प्रमुख सरकारी मेडिकल कॉलेज में तकनीक पर सफल परीक्षण किया जा चुका है। बेहोशी के लिए सीएलएडीएस तकनीक पर शोध के लिए सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा फंडिंग की गई। सरगंगाराम अस्पताल की एनिस्थिसिया विभाग की डॉ. जयाश्री सूद ने बताया कि सीएलएडीएस (क्लोज्ड लूप एनिस्थिसिया डिलवरी सिस्टम) में मरीज को बेहोश करने के लिए खून में रक्त का प्रवाह करने वाली छोटी धमनियों पर दबाव बनाया जाता है, यह विधि कंप्यूटर पर आधारित है, जिसमें माइक्रो प्रोसेसर तकनीक के जरिए इस बात पर नजर रखी जाती है कि मरीज को कितनी मात्रा में दवा देनी है। लोकल एनिस्थिसिया में भी इसका कारगर असर देखा गया, जबकि मरीज को केवल सर्जरी करने वाले हिस्से को ही सुन्न करना होता है। परीक्षण के दौरान दिल और मस्तिष्क की सर्जरी कराने वाले 242 मरीजों को दो श्रेणी में विभाजित किया गया। सात केन्द्र पर किए गए शोध में परीक्षण में देखा गया कि जिन मरीजो को सीएलएडीएस के जरिए बेहोश किया गया, उन्हें दवा की अपेक्षाकृत कम डोज दी गई।

झुंझुनूं

रा.उ.मा.वि, बनगोठड़ी में श्री उम्मेद सिंह पूनियाँ द्वारा 7 लाख रुपये की लागत से प्रधानाचार्य कार्यालय 16×22 एवं मंत्रालयिक कर्मचारी कक्ष 17×22 (दो कमरे मय शौचालय का निर्माण करवाया गया।) **रा.उ.मा.वि. देवरोड़** को श्री उम्मेद सिंह कुल्हार से एक वाटर कूलर लागत-35,000 रुपये, श्रीमती मोहनी देवी कुल्हार से एक पानी फिल्टर मशीन लागत-35,000 रुपये, श्री कुलदीप कुल्हरी (सरपंच देवरोड़) द्वारा दो अलमारी व 100 किलो मिठाई लागत-24,000 रुपये, श्री रामावतार कुल्हरी से 10 कुर्सियां प्लास्टिक लागत-6,000 रुपये, श्री राजेन्द्र सिंह (से.नि.अ.) से एक अलमारी लागत-6,000 रुपये, श्री मोहन लाल जांगिड़ से दो सैट मेज स्टूल लागत-2,200 रुपये, **श्री भा.म. स्वामी रा.उ.मा.वि. ढ़िगाल** को श्री प्रभुदयाल शर्मा द्वारा एक प्रिंटर, एक इन्वटर बैटरी, एक कम्प्यूटर सेट लागत- 65,000 रुपये, स्व.श्री बीरबल राम पुत्रों द्वारा 6 सिलिंग फैन व चार ट्यूब लाइट लागत-11,000 रुपये, श्री किशनाराम बिभू से एक ऑफिस टेबल लागत- 15,000 रुपये, **रा.मा.वि.ढाकामण्डी** को श्री हरि सिंह ढाका (शा.शि.) से 20 छात्र-छात्राओं को स्वेटर वितरित किए। लागत 4,500 रुपये, श्री मार्गेराम राधेश्याम गुप्ता से एक बैटरी व एक इन्वर्टर लागत-13,000 रुपये।

बाराँ

रा.उ.मा.वि, कुंजेड़ को श्री अफसर अली द्वारा 1,05000 रुपये की लागत से विद्यालय प्रांगण में सीमेन्ट की टाइल्स लगवाई, श्री राजेन्द्र प्रसाद यादव से एक वाटर कूलर लागत-24,500 रुपये। **रा.उ.मा.वि. सीसवाली** को सत्र 2012-13 एवं 2013-14 के 12वीं के छात्र-छात्राओं द्वारा वाटर शेड निर्माण हेतु सामग्री एवं मजदूरी-10,100 रुपये, SBBJ सीसवाली (बाराँ) द्वारा एक्वागार्ड भेंट लागत 9,990 रुपये, शिक्षा सहकारी सामान-696 कोटा से वाटर कूलर (Voltas) 40 ली. क्षमता लागत 29,790 रुपये, श्री केदार लाल मीणा (प्र.अ.) से 5 छात्रों के स्कूल ड्रेस हेतु कपड़ा लागत- 1,000 रुपये, श्री रामशंकर वैष्णव से 2 ट्री गार्ड लागत 12,000 रुपये, श्री ओम प्रकाश नागर (पूर्व संरपंच) से एक ट्री गार्ड लागत-600 रुपये।

बाड़मेर

शाह जैसमल भीमराज गोलेच्छा रा.मा.वि, बालोतरा में शाह चम्पालाल गोलेच्छा महादेव द्वारा प्याऊ जीर्णोद्धार व वाटर कूलर मशीन लागत-10,000 रुपये, लायन्स क्लब थार बालोतरा से 50 सैट स्टूल टेबल लागत-50,000 रुपये, श्रीमती गीता देवी पालीवाल से 25 सैट स्टूल टेबल लागत 25,000 रुपये, यूनिव्हर्सल ग्रुप से 25 सैट स्टूल टेबल लागत 25,000 रुपये, श्री गोविन्द सिंह राजपुरोहित से ऑफिस टेबल लागत 11,000 रुपये, सर्व श्री निर्मल दास महाराज, माधु जी माली, किशोर सिंघवी रोहित ग्रुप बालोतरा, पी. राजेश बालोतरा से प्रत्येक से 11 सैट स्टूल-टेबल तथा प्रत्येक की लागत 11,000 रुपये, श्री महेन्द्र कुमार व पंकज कुमार से 4 छत पंखे लागत- 6,000 रुपये, सर्वश्री वासुदेव खत्री, डॉ. एच.आर.आकोदिया, सार्जेन्ट झूमरलाल, किशनलाल खत्री पोकरण, मांगीलाल गहलोत, हमेन्द्र कुमार, घीसूलाल लूकड़, जोगाराम चौधरी, (राजलक्ष्मी स्टील फर्नीचर बालोतरा) प्रत्येक से 5-5 सैट स्टूल-टेबल तथा प्रत्येक की लागत 5,000-5,000 रुपये, शाह चम्पालाल गोलेच्छा महादेव ग्रुप-बालोतरा से 25 सैट स्टूल-टेबल लागत- 25,000 रुपये, रोटरी क्लब बालोतरा से 80 सैट स्टूल टेबल लागत 80,000, सर्व श्री हेमन्त सांखला, वासुदेव सांखला से प्रत्येक से 11-11 सैट स्टूल-टैबल तथा प्रत्येक से 11,000-11,000 रुपये श्री शान्तिलाल बालड़ सेंचुरी टक्सोफिन प्रा.लि. बालोतरा से एक कंप्यूटर सैट लागत-34,450 रुपये, श्री मेहबूब भाई शाह बालोतरा से प्रिन्टर (थ्री इन वन) लागत 25,000 रुपये, श्रीमती सायरी देवी गोयल से दरी पट्टियाँ लागत-5,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि. आसाड़ी तहसील गडरारोड** को श्री हरि सिंह भाटी से निम्न सामान प्राप्त हुए। 1. एम्पलीफायर एक, स्पीकर दो, माइक आहुजा-2, माइक स्टैण्ड एक, मैमोरी कार्ड 2जीबी, उक्त सामग्री लागत 12,000 रुपये प्राप्त हुए।

पाली

रा.उ.मा.वि. खुडाला को श्री हंसमुख द्वारा 38,000 रुपये की लागत से एक वाटर कूलर मय 6 नलों की फिटिंग करवायी गई। श्री हिमांशु व्यास से माँ सरस्वती मन्दिर के पुजारी को 2,000 रुपये प्रति माह व जीव दया में चिड़िया दाना हेतु 1 बोरी अनाज प्राप्त हुआ। **रा.उ.मा.वि., चाड़वास** में श्री जीवराज सिंह राजपुरोहित द्वारा 61,000 रुपये की लागत से माँ सरस्वती का मंदिर का निर्माण करवाया गया। डॉ. जगदीश सिंह राजपुरोहित से टेबल स्टूल बनवाने हेतु 51,000 रुपये प्राप्त हुए। **रा.उ.मा.वि. आनन्दपुर कालू** में श्री बाबूलाल टाक द्वारा 67,000 रुपये की लागत से विज्ञान कक्ष 'जीर्णोद्धार' करवाया गया। श्री भोलाराम भाटी द्वारा बालिका शौचालय का निर्माण करवाया गया। जिसकी लागत-76000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., मांगेसर** को श्री रविन्द्र सिंह भाटी से Eco Sound System, श्री भगवान सिंह चम्पावत (से.नि.अ.) से पेयजल हेतु पानी की टंकी एवं विद्युत मोटर मय फिटिंग, श्री छैल सिंह भाटी से फर्नीचर हेतु 2,100 रुपये, नकद प्राप्त हुए, श्री बख्तावर सिंह द्वारा 21,000 रुपये का पारितोषिक, श्री ओमप्रकाश पंवार से पाँच टेबल प्राप्त, श्री भंवर लाल पालीवाल एवं जीवन सिंह भाटी द्वारा विद्यालय गेट बनवाया गया। **श्री गोविन्द रा.आदर्श.बा.उ.मा.वि. रायपुर मारवाड़** को श्री गिरीश रायपुरिया द्वारा 65 स्वेटर व 25 स्कॉर्फ विद्यालय के छात्र-छात्राओं के लिए लागत- 15,000 रुपये, एक अन्य भामाशाह से 25 स्वेटर प्राप्त हुए। **रा.बा.उ.प्रा.वि. दुजाना** में श्रीमती सुमित्रा देवी पन्नालाल राजावत चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा सम्पूर्ण विद्यालय में रंग रोगन लागत- 1,10,000 रुपये, विद्युत फिटिंग (पुरानी हटा कर) नई लागत-25,000 रुपये, कार्यालय व कमरे की छत मरम्मत लागत- 20,000 रुपये। **रा.मा.वि., चांग** को श्री रमेश मदानी से 50 सेट टेबल एवं स्टूल लागत 50,000 रुपये, श्री दीपसिंह काठात से 11 ट्री गार्ड लागत 6,600 रुपये व 21 स्वेटर लागत 4,100 रु., श्री राजेश बांठिया से 15 स्वेटर लागत 3,100 रु., श्री आशीष गुप्ता से 13 स्वेटर लागत 2,600 रु., श्री नरेन्दव एवं मल्ली सांखला से 11 स्वेटर लागत 2,100 रु., सर्वोदय सेवा संस्थान से 21 स्वेटर लागत 4,500 रु., वी केयर क्लब से 23 स्वेटर लागत 5,100 रु. लायंस क्लब से 21 स्वेटर लागत 4,500 रु., श्री मानसिंह चौहान (संस्था प्रधान) से 11 स्वेटर लागत 2,100 रु.।

हमारे भामाशाह

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग भी इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें।

-वरिष्ठ संपादक

शिविरा पत्रिका (मासिक) : अगस्त, 2015 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : प्रकाश चन्द्र जाटोलिया, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

शिविरा, अगस्त, 2015
चित्र समाचार

अजमेर

भीलवाड़ा

(बाएं) राजकीय सावित्री बा.उ.मा.विद्यालय अजमेर के फर्नीचर वितरण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए माननीय शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी और जिंक लिमिटेड कम्पनी के प्रबंधक के.सी. मीणा। (बाएं) चूरिया मूरिया संस्था द्वारा प्रकाशित जॉब कंक्शन्स निःशुल्क जीव विज्ञान का विमोचन करते माननीय शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. वासुदेव देवनानी। साथ हैं लेखक रमेश अगनानी और संस्था पदाधिकारी।

जयपुर

श्रीगंगानगर

(बाएं) पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान तथा तेजकरण डंडिया–सूरज बाई डंडिया मेमोरियल ट्रस्ट के तत्वावधान में चयनित पाँच शिक्षकों के सम्मान कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक श्री सुरेन्द्र पारीक तथा अध्यक्ष रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर के कुलपति प्रो. विनोद शास्त्री। (बाएं) आदर्श राजकीय उ.मा. विद्यालय, हिन्दुमलकोट, श्रीगंगानगर में विद्यार्थी एवं शिक्षक प्रवेशोत्सव रैली आयोजित करते हुए।

बीकानेर

बीकानेर

(बाएं) राजकीय मडुड़ माध्यमिक विद्यालय, गंगाशहर (बीकानेर) में विद्यार्थियों को निःशुल्क स्टेशनरी एवं पाठ्य सामग्री का वितरण किया गया। इस अवसर पर उपस्थित संस्था प्रधान राजेश जोशी एवं शिक्षकगण। (बाएं) राजकीय बा.उ.मा. विद्यालय, बेलीवाड़ा, बीकानेर में प्रवेशोत्सव में नव प्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए संस्था प्रधान शमा विलियम्स के साथ शाला परिवार एवं अतिथिगण।

डाक पंजीयन संख्या Jaipur city/408/2014-16 द्विमासिक पत्रिका (मासिक) • अगस्त, 2015 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अगस्त, 2015 पृष्ठ 68 • प्रेषण : हर माह की 6, 6 तारीख

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

गड़सीसर तालाब, जैसलमेर

14वीं सदी में महारावल गड़सी द्वारा निर्मित गड़सीसर तालाब जल संरक्षण व जल भंडारण का अद्वितीय नमूना है। रानी विमला दे के सुझाव पर निर्मित इस तालाब के मध्य बनी छतरियां तैरती प्रतीत होती हैं। इन छतरियों में निर्मित मूर्तियां सजीव प्रस्तर कला का जीवन्त उदाहरण है। घाट तथा जलाशय के समीप बने विभिन्न मंदिर आस्था के केन्द्र हैं। गड़सीसर घाट के आस-पास बनी बगीचियों में विप्र समाज की होली की गोठों पर महोत्सव का माहौल यहां देखने को मिलता है। मणगौर, तीज, मक महोत्सव जैसे सांस्कृतिक आयोजनों व गोठ-घूघरी का प्रसिद्ध स्थल है। गड़सीसर के आस-पास बने शिवालय व माता हिंगलाज का मन्दिर जन आस्था का केन्द्र है। जैसलमेर के अतीत से लेकर वर्तमान तक की यात्रा में गड़सीसर तालाब का महत्वपूर्ण योगदान है। राजसर्तकी टीलों द्वारा बनाया गया गड़सीसर का प्रवेश द्वार तत्कालीन शिल्प कला का बेजोड़ नमूना है जिसे टीलों की पोल के नाम से जाना जाता है।

संकलन : विजय कुमार बलाणी, ग.अ.,जिले कस्बा, कुण्ड पाड़ा, जैसलमेर-345001 मो. 9414391096